लोक शिक्षण संचालनालय, म.प्र. भोपाल
द्वारा वर्ष 2023 के लिए जारी प्रश्न बैंक

GPH®

प्रश्न बैंक

(रेमेडियल माड्यूल के प्रश्न-उत्तर सहित)

उत्तर सहित

अर्थशास्त्र

कक्षा 12

असली प्रश्न बैंक की पहचान

नई ब्लू प्रिंट सहित
सबसे कम मूल्य

कव्हर एवं प्रत्येक पृष्ठ पर GPH देखकर ही खरीदें।

GUPTA PUBLISHING HOUSE, INDORE (M.P.)

पाठ्यक्रम में से हटाई गई विषयवस्तु : अर्थशास्त्र (कला एवं वाणिज्य)-12वीं

क्र.	पुस्तक/विषय वस्तु का नाम	अध्याय	कम किये गये अध्याय/विषयवस्तु का नाम
01	व्यष्टि अर्थशास्त्र एक परिचय (क्रमांक-1)	अध्याय - 06 प्रतियोगिता रहित बाजार	सम्पूर्ण इकाई

भाग-1 : व्यष्टि अर्थशास्त्र एक परिचय

इकाई-1 व्यष्टि अर्थशास्त्र, एक परिचय सामान्य अर्थ व्यवस्था

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प का चयन कीजिए-

1. **सूक्ष्म अर्थशास्त्र का अर्थ है-**
   (a) विशिष्ट आर्थिक इकाइयों का अध्ययन
   (b) सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का अध्ययन
   (c) कुल राष्ट्रीय का अध्ययनत
   (d) इनमें से कोई नहीं
2. **उस केन्द्रीय समस्या की पहचान कीजिए जो उत्पादित की जाने वाली वस्तुओं की मात्रा से संबंधित है-**
   (a) क्या उत्पादन किया जाए ?
   (b) कैसे उत्पादन किया जाए ?
   (c) किसके लिए उत्पादन किया जाए ?
   (d) इनमें से कोई नहीं
3. **समष्टि अर्थशास्त्र का संबंध है-**
   (a) व्यक्तिगत मात्राओं से
   (b) व्यक्तिगत उत्पादन से
   (c) सामूहिक मात्राओं से
   (d) उपर्युक्त सभी से
4. **निम्न में से किस अर्थव्यवस्था में सामाजिक हित एवं कल्याण को महत्व दिया जाता है-**
   (a) पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में
   (b) समाजवादी अर्थव्यवस्था में
   (c) मिश्रित अर्थव्यवस्था में
   (d) अविकसित अर्थव्यवस्था में
5. **प्रो. सेम्युलसन ने निम्न में से किस समस्या को अर्थव्यवस्था की बुनियादी समस्या माना है-**
   (a) किन वस्तुओं का कितनी मात्रा में उत्पादन किया जाना चाहिए।
   (b) वस्तुओं का उत्पादन किस प्रकार किया जाए ?
   (c) वस्तुओं का उत्पादन किनके लिए किया जाए ?
   (d) उपर्युक्त सभी
6. **अर्थव्यवस्था में .... क्षेत्र होते हैं-**
   (a) दो (b) तीन
   (c) चार (d) इनमें से कोई नहीं
7. **निम्न में से कौन-सा अर्थशास्त्र का विभाग नहीं है-**
   (a) उपभोग (b) विनिमय
   (c) वितरण (d) बजट
8. **सूक्ष्म (व्यष्टि) अर्थशास्त्र अध्ययन करता है-**
   (a) राष्ट्रीय उत्पादन का (b) विशिष्ट फर्मों का
   (c) कीमतों के स्तरों का (d) उपर्युक्त सभी का
9. **व्यष्टि अर्थशास्त्र निम्न में से किस पर ध्यान नहीं देता है-**
   (a) बेरोजगारी की समस्या
   (b) अर्थव्यवस्था में मुद्रा स्फीति
   (c) कुल माँग (d) जूट उद्योग
10. **निम्न में से क्या एक सकारात्मक अर्थशास्त्र का उदाहरण है-**
    (a) कीमत वृद्धि नियंत्रण के लिए भारत द्वारा उठाये गये ककदम
    (b) किसी अर्थव्यवस्था में आय का असामान्य वितरण
    (c) भारत को अतिजनसंख्या वाला देश नहीं होना चाहिए
    (d) आय के असमान वितरण में कमी
11. **"अर्थशास्त्र जीवन के साधारण व्यवसाय में मानव जाति का अध्ययन है" यह परिभषा किनके द्वारा दी गई है-**
    (a) एड्म स्मिथ (b) रॉविन्स
    (c) मार्शल (d) पीगू
12. **सर्वप्रथम "सूक्ष्म" शब्द का प्रयोग किसने किया ?**
    (a) मार्शल (b) बोल्डिंग
    (c) कीन्स (d) रेगनर फ्रिश
13. **व्यष्टि अर्थशास्त्र का दोष है-**
    (a) सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का ज्ञान नहीं
    (b) समूह पर लागू नहीं
    (c) अवास्तविक मान्यताएँ (d) उपर्युक्त सभी
14. **निम्नलिखित में से कौन-सी आर्थिक क्रिया नहीं है ?**
    (a) शिक्षक द्वारा अध्यापन

(b) चिकित्सक द्वारा मरीज की चिकित्सा
(c) कालाबाजारी (d) कृषक द्वारा कृषि कार्य

15. अर्थशास्त्र की प्रकृति है ?
(a) विज्ञान (b) कला
(c) विज्ञान एवं कला दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

16. जब कोई व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिए वस्तुएँ खरीदता है, तो वह कहलाता है-
(a) उपभोक्ता (b) उत्पादक
(c) सेवाधारी (d) सेवा प्रदाता

उत्तर- (1) (a) (2) (a) (3) (c) (4) (b) (5) (d) (6) (b) (7) (d) (8) (b) (9) (d) (10) (d) (11) (c) (12) (d) (13) (d) (14) (c) (15) (c) (16) (a).

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. व्यष्टि अर्थशास्त्र से क्या आशय है ?

उत्तर- व्यष्टि अर्थशास्त्र से आशय- व्यष्टि अर्थशास्त्र से आशय उस अर्थशास्त्र से है जिसमें वैयक्तिक इकाइयों का अध्ययन किया जाता है। जैसे- व्यक्ति, परिवार, फर्म, उद्योग आदि का अध्ययन किया जाता है।

हैण्डरसन तथा क्वाण्ट के अनुसार- "व्यष्टि अर्थशास्त्र में व्यक्तियों एवं व्यक्तियों के सुपरिभाषित समूहों की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।

प्रश्न 2. व्यष्टि अर्थशास्त्र का मुख्य यंत्र कीमत यंत्र है। समझाइए।

उत्तर- व्यष्टि अर्थशास्त्र की एक महत्वपूर्ण मान्यता है कि इसके अंतर्गत पूर्ण रोजगार की स्थिति को मान लिया जाता है। उस मान्यता के होने पर प्रमुख समस्या साधनों के बंटवारे की होती है, क्योंति साधनों का बंटवारा कीमतों के आधार पर ही किया जाता है। इसलिए कीमत सिद्धांत का विश्लेषण व्यष्टि अर्थशास्त्र का मुख्य विषय बन जाता है। इसी कारण व्यष्टि अर्थशास्त्र का मुख्य यंत्र कीमत यंत्र बन जाता है।

प्रश्न 3. अर्थव्यवस्था से क्या आशय है ?

उत्तर- अर्थव्यवस्था का आशय- अर्थव्यवस्था वह प्रणाली है जिसके अन्तर्गत आर्थिक क्रियाओं का संचालन होता है। अर्थव्यवस्था एक ऐसी प्रणाली है जिसमें मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए साधनों के सही शोषण एवं व्यवहार की व्यवस्था करता है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि आर्थिक प्रणाली समाज की आर्थिक क्रियाओं के संगठन को बताती है और इसके अन्तर्गत धन का उपयोग, उत्पादन, वितरण तथा विनिमय करने की रीतियों का अध्ययन किया जाता है। प्रत्येक अर्थव्यवस्था, चाहे वह साम्यवादी शासन की व्यवस्था हो, उसका मुख्य उद्देश्य राष्ट्र के सीमित साधनों से अधिकाधिक उत्पादन प्राप्त करना है।

प्रश्न 4. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था से क्या आशय है ?

उत्तर- पूँजीवादी अर्थ व्यवस्था से आशय- पूँजीवादी अर्थव्यवस्था वह अर्थव्यवस्था है जिसमें उत्पादन के साधनों (आर्थिक क्रियाओं) पर निजी स्वामित्व होता है एवं सरकारी हस्तक्षेप बिल्कुल नहीं होता है।

प्रश्न 5. अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्या से क्या आशय है ?

उत्तर- अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएँ है- प्रत्येक अर्थव्यवस्था में संसाधन की दुर्लभता एवं उनके वैकल्पिक प्रयोगों के कारण चुनाव की बुनियादी समस्या का सामना करना पड़ता है जिन्हें अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएँ कहा जाता है। ये समस्याएँ निम्न हैं-
(1) क्या व कितना उत्पादन किया जाए ?
(2) कैसे उत्पादन किया जाए ?
(3) किसके लिए उत्पादन किया जाए ?

प्रश्न 6. समाजवादी अर्थव्यवस्था से क्या आशय है ?

उत्तर- समाजवादी अर्थव्यवस्था से आशय- समाजवादी अर्थव्यवस्था वह अर्थव्यवस्था है जिसमें उत्पादन के साधनों (आर्थिक क्रियाओं) पर राज्य का स्वामित्व होता है तथा समाज के आर्थिक कल्याण में सरकार मुख्य भूमिका निभाती है।

प्रश्न 7. 'उत्पादन संभावना वक्र' क्या है?

उत्तर- प्रो. सेम्युलसन के अनुसार " एक उत्पादन संभावना रेखा चुनावों की सूची को बताती है।" अर्थशास्त्री केन्द्रीय समस्याओं के विश्लेषण के लिए प्राय इस प्रकार के रेखाचित्र का प्रयोग करते है, जो समय विशेष पर अर्थव्यवस्था की 'उत्पादन संभावना' को प्रदर्शित करता है।

प्रश्न 8. उत्पादन संभावना वक्र के दाईं ओर खिसकने से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- उत्पादन संभावना वक्र के दाईं ओर खिसकने से अभिप्राय यह है कि या तो उत्पादन की तकनीक में सुधार हुआ है या संसाधनों की मात्रा में वृद्धि हुई है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. समाजवादी अर्थव्यवस्था की विशेषताएं लिखिए।

उत्तर- समाजवादी अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण विशेषताएं निम्नलिखित हैं-

1. साधनों पर सामूहिक स्वामित्व- इस अर्थव्यवस्था में उत्पादन के भौतिक साधन अर्थात् भूमि, वन, कारखाने, पूँजी, खानों आदि पर समाज या सरकार का स्वामित्व व नियंत्रण होता है, इसके परिणामस्वरूप लाभ का उद्देश्य या निजी हित के लिए आर्थिक गतिविधियों का संचालन नहीं होता है।

2. उपभोक्ता चयन का अंत– इस अर्थव्यवस्था में वस्तुओं में उपयोग हेतु उपभोक्ता के चयन की प्रभुसत्ता उन्हीं वस्तुओं तक रहती है, जिन्हें सरकार के निर्देशानुसार उत्पादित किया गया है। सरकार द्वारा निर्धारित मात्रा में ही उपभोक्ता द्वारा उपभोग किया जाता है।

3. केन्द्रीय नियोजन अथवा आर्थिक नियोजन– समाजवादी अर्थव्यवस्था में सामाजिक आर्थिक लक्ष्यों में निर्धारण व प्राप्ति हेतु एक केन्द्रीय सत्ता होती है। महत्त्वपूर्ण आर्थिक निर्णय जैसे क्या उत्पादन करना है ? उत्पादन कैसे करना है, आदि निर्णय केन्द्रीय सत्ता द्वारा ही किये जाते हैं।

4. सामाजिक लाभ के उद्देश्य– समाजवादी अर्थव्यवस्था में केन्द्रीय सत्ता द्वारा सभी प्रकार के आर्थिक निर्णय अधिकतम सामाजिक व सामूहिक लाभ के उद्देश्य को ध्यान में रखकर ही लिया जाते हैं न कि किसी निजी लाभ के उद्देश्य के लिए।

5. आर्थिक समानता – समाजवादी अर्थव्यवस्था समान कार्य के लिए समान मजदूरी के सिद्धान्त पर कार्य करती है। अतः इस आर्थिक प्रणाली में वर्ग संघर्ष की स्थिति समाप्त हो जाती है, साथ ही निजी पूँजी स्थापित करने हेतु अवसरों की कमी के कारण आय की असमानता भी कम हो जाती है।

प्रश्न 2. व्यष्टि अर्थशास्त्र की सीमाएँ लिखिए।

उत्तर– व्यष्टि अर्थशास्त्र की सीमाएँ निम्न हैं–

1. सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था पर ध्यान न देना – व्यष्टि अर्थशास्त्र से हमें सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के संचालन का सही ज्ञान नहीं हो पाता है, क्योंकि यह सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के कुछ छोटे भागों के संचालन व संगठन पर ध्यान देता है।

2. सही निष्कर्ष नहीं निकलना– व्यष्टि अर्थशास्त्र के कई निष्कर्ष सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण से उचित नहीं होते हैं। जैसे– बचत करना व्यक्तिगत दृष्टिकोण से सही है, लेकिन यदि सभी व्यक्ति बचत करने लगेंगे तो यह सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के लिए ठीक नहीं होगा।

3. अवास्तविक मान्यताएँ– व्यष्टि अर्थशास्त्र कई प्रकार की अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित है। जैसे– पूर्ण रोजगार की मान्यता, पूर्ण प्रतियोगिता की मान्यता आदि।

4. सभी समस्याओं का हल नहीं– सूक्ष्म अर्थशास्त्र से राजस्व देश की मौद्रिक नीति आदि समस्याओं का हल नहीं निकाला जा सकता है।

5. पूर्ण रोजगार की दशा में लागू– यह दृष्टिकोण पूर्ण रोजगार की दशा में लागू होता है, क्योंकि अपूर्ण रोजगार की दशा में व्यक्तिगत इकाई का अध्ययन करना सम्भव नहीं होता है।

प्रश्न 3. केन्द्रीकृत योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था एवं बाजार अर्थव्यवस्था में अन्तर लिखिए।

उत्तर– केन्द्रीकृत योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था एवं बाजार अर्थव्यवस्था में अन्तर निम्न है–

क्र.	बाजार अर्थव्यवस्था	केन्द्रीयकृत योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था
(1)	इस अर्थव्यवस्था में माँग और पूर्ति की शक्तियों की स्वतंत्र अन्तक्रिया का पूर्ण वर्चस्व होता है।	केन्द्रीकृत योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था इस अर्थव्यवस्था में माँग और पूर्ति की शक्तियों की स्वतंत्र अन्तक्रिया का अभाव होता है।
(2)	इसमें उत्पादन कारकों पर निजी स्वामित्व होता है।	इसमें उत्पादन कारकों पर सरकारी स्वामित्व होता है।
(3)	इसमें उत्पादन लाभ के उद्देश्य से किया जाता है।	इसमें उत्पादन समाज कल्याण के उद्देश्य से किया जाता है।
(4)	इसमें सरकार उत्पादकों और परिवारों के निर्णय में कोई हस्तक्षेप नहीं करती।	इसमें सरकार उत्पादकों और परिवारों के निर्णय में हस्तक्षेप करती है।
(5)	इसमें उपभोक्ता का प्रभुत्व होता है।	इसमें उपभोक्ता की प्रभुत्व बाधित होती है।
(6)	अधिकारों के कारण पूँजी के संचय की अनुमति दी गई है।	यहाँ पूँजी के संचय की अनुमति नहीं दी गई है।

प्रश्न 4. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की कोई तीन विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर– पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की विशेषता इस प्रकार है–

1. निजी सम्पत्ति– उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व होता है। हर व्यक्ति को निजी सम्पत्ति रखने का अधिकार होता है।

2. आर्थिक स्वतंत्रता– आर्थिक फैसलों में स्वतंत्रता होती है। व्यक्ति अपनी क्षमता अनुसार अपना व्यवसाय अथवा उद्योग करने के लिए स्वतंत्र रहता है।

3. मुक्त बाजार– अर्थव्यवस्था पूरी तरह से बाजार प्रणाली पर निर्भर रहती है। बाजार में माँग और आपूर्ति के अनुसार उत्पादन के दाम तय होते हैं। किसी भी प्रकार का सरकारी हस्तक्षेप नहीं होता।

4. व्यक्तिगत लाभ– पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में व्यक्तिगत लाभ व्यापार के केन्द्र में होता है।

5. व्यापारिक प्रतिस्पर्द्धा को बढ़ावा– पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में व्यापार और उद्यम की स्वतंत्रता होती है।

स्वतंत्र अर्थव्यवस्था होने के कारण व्यापारिक गतिविधियाँ बढ़ जाती है। लाभ कमाने के उद्देश्य से नए उद्योग स्थापित होते हैं। फलस्वरूप व्यापारिक प्रतिस्पर्द्धा को बढ़ावा मिलता है। बाजार में ग्राहकों को अधिक विकल्प मिलते हैं और पदार्थों की गुणवत्ता में भी सुधार आता है।

6. नवीनीकरण को प्रोत्साहन– पूँजीवाद बाजार नवीनीकरण को प्रोत्साहित करता है। अधिक लाभ कमाने के लिए व्यापारी नयी तकनीक की तरफ रूख करते हैं। नयी तकनीक के चलते एक तरफ उत्पादों की गुणवत्ता निखरती है वहीं ग्राहकों को नयी सुविधाएँ भी उपलब्ध होती है।

प्रश्न 5. मिश्रित अर्थव्यवस्था की तीन प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर– मिश्रित अर्थव्यवस्था की तीन विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र का पाया जाना– मिश्रित अर्थव्यवस्था में निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र पाए जाते हैं दोनों क्षेत्रों में उत्पादन बढ़ाकर विकास में योगदान दिया जाता है।

2. आर्थिक नियोजन– मिश्रित अर्थव्यवस्था में आर्थिक समस्याओं के समाधान एवं विकास के लिए आर्थिक नियोजन को अपनाया जाता है।

3. आर्थिक स्वतंत्रता– मिश्रित अर्थव्यवस्था में आर्थिक स्वतंत्रता पायी जाती है, परन्तु यह पूँजीवाद की तुलना में कम होती है. व्यक्ति अपना व्यवसाय चुनने के लिए स्वतंत्र होता है।

प्रश्न 6. आर्थिक समस्या उत्पादन होने के कोई तीन कारण लिखिए।

उत्तर– आर्थिक समस्या उत्पन्न होने के प्रमुख कारण निम्न हैं–

1. असीमित आवश्यकताएँ– मनुष्य की आवश्यकताएँ अनन्त और असीमित होती है। एक आवश्यकता के पूर्ण हो जाने पर नयी आवश्यकताएँ उत्पन्न होती रहती हैं। अतः अनुष्य की सभी आवश्यकताओं को सन्तुष्ट नहीं किया जा सकता है।

2. आवश्यकताओं की तीव्रता में अन्तर– आवश्यकताएँ तीव्रता की दृष्टि से भी भिन्न होती है अर्थात् प्रत्येक मनुष्य के लिए कुछ आवश्यकताएँ अधिक महत्वपूर्ण हैं और कुछ के लिए कम। अतः महत्व के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति अपनी विभिन्न आवश्यकताओं की अलग-अलग प्राथमिकता के क्रम में रख सकता है।

3. सीमित या दुर्लभ साधन– साधनों की सीमितता अथवा दुर्लभता से अभिप्राय है कि इनकी माँग इनकी पूर्ति से अधिक होती है।

प्रश्न 7. उत्पादन संभावना वक्र की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर– उत्पादन संभावना सीमा की विशेषताएँ– उत्पादन संभावना वक्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(1) उत्पादन संभावना वक्र बायें से दायें नीचे की ओर गिरता हुआ होता है।

(2) उत्पादन संभावना वक्र मूल-बिन्दु के प्रति नतोदर होता है।

(3) जब कोई अर्थव्यवस्था अपने साधनों का पूर्ण उपयोग नहीं कर पाती है अथवा उनका उपयोग अधिकतम कुशलता के साथ नहीं कर पाती है तो ऐसी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं का वास्तविक उत्पादन संभावना वक्र अन्दर के किसी भी बिन्दु पर प्राप्त किया जा सकता है।

(4) यदि अर्थव्यवस्था अपनी उत्पादन क्षमता में वृद्धि करने में सफल हो जाती है तो ऐसी स्थिति में उत्पादन संभावना वक्र दायीं ओर से ऊपर की ओर उठ जाएगा।

प्रश्न 8. उत्पादन संभावना वक्र की मान्यताएँ बताइए।

उत्तर– उत्पादन संभावना वक्र की मान्यताएँ निम्न प्रकार हैं–

(1) इसमें यह भी मान लिया जाता है कि 'उत्पादन की तकनीकी स्थिति' दी हुई है अर्थात् उसमें कोई परिवर्तन नहीं है।

(2) इसमें यह मान लिया जाता है कि अर्थव्यवस्था के सभी साधनों का पूर्ण प्रयोग हो रहा है अर्थात् अर्थव्यवस्था पूर्ण रोजगार की स्थिति में है।

(3) इसमें यह भी मान लिया जाता है कि अर्थव्यवस्था में उत्पत्ति के साधनों की मात्रा स्थिर है, किन्तु सीमित मात्रा में उनके प्रयोगों को दूसरे प्रयोग में हस्तान्तरित किया जा सकता है।

(4) उत्पादन संभावना वक्र एक निश्चित अवधारणा है, जो एक निश्चित समय एवं स्थिति में लागू होती है। यदि अर्थव्यवस्था के किसी भी कारक में कोई परिवर्तन होता है तो उत्पादन संभावना वक्र में भी उसी के अनुरूप परिवर्तन हो जाएगा।

अतः उत्पादन संभावना वक्र एक अत्यन्त महत्वपूर्ण 'आर्थिक विश्लेषण यन्त्र' है। यह एक अर्थव्यवस्था को केन्द्रीय समस्याओं तथा अर्थशास्त्र के अनेक आधारभूत विचारों को स्पष्ट करने में सहायक है।

प्रश्न 9. एक अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएँ क्या है ?

उत्तर– अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याओं की विवेचना निम्न हैं–

वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन, विनिमय तथा उपभोग जीवन की आधारभूत आर्थिक गतिविधियों के अंतर्गत आते हैं। प्रत्येक समाज को इन आधारभूत आर्थिक क्रियाकलापों के दौरान संसाधनों की कमी का सामना करना पड़ता है तथा संसाधनों की यह कमी की चयन की समस्या को जन्म देती है। अर्थव्यवस्था में इन दुर्लभ संसाधनों के उपयोग के लिए प्रतिस्पर्धी विकल्प होते हैं, अर्थव्यवस्था की समस्याएँ प्रायः संक्षेप में इस प्रकार होती है–

1. किन वस्तुओं का उत्पादन किया जाए– प्रत्येक समाज को निर्णय करना पड़ता है कि प्रत्येक संभावित वस्तुओं तथा सेवाओं में से किन–किन वस्तुओं और सेवाओं का वह कितना उत्पादन करेगा। अधिक खाद्य पदार्थों, वस्तुओं या आवासों का निर्माण किया जाए अथवा विलासिता की वस्तुओं का अधिक उत्पादन किया जाए ? कृषि जनित वस्तुओं का अधिक उत्पादन किया जाए या औद्योगिक उत्पादों तथा सेवाओं का ? शिक्षा तथा स्वास्थ्य पर अधिक संसाधनों का उपयोग किया जाए अथवा सैन्य सेवाओं के गठन पर ? बुनियादी शिक्षा को बढ़ाने पर अधिक खर्च किया जाए या उच्च शिक्षा पर ? उपयोग की वस्तुएँ अधिक मात्रा में उत्पादित की जाय या निवेशपरक वस्तुएँ (मशीन) आदि जिससे भविष्य में उत्पादन तथा उपभोग में वृद्धि होगी ? इस प्रकार की वस्तुएँ कैसे उत्पादित की जाती है ?

2. इन वस्तुओं का उत्पादन कैसे करते हैं– प्रत्येक समाज को निर्णय करना पड़ता है कि विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं से उत्पादन करते समय किन–किन वस्तुओं या सेवाओं में किन–किन संसाधन की कितनी मात्रा का उपयोग किया जाए। अधिक श्रम का उपयोग किया जाए अथवा मशीनों का ? प्रत्येक वस्तु के उत्पादन के लिए उपलब्ध तकनीकों में से किस तकनीक को अपनाया जाए।

3. इन वस्तुओं का उत्पादन किसके लिए किया जाए– अर्थव्यवस्था में उत्पादित वस्तुओं की कितनी मात्रा किसे प्राप्त होगी ? अर्तव्यवस्था के उत्पाद को व्यक्ति विशेष के बीच किस प्रकार विभाजित किाय जाना चाहिए ? किसको अधिक मात्रा प्राप्त होगी तथा किसको कम ? यह सुनिश्चित किया जाए अथवा नहीं कि अर्थव्यवस्था की सभी व्यक्तियों को उपभोग की न्यूनतम मात्रा उपलब्ध हो ? क्या प्रारम्भिक शिक्षा तथा बुनियादी स्वास्थ्य सेवा जैसी सेवाएँ अर्थव्यवस्था के सभी व्यक्तियों को निःशुल्क उपलब्ध करायी जाएँ ?

अतः प्रत्येक अर्थव्यवस्था को इस समस्या का सामना करना पड़ता है कि विभिन्न संभावित वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन के लिए दुर्लभ संसाधनों का विनिधान कैसे किया जाए और उन व्यक्तियों के बीच, जो अर्थव्यवस्था के अंग है उत्पादित वस्तुओं तथा सेवाओं का वितरण किस प्रकार किया जाए। सीमित संसाधनों के विनिधान तथा अंतिम वस्तुओं तथा सेवाओं का वितरण ही किसी भी अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएँ हैं।

प्रश्न 10. व्यष्टि अर्थशास्त्र तथा समष्टि अर्थशास्त्र में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- व्यष्टि तथा समष्टि अर्थशास्त्र में अन्तर निम्न प्रकार है-

क्र.	अन्तर का आधार	व्यष्टि अर्थशास्त्र	समष्टि अर्थशास्त्र
1.	प्रतिनिधि सिद्धान्त	यह सीमान्त विश्लेषण या मूल्य सिद्धान्त का प्रतिनिधित्व करता है।	यह आय व रोजगार सिद्धान्त का प्रतिनिधित्व करता है।
2.	व्याख्या	यह वैयक्तिक इकाइयों में उच्चा-वचन की व्याख्या करता है।	यह सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में उच्चावचन की व्याख्या करता है।
3.	महत्व	इसका महत्व वैयक्तिक समस्याओं के समाधान व नीति निर्धारण तक सीमित है। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नीति निर्धारण में इसका महत्व नहीं है।	यह राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नीति-निर्धारण में महत्व रखता है।
4.	आशय	अर्थशास्त्र की वह शाखा है जो वैयक्तिक चरों का अध्ययन करती है। उदा. व्यक्तिगत माँग पूर्ति, कीमत आदि।	अर्थशास्त्र की वह शाखा है जो समग्र चरों का अध्ययन करती है जैसे- समग्र माँग, समग्र पूर्ति, सामान्य मूल्य स्तर, राष्ट्रीय आय इत्यादि।
5.	अध्ययन का विषय	इसमें हम वैयक्तिक इकाइयों (एक व्यक्ति, एक परिवार, एक धर्म, एक उद्योग) का अध्ययन करते हैं।	इसमें हम समूह या समग्र का अध्ययन सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का अध्ययन करते हैं।
6.	उपयोगिता	यह वैयक्तिक उपभोक्ता, वैयक्तिक फर्म, वैयक्तिक उद्योग आदि को अनुकूलतम स्थिति प्राप्त कराने में सहायक होता है।	यह सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था को अनुकूलतम स्थिति प्राप्त कराने में सहायक होता है।

प्रश्न 11. अर्थव्यवस्था की उत्पादन संभावनाओं से आपका क्या अभिप्राय है?

उत्तर– अर्थशास्त्री केन्द्रीय समस्याओं के विश्लेषण के लिए प्रायः इस प्रकार के रखाचित्र का प्रयोग करते हैं, जो समय विशेष पर अर्थव्यवस्था की 'उत्पादन सभावना' को प्रदर्शित करता है। दूसरे शब्दों में, किसी एक वस्तु का उत्पादन बढ़ाने के लिए दूसरी वस्तु का उत्पादन कम करना पड़ात है, क्योंकि उत्पादन के साधन सीमित होते हैं। इस स्थिति का परिणाम यह होता है कि वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन के संबंध में अनेक वैकल्पिक संभावनाएँ उत्पन्न हो जाती हैं। उत्पादन के इन विकल्पों को ही 'उत्पादन संभावना वक्र' कहा जाता है। उत्पादन संभावना वक्र

आर्थिक विश्लेषण का एक महत्वपूर्ण यंत्र होता है। आर्थिक समस्या को उत्पादन संभावना वक्र द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।

परिभाषा– यदि किसी समय विशेष में साधनों की मात्रा स्थिर है और उनका पूर्ण उपयोग हो रहा है तथा अर्थव्यवस्था में केवल दो वस्तुओं X तथा Y का उत्पादन हो रहा है तो वस्तु X की अधिक मात्रा के उत्पादन का अर्थ है- वस्तु Y के उत्पादन साधनों को हटाना और Y की कम मात्रा का उत्पादन करना। इसी प्रकार Y की अधिक मात्रा के उत्पादन का अर्थ है-X वस्तु की कम मात्रा का उत्पादन। उत्पादन की विभिन्न सम्भावनाओं में से समाज को किसी एक संयोग का चुनाव करना होगा। **प्रो. सेम्युलसन** के अनुसार, ''एक उत्पादन संभावना रेखा चुनावों की सूची को बताती है।''

रेखाचित्र द्वारा स्पष्टीकरण– यदि हम मानलें कि किसी राष्ट्र में उत्पादन के उपलब्ध साधनों द्वारा दो ही वस्तुएँ उत्पादित की जा सकती है और ये वस्तुएँ हैं पूँजीगत व उपभोग वस्तुएँ। रेखाचित्र में उपभोग की वस्तु को X- अक्ष पर, पूँजीगत वस्तु को Y- अक्ष पर प्रदर्शित किया गया है। यदि यह राष्ट्र किसी वर्ष में अपने उत्पादन के समस्त साधनों का उपयोग उपभोग वस्तु का उत्पादन करने के लिए करे और उत्पादन कुशल विधि से किया जाए तो कुल उत्पादन OP_1 होगा। इसी प्रकार उत्पादन के सभी साधनों के प्रयोग करने पर पूँजीगत वस्तुओं का कुल उत्पादन OP_2 होगा। अर्थव्यवस्था के लिए अपने कुछ साधनों का प्रयोग उपभोग वस्तु के उत्पादन के लिए और कुछ का पूँजीगत वस्तु के उत्पादन के लिए संभव है, परन्तु उपभोग वस्तु और पूँजीगत वस्तु के उत्पादन के बहुत सारे संयोग हो सकते हैं, जो रेखाचित्र 1.2 में P_1P_2 रेखा द्वारा दर्शाया गया है। वस्तुतः इस रेखा पर प्रत्येक बिन्दु इस राष्ट्र की उस वर्ष में उपभोग और पूँजीगत वस्तु के मिले-जुले उत्पादन की संभावना को प्रदर्शित करता है। इसे ही 'उत्पादन सम्भावना वक्र' कहते हैं।

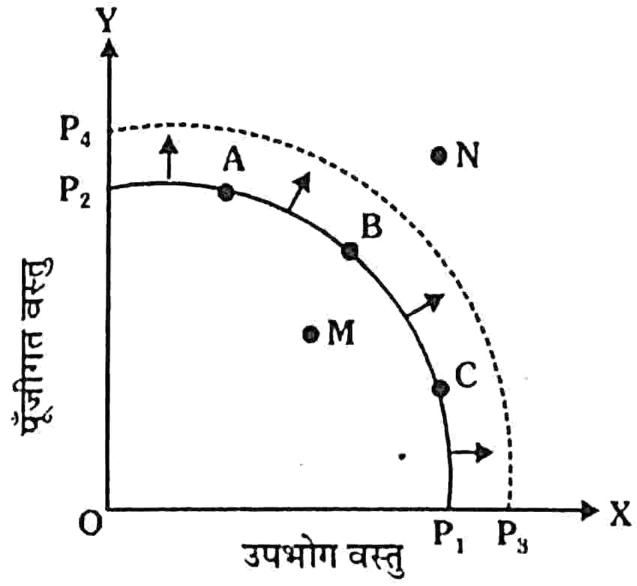

उत्पादन सम्भावना वक्र

प्रश्न 12. सीमान्त उत्पादन सम्भावना क्या है?

उत्तर– प्रत्येक समाज को यह निर्णय लेना होता है कि विभिन्न वस्तुओं तथा सेवाओं के उत्पादन के लिए वह अपने दुर्लभ संसाधनों का विनिधान किस प्रकार करें।

अर्थव्यवस्था के दुर्लभ संसाधनों के विनिधान से विभिन्न वस्तुओं तथा सेवाओं के विशिष्ट संयोग उत्पन्न होते हैं। उपलब्ध संसाधनों की कुल मात्रा के परिप्रेक्ष्य में उन संसाधनों का विभिन्न रूपों में विनिधान संभव है और उससे सभी संभावित वस्तुओं तथा सेवाओं के विभिन्न मिश्रणों को प्राप्त किया जा सकता है।

उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण– यहाँ हम एक ऐसी अर्थव्यवस्था का उदाहरण ले रहे हैं, जो अपने संसाधनों का उपयोग करके वस्तु X या वस्तु Y का उत्पादन कर सकती है। तालिका 1.1 में X तथा Y के उन कुछ संयोग को दर्शाया गया है, जिनका उत्पादन उस अर्थव्यवस्था में संभव है। जब इसके संसाधन पूर्णतया प्रयुक्त किए जाते हैं।

सारणी

संभावनाएँ	X वस्तु	Y वस्तु
A	0	10
B	1	9
C	2	7
D	3	4
E	4	0

सभी संसाधनों का उपयोग X वस्तु के उत्पादन पर किए जाने वाले X वस्तु की अधिकतम संभावित उत्पादित मात्रा 4 इकाइयाँ हैं और यदि सभी संसाधनों का उपयोग Y वस्तु के ही उत्पादन में किया जाए तो Y वस्तु की अधिकतम संभावित उत्पादितम मात्रा 10 इकाइयाँ हो सकती है। अर्थव्यवस्था में X वस्तु की 1 इकाई तथा Y वस्तु की 9 इकाइयाँ या X की दो इकाइयाँ तथा Y की 7 इकाइयाँ या X की 3 इकाइयाँ और Y की 4 इकाइयाँ उत्पादित की जा सकती है। बहुत सी अन्य सम्भावनाएँ भी हो सकती हैं। चित्र 1.3 में अर्थव्यवस्था की उत्पादन संभावनाएँ प्रदर्शित की गई हैं। वक्र पर या उसके नीचे स्थित कोई भी बिन्दु X वस्तु तथा Y वस्तु के उस संयोग को प्रदर्शित करती है, जिकना उत्पादन अर्थव्यवस्था के संसाधनों द्वारा संभव है। यह वक्र Y वस्तु की किसी निश्चित मात्रा के बदले X वस्तु की अधिकतम संभावित उत्पादित मात्रा तथा X वस्तु के बदले Y वस्तु की मात्रा प्रदर्शित करता है। इस वक्र को सीमान्त उत्पादन संभावना कहते हैं। सीमान्त उत्पादन संभावना X वस्तु तथा Y वस्तु के उन संयोगों को प्रदर्शित करती है, जिनका उत्पादन अर्थव्यवस्था के संसाधनों का पूर्ण रूप से उपयोग करने पर किया जाता है।

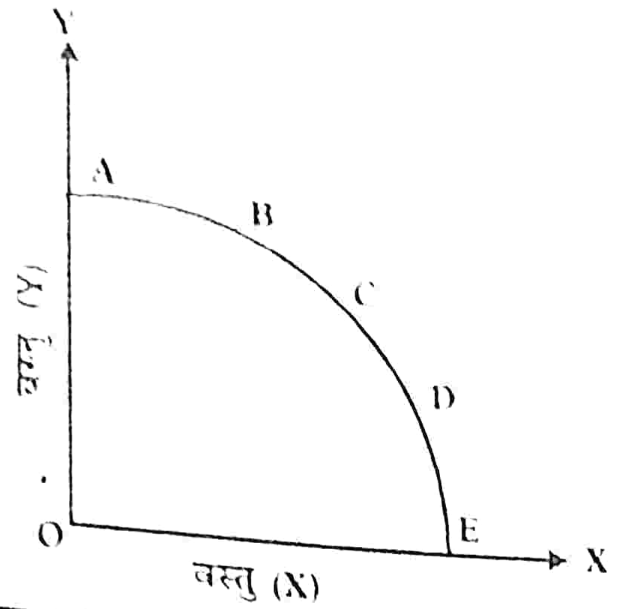

इकाई-2

उपभोक्ता के व्यवहार का सिद्धांत

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प का चयन कीजिए-

1. कीमत अनुपात Px / Py का ढाल सूचित करना है-

(a) बजट रेखा (b) बजट समूह (सेट)
(c) कीमत रेखा (d) (a) और (c) दोनों

2. उदासीनता वक्र का नीचे की ओर ढाल सूचित करता है-

(a) धनात्मक ढाल (b) ऋणात्मक ढाल
(c) स्थिर ढाल (d) इनमें से कोई नहीं

3. सीमांत उपयोगिता हो सकती है-

(a) धनात्मक (b) ऋणात्मक
(c) शून्यात्मक (d) उपर्युक्त सभी

4. सीमांत उपयोगिता और कुल उपयोगिता के लिए निम्न में से कौन-सा कथन सत्य नहीं है-

(a) जब सीमांत उपयोगिता शून्य होती है, तब कुल उपयोगिता अधिकतम होती है।

(b) जब सीमांत उपयोगिता ऋणात्मक होती है, तब कुल उपयोगिता घटने (गिरने) लगती है।

(c) जब सीमांत उपयोगिता धनात्मक होती है, तब कुल उपयोगिता बढ़ती है।

(d) जब सीमांत उपयोगिता ऋणात्मक होती है, तब कुल उपयोगिता बढ़ती है।

5. उपभोक्ता को अधिकतम संतुष्टि प्राप्त होती है, तब सीमांत उपयोगिता होती है-

(a) धनात्मक (b) ऋणात्मक
(c) शून्यात्मक (d) उपर्युक्त सभी

6. सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम आधार होता है-

(a) मूल्य निर्धारण का
(b) माँग का नियम
(c) उपभोक्ता की बचत का
(d) उपर्युक्त सभी का

7. जब सीमांत उपयोगिता शून्य होती है, तब कुल उपयोगिता -

(a) घटने लगती है (b) बढ़ने लगती है
(c) स्थिर हो जाती है (d) गुणा करती है

8. उपभोग की अंतिम इकाई से प्राप्त होने वाली उपयोगिता को कहा जाता है-

(a) सीमान्त उपयोगिता (b) धनात्मक उपयोगिता
(c) ऋणात्मक उपयोगिता (d) शून्यात्मक उपयोगिता

9. उपयोगिता को परोक्ष रूप से मापा जा सकता है-

(a) मुद्रा द्वारा (b) इकाईयों द्वारा
(c) मुद्रा और इकाईयों द्वारा (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

10. सीमांत उपयोगिता है-

(a) कुल घटती औसत उपयोगिता
(b) कुल उपयोगिता में वृद्धि
(c) कुल बढ़ती औसत उपयोगिता
(d) कुल उपयोगिता का इकाईयों की संख्या में भाग

11. उदासीनता वक्र संक्षेपण द्वारा निम्न में से कौन सी स्थिति उपभोक्ता संतुलन की है?

(a) MUx = Px (b) $\frac{MUx}{Px} = \frac{MUy}{Py}$
(c) $MRSxy = \frac{Px}{Py}$ (d) MUx = MUy

12. सुरेश द्वारा सेव की 6 वी इकाई से प्राप्त कुल उपयोगिता 300 इकाई है तथा 7वी इकाई में प्राप्त सीमान्त उपयोगिता 30 इकाई है। कुल उपयोगिता 7वी इकाई तक कितनी होगी ?

(a) 330 (b) 270
(c) 300 (d) 30

13. एक उपभोक्ता संतुलन स्थिति में होगा यदि सीमांत उपयोगिता वस्तु के लिए समान हो-

(a) वस्तु की मांग के (b) वस्तु की पूर्ति के
(c) वस्तु की कीमत के (d) उपरोक्त सभी

14. उपभोक्ता संतुलन, स्थिति में उस बिन्दु पर होता है जब बजट लाइन रेखा-

(a) उदासीनता वक्र के उपर हो
(b) उदासीनता वक्र के नीचे हो
(c) उदासीनता वक्र के लम्बवत हो
(d) उदासीनता वक्र को काटे

15. यदि MU_y = 20; MU_x = 60 कीमत y वस्तु की = 4 रु. तब x वस्तु का संतुलन मूल्य क्या होगा?

(a) 14 रु. (b) 3 रु.

(c) 12 रु. रु. (d) 4 रु.

16. उदासीनता वक्र सदैव होता है-

(a) मूल बिन्दु के नतोदर (b) मूल बिन्दु के उन्नतोदर

(c) एक लम्बवत सीधी रेखा (d) एक समानान्तर सीधी रेखा

17. दो वस्तुओं के बीच विनिमय दर उदासीनता वक्र विश्लेषण से दर्शाता है-

(a) कीमत रेखा (b) उदासीनता वक्र

(c) उदासीनता तालिका (d) उपरोक्त सभी

18. उदासीनता वक्र का ढाल दर्शाता है-

(a) कीमत अनुपात (b) ह्रासमान (घटती हुई)

(c) साधन विकल्प (d) सीमान्त उपयोगिता

19. यदि एक उपभोक्ता अपनी बजट रेखा के नीचे है तब वह-

(a) वह अपनी कुल आय को खर्च नहीं करेगा

(b) वह अपनी कुल आय का खर्च करेगा

(c) शायद अपनी आय को खर्च करे

(d) संतुलन स्थिति में होगा

20. उदासीनता मेप दर्शाता है-

(a) उच्च उदासीनता वक्र (b) नीचे उदासीनता वक्र

(c) उदासीनता वक्र परिवार (d) इनमें से कोई नहीं

21. उपयोगिता आम तौर पर से संबंधित है-

(a) संतुष्टि (b) आवश्यक

(c) बेकार (d) उपयोगी

22. जब कुल उपयोगिता अधिकतम है तब सीमान्त उपयोगिता है-

(a) शून्य (b) वापसी के नियम

(c) न्यूनतम (d) संतुलन

23. एक उपभोक्ता संतुलन में है जब सीमांत उपयोगिताएं है-

(a) बढ़ रहा है (b) बराबर

(c) न्यूनतम (d) सबसे ऊँचा

24. की बजह से एक उपभोक्ता का खर्च प्रतिबंधित है-

(a) उपयोगिता अधिकतम (b) बजट की कमी

(c) डिमांड कर्व (d) सीमांत उपयोगिता

25. निम्नलिखित में से कौन सी वस्तु पूरक वस्तु है-

(a) चाय तथा कॉफी (b) कोक तथा पेप्सी

(c) चावल तथा गेहूं (d) इनमें से कोई नहीं

26. सामान्य वस्तु की माँग उपभोक्ता की आय बढ़ाने पर-

(a) बढ़ती है (b) मांग में कमी

(c) घटती है (d) न घटती न बढ़ती

27. स्थानापन्न वस्तु की कीमत में वृद्धि से होता है-

(a) मांग में विस्तार (b) मांग में कमी

(c) मांग में वृद्धि (d) नीचे की ओर

28. पेट्रोल की कीमत बढ़ जाने पर कार की मांग वक्र खिसक जाती है-

(a) दायीं तरफ (b) बायीं तरफ

(c) ऊपर की ओर (d) नीचे की ओर

29. किसी वस्तु की मांग वक्र खींची जाती है इस मान्यता में कि-

(a) स्थानपन्न वस्तु की कीमत में परिवर्तन नहीं होता है

(b) उपभोक्ता की रूचि तथा प्राथमिकताएं पूर्ववत् रहती है

(c) उपभोक्ता की आय अपरिवर्ति रहती है

(d) उक्त सभी

30. इनमें से कौन सी वस्तु स्थानापन्न वस्तु का उदाहरण नहीं है-

(a) चाय तथा कॉफी (b) स्याही का पेन या बाल पेन

(c) कोक तथा पेप्सी (d) ब्रेड तथा बटर

31. मांग का नियम कहता है कि वस्तु की कीमत तथा उसकी मांग की मात्रा में संबंध होता है-

(a) विपरीत (b) आनुपातिक

(c) धनात्मक (d) इनमें से कोई नहीं

32. मांग का विस्तार से आशय है-

(a) मांग वक्र का दायीं ओर खिसकना

(b) मांग वक्र का नीचे जाना

(c) मांग वक्र का ऊपर जाना (d) इनमें से कोई नहीं

33. व्यक्तिगत मांग का निर्धारण होता है-

(a) जनसंख्या के आकार एवं संरचना द्वारा

(b) जलवायु एवं मौसम द्वारा

(c) आय के वितरण द्वारा

(d) इनमें से किसी के द्वारा नहीं

34. निम्नांकित मांग अनुसूची का प्रभाव मांग वक्र पर क्या होगा-

कीमत (रु.)	20	20
मांग (इकाईयां)	100	70

(a) मांग वक्र का दायीं ओर खिसकना

(b) मांग वक्र का ऊपर जाना

(c) मांग वक्र का बायीं ओर खिसकना

(d) मांग वक्र का नीचे जाना

35. मांग में विस्तार का कारण है-

(a) दी हुई वस्तु की कीमत उंची हो जाना

(b) दी हुई वस्तु की कीमत गिर जाना

(c) स्थानापन्न वस्तु की कीमत ऊंची हो जाना
(d) पूरक वस्तु की मांग गिर जाना

36. किसी वस्तु की मांग के विविरण शामिल है–
(a) वस्तु की कीमत (b) ऊपर की ओर
(c) वस्तु की मात्रा (d) उक्त सभी

37. जब उपभोक्ता की आय बढ़ जाती है, तो हल्की वस्तु की मांग वक्र चली जाए–
(a) दायीं ओर (b) ऊपर की ओर
(c) बायीं ओर (d) नीचे की ओर

38. यदि X वस्तु कीमत गिर जाने पर Y वस्तु की कीमत ऊंची चली जाए तो दोनों वस्तुएं होती है–
(a) स्थानापन्न (b) असम्बद्ध
(c) पूरक (d) प्रतिस्पर्धी

39. यदि Y वस्तु की कीमत ऊंची हो जाने पर X वस्तु की कीमत भी ऊंची चली जाये तो दोनो वस्तुएं होती हैं–
(a) स्थानापन्न (b) असम्बद्ध
(c) पूरक (d) प्रतिस्पर्धी

40. यदि X वस्तु की कीमत ऊंची हो जाने पर उसकी मांग में परिवर्तन नहीं हो, तो इसे कहेंगे–
(a) पूर्णतः लोचदार (b) कम लोचदार
(c) पूर्णतः बेलोचदार (d) अधिक लोचदार

41. एक वस्तु की मांग DD' से dd' हो जाती है तो कहा जाएगा कि–

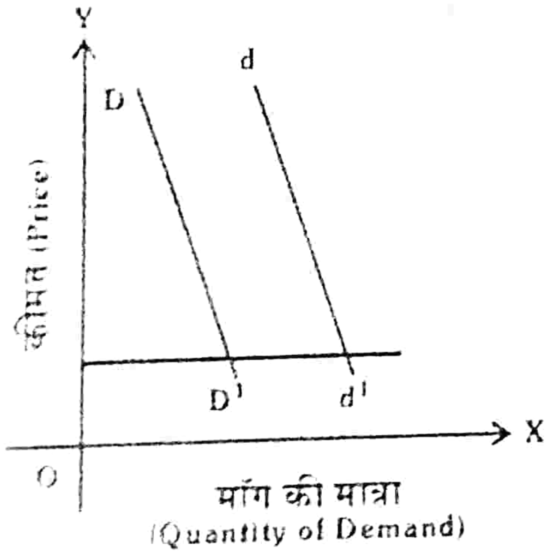

(a) वस्तु की कीमत में गिरावट
(b) वस्तु की कीमत ऊंची हो जाना
(c) स्थानापन्न वस्तुओं की कीमत ऊंची हो जाना
(d) पूरक की कीमत ऊंची हो जाना

42. एक वस्तु की मांग की लोच ऊंची नहीं होगी जब वह–
(a) क्रेता के लिए आवश्यक हो
(b) उसके कोई उपयोग संभव हो
(c) उसकी स्थानापन्न वस्तुएं अधिकतम हो
(d) वह महंगी हो

43. किसी वस्तु की मांग कम लोचदार होगी जब–
(a) प्रतिशत परिवर्तन कीमत में > प्रतिशत परिवर्तन मांग की मात्रा में
(b) प्रतिशत परिवर्तन मांग की मात्रा में > प्रतिशत परिवर्तन मांग की मात्रा में
(c) प्रतिशत परिवर्तन कीमत में प्रतिशत परिवर्तन मांग की मात्रा में
(d) कीमत में परिवर्तन हो जाने पर भी मांग पूर्ववत रहना

44. निम्नलिखित में लोचदार मांग वाली वस्तु कौन सी है–
(a) माचिस (b) दवाईयां
(c) एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तक
(d) एयर कंडीशनर

45. यदि किसी वस्तु की मांग की कीमत लोच इकाई (unit) से कम हो तो कीमत में कमी होगी–
(a) मांग की मात्रा में वृद्धि से कम अनुपात में
(b) मांग की मात्रा में वृद्धि से अधिक अनुपात में
(c) वस्तु पर कुल व्यय में वृद्धि (d) इनमें से कोई भी नहीं

46. यदि किसी वस्तु की मांग धनवान उपभोक्ता द्वारा की जाती है तो सामान्यतः इसकी मांग होती है–
(a) कम लोचदार (b) इकाई लोचवाली
(c) अधिक लोचदार (d) पूर्णतः लोचदार

47. एक मध्यम स्तर के रेस्टॉरेन्ट में भोजन की मांग लोचदार होती है। यदि रेस्टॉरेन्ट का संचालक कीमत बढ़ाने का विचार रखता है परिणाम हो सकता है।
(a) भोजन की मांग की मात्रा में अधिक कमी
(b) मांग की मात्रा में कोई कमी नहीं
(c) मांग की मात्रा में मामूली कमी
(d) मांग की मात्रा में असीमित कमी

48. गिफिन वस्तुएं किस प्रकार की होती है–
(a) निकृष्ट (b) विशिष्ट
(c) श्रेष्ठ (d) सामान्य

49. स्याही के मूल्य में वृद्धि से पेन की मांग में .... होगी–
(a) वृद्धि (b) कमी
(c) स्थिर (d) अप्रभावित

50. मांग वक्र का ढाल सामान्यतः कैसा होता है–
(a) बाएं से दाएं नीचे की ओर (b) बाएं से दाएं ऊपर की ओर
(c) X-अक्ष के समान्तर (d) इनमें से सभी

51. उपयोगिता क्रमवाचक सिद्धांत किसने प्रस्तुत किया–
(a) हिक्स तथा एलेन (b) रिकार्डो
(c) गोसेन (d) पीगु

उत्तर- (1) a, (2) b, (3) d, (4) d, (5) a, (6) b, (7) a, (8) a, (9) a, (10) b, (11) c, (12) a, (13) c (14) c, (15) c, (16) b, (17) a, (18) b (19) a, (20) c, (21) a, (22) a, (23) b, (24) b, (25) d, (26) a, (27) b, (28) c, (29) d, (30) d, (31) a, (32) b, (33) d, (34) d, (35) b, (36) d, (37) c, (38) a, (39) a, (40) c, (41) c, (42) a, (43) a, (44) d, (45) b, (46) c, (47) a, (48) a, (49) b, (50) a, (51) a.

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. उपयोगिता को परिभाषित कीजिए।

उत्तर- उपयोगिता की परिभाषा- उपयोगिता एक वस्तु की आवश्यकता को संतुष्ट करने की योग्यता है। **-प्रो. हॉब्सन**

प्रश्न 2. उपभोक्ता का अर्थ बताइये।

उत्तर- उपभोक्ता का अर्थ- उपभोक्ता उस व्यक्ति को कहते है जो विभिन्न वस्तुओं एवं सेवाओं का या तो उपभोग करता है अथवा उसको उपयोग में लाता है।

प्रश्न 3. कुल उपयोगिता अधिकतम कब होती है?

उत्तर- जब सीमान्त उपयोगिता शून्य होती है तब कुल उपयोगिता अधिकतम होती है।

प्रश्न 4. उपयोगिता क्या है?

उत्तर- किसी वस्तु का वह गुण शक्ति या क्षमता जिसके द्वारा किसी व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, उपयोगिता कहलाती है।

प्रश्न 5. उदासीनता वक्र नकारात्मक ढाल क्यों बनाते हैं?

उत्तर- किसी एक उदासीनता वक्र पर स्थित उपभोक्ता जब किसी वस्तु की मात्रा में वृद्धि करता है तो सीमान्त प्रतिस्थापन दर के नियम के कारण इसकी वस्तु को मात्रा में कमी करना अनिवार्य हो जाता है। इसी कारण उदासीनता वक्र नकारात्मक ढाल बनाते है।

प्रश्न 6. उदासीनता मानचित्र क्या है?

उत्तर- उदासीनता मानचित्र- उदासीनता या तटस्थता मानचित्र तटस्थता (उदासीन) वक्रों के समूह या सेट को कहते है। प्रत्येक एक दिये हुए संतुष्टि स्तर को दर्शाता है। वस्तुतः उदासीनता मानचित्र तटस्थता वक्रों का परिवार जो दो वस्तुओं के सभी बंडलों में उपभोक्ता के अधिमान का प्रतिनिधित्व करता है।

प्रश्न 7. सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम के दो व्यावहारिक महत्व बताइए।

उत्तर- सीमान्त उपयोगिता ढाल नियम के दो व्यवहारिक महत्व निम्न है-

(i) सीमान्त उपयोगिता ढाल नियम कर प्रणाली का आधार है।

(ii) सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम समाजवाद का आधार है।

प्रश्न 8. उपभोक्ता संतुलन का अर्थ बताइये।

उत्तर- उपभोक्ता संतुलन का अर्थ- उपभोक्ता के खर्च की वह दशा उपभोक्ता संतुलन कहलाती है जहाँ उपभोक्ता को अपने न्यूनतम खर्च से अधिकतम संतुष्टि प्राप्त होती है। अर्थात उपभोक्ता संतुलन उस स्थिति को कहते है जहाँ उपभोक्ता किसी दी हुई दशा में अधिकतम लाभ/संतुष्ट करता है।

प्रश्न 9. धनात्मक और ऋणात्मक उपयोगिता से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- एक उपभोक्ता को अधिकतम संतुष्टि के बिंदु तक प्राप्त होने वाली उपयोगिता धनात्मक उपयोगिता होती है एवं अधिकतम संतुष्टि के बिंदु के बाद मिलने वाली उपयोगिता ऋणात्मक उपयोगिता होती है।

प्रश्न 10. उपभोक्ता के बजट समूह से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- उपभोक्ता के बजट समूह- उपभोक्ता के बजट सेट या समूह उन वस्तुओं के सभी संग्रह है जिन्हें उपभोक्ता प्रचलित बाजार कीमत पर अपनी आय से खरीद सकता है।

प्रश्न 11. बजट रेखा क्या हैं?

उत्तर- बजट रेखा या बजट लाइन- यह दो वस्तुओं के सम्भावित सभी संयोगों का ग्राफीकल प्रतिनिधित्व कहलाता है जिन्हें दी गई आय तथा कीमतों से इस प्रकार खरीदा जा सकता है ताकि प्रत्येक संयोग की लागत उपभोक्ता की मौद्रिक आय के बराबर हो।

प्रश्न 12. पूरक वस्तुएं किसे कहते हैं?

उत्तर- पूरक वस्तुएं- पूरक वस्तुएं उनवस्तुओं को कहते है जो किसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए दूसरी वस्तु के साथ प्रयुक्त होती है। जैसे पेन के साथ स्याही या कार के साथ पेट्रोल।

प्रश्न 13. मांग का नियम क्या है?

उत्तर- मांग का नियम- जब किसी वस्तु या सेवा की कीमत में वृद्धि के कारण मांग में कमी और कीमत में कमी के कारण मांग में वृद्धि होती है तो इस प्रवृत्ति को मांग का नियम कहते है।

विश्लेषणात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. उदासीनता वक्र विश्लेषण का उपयोग करते हुये उपभोक्ता संतुलन की स्थिति को समझाइए।

उत्तर- तटस्थता वक्र या उदासीनता वक्र द्वारा उपभोक्ता संतुलन- उपभोक्ता संतुलन उस स्थिति को कहते हैं जहाँ उपभोक्ता एक दी हुई कीमत पर अपनी दी हुई आय से अधिक संतुष्टि प्राप्त करता है तथा उसमें कोई परिवर्तन का विचार नहीं रखता है। अधिकतम संतुष्टि तटस्थता चित्र के साथ-साथ बजट लाइन के विश्लेषण द्वारा प्राप्त की जाती है। तटस्थता चित्र पर ऊँची तटस्थता वक्र संतुष्टि के उच्च स्तर को

प्रतिनिधित्व करती है। निम्न तटस्थता वक्र संतुष्टि के निम्न स्तर का प्रतिनिधित्व करती है। अतः उपभोक्ता का सदैव यह प्रयास रहता है कि तटस्थता वक्र यथा संभव ऊँची हो और यह भी उपभोक्ता की बजट-स्थिति को ध्यान में रखकर हो।

उपभोक्ता संतुलन की शर्तें

उपभोक्ता संतुलन में निम्न दो शर्तें पूरी होनी चाहिए-

(I) प्रथम शर्त है- MRS_{XY} = Ratio of Price or $\frac{P_x}{P_y}$

यहाँ x तथा y दो वस्तुएँ हैं तथा MRS = प्रतिस्थापन की सीमान्त दर (Marginal Rate of Substitution) है।

प्रथम शर्त तो यह है कि $MRS_{XY} = \frac{P_x}{P_y}$

P_x = Price of x commodity (x वस्तु की कीमत)
P_y = Price of y commodity (y वस्तु की कीमत)

जब $MRS_{XY} > \frac{P_x}{P_y}$ हो तो इसका आशय है यह है कि X वस्तु की एक इकाई और प्राप्त करने के लिये उपभोक्ता बाजार की जरूरत की तुलना में Y वस्तु की अधिक इकाइयों का त्याग करेगा।

अर्थात् उपभोक्ता X वस्तु की खरीद करने के लिये प्रेरित होगा। परिणामस्वरूप, MRS गिर जायेगी तथा तब तक गिरती रहेगी जब तक वह कीमतों के अनुपात के बराबर हो जाय और संतुलन स्थापित हो जाय।

जब $MRS_{XY} < \frac{P_x}{P_y}$ हो तो इसका आशय यह है कि संतुलन स्तर के ऊपर X वस्तु की अधिक इकाइयाँ खरीदने के लिये MRS_{XY} $\frac{P_x}{P_y}$ से कम हो जाएगा तथा उसे हानि होना शुरु हो जाएगी। अतः उपभोक्ता X की अधिक इकाइयाँ प्राप्त करने का प्रयास नहीं करेगा। वह X की कम इकाईयाँ तथा Y की अधिक इकाईयाँ खरीदेगा। परिणामस्वरूप MRS तब तक बढ़ता जाएगा जब तक वह कीमतों के अनुपात के बराबर हो जाय तथा संतुलन स्थापित हो जाय।

(II) प्रतिस्थापन की सीमान्त दर निरन्तर घटना- यह दूसरी शर्त इस बात को रेखांकित करती है कि उपभोक्ता संतुलन के लिये संतुलन बिन्दु पर प्रतिस्थापन की सीमान्त दर घटती हुई हो।

अर्थात् तटस्थता वक्र संतुलन बिन्दु पर उदगम की ओर उन्नतोदर (Convex) हो। जब तक प्रतिस्थापन की सीमान्त दर निरन्तर नहीं घटती है तब तक संतुलन स्थापित नहीं हो सकता।

इस प्रकार, उक्त दोनों शर्तों का पालन होना उपभोक्ता संतुलन के लिये आवश्यक है।

चित्र द्वारा स्पष्टीकरण

मान लीजिए IC_1, IC_2 तथा IC_3 तीन तटस्थता वक्र हैं तथा AB बजट लाइन है। बजट लाइन के व्यवहार के साथ, ऊँचा तटस्थता वक्र जो उपभोक्ता प्राप्त करता है, वह है IC_2 जो E बिन्दु पर है। यह बिन्दु उपभोक्ता संतुलन का बिन्दु है। यहाँ उपभोक्ता X वस्तु की OM मात्रा तथा y वस्तु की ON मात्रा खरीदता है। अन्य दूसरे बिन्दु जो बजट लाइन पर E की दायीं ओर तथा बायीं ओर हैं वे निम्न तटस्थता वक्र पर है जो संतुष्टि के निचले स्तर को प्रदर्शित करते हैं।

यहाँ उपभोक्ता संतुलन बिन्दु E पर है जबकि बजट लाइन AB वक्र IC_2 को स्पर्श करती है। यहाँ उपभोक्ता को अधिकतम संतुष्टि प्राप्त होती है। यहीं पर उक्त दोनों शर्तों का पालन उपभोक्ता संतुलन के लिये होता है।

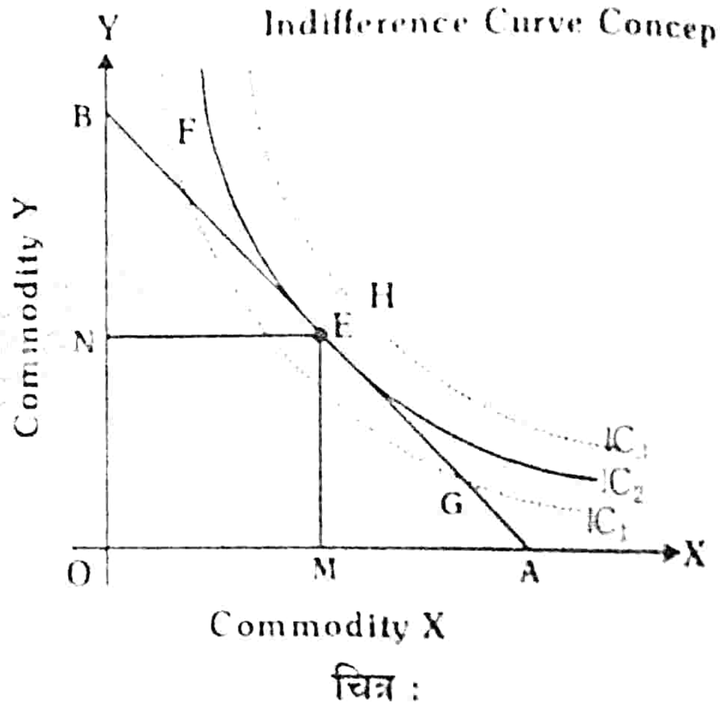

चित्र :

यहाँ पहली शर्त इस प्रकार पूरी हुई है- MRS $\frac{P_x}{P_y}$ जोकि स्पर्श बिन्दु E पर है जहाँ तटस्थता वक्र के स्लोप का निरपेक्ष मूल्य (X तथा Y के बीच प्रतिस्थापन की सीमान्त दर) तथा बजट लाइन (कीमत अनुपात) एक समान है।

इस प्रकार, $MRS_{XY} = \frac{P_x}{P_y}$

यहाँ दूसरी शर्त भी पूरी हुई है। बिन्दु E पर प्रतिस्थापन की सीमान्त दर घट रही है अर्थात् IC_2 उदगम की ओर उन्नतोदर बिन्दु E पर है।

प्रश्न 2. सम-सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम को एक उदाहरण द्वारा समझाइए।

उत्तर-सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम का अर्थ एवं परिभाषा- हमारे दैनिक जीवन का यह अनुभव है कि जितना वस्तु का स्टॉक अधिक होगा उतनी ही उसकी अतिरिक्त इकाई से प्राप्त होने वाली उपयोगिता कम होगी। अर्थात् किसी समय विशेष पर जैसे ही किसी व्यक्ति के पास वस्तु के स्टॉक में वृद्धि होती है वैसे ही उस वस्तु की सीमांत उपयोगिता घटती जाती

है। प्रोफेसर गोसेन ने इस नियम की सर्वप्रथम व्याख्या की थी। इसे **गोसेन का प्रथम नियम या तृप्ति का नियम कहा जाता है।**

उदाहरण तथा रेखाचित्र द्वारा नियम की व्याख्या

मान लीजिये कि एक व्यक्ति को भूख लगी है, जब वह पहली रोटी खाता है तो उससे उसे सबसे अधिक उपयोगिता मिलती है। माप की सुविधा के लिए हम इसे 50 मानते हैं, इसके बाद उसकी भूख की तीव्रता कुछ कम हो जाती है और वह दूसरी रोटी खाता है, उससे उस व्यक्ति को 40 उपयोगिता मिलती है, तीसरी रोटी से 30, चौथी रोटी से 20, पाँचवीं रोटी से 10 और उसके बाद छठी रोटी से 0, सातवीं रोटी से -10 अर्थात् उपयोगिता ह्रास या कमी प्रत्येक इकाई के साथ होती जाती है। इसमें छठी इकाई अधिकतम सन्तुष्टि का बिन्दु है।

उपर्युक्त उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि-

(1) प्रत्येक अगली इकाई से प्राप्त होने वाली **सीमांत उपयोगिता घटती चली** जाती है।

(2) हर अगली इकाई से **कुल उपयोगिता में वृद्धि** होती जाती है।

(3) शून्य **सीमांत उपयोगिता प्राप्त होने पर कुल उपयोगिता धनात्मक तथा अधिकतम होती है।**

(4) शून्य उपयोगिता प्राप्त होने के बाद यदि वस्तु की इकाइयों का और उपभोग किया जाता है तो **ऋणात्मक उपयोगिता प्राप्त होगी तथा कुल उपयोगिता घटने लग जायेगी।**

(5) शून्य **उपयोगिता प्राप्त होने पर उपभोग बन्द कर देना** ही उपभोक्ता के लिये हितकर होता है।

सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम को हम निम्न सारणी के द्वारा भली-भाँति समझ सकते हैं। इस सारणी में उपभोक्ता को रोटियों की विभिन्न इकाइयों से प्राप्त उपयोगिता को दर्शाया गया है।

रोटियों की इकाइयाँ	सीमांत उपयोगिता (इकाइयों में)		कुल उपयोगिता (इकाइयों में)	
1	50		50	
2	40		90	क्रमशः वृद्धि
3	30	क्रमशः घटती हुई	120	
4	20	धनात्मक	140	
5	10		150	
6	0	< शून्य		
		पूर्ण सन्तुष्ट बिन्दु	150	
7	-10	क्रमशः घटती हुई	140	
8	-20	ऋणात्मक	120	क्रमशः कमी

उक्त सारणी में जैसे-जैसे उपभोक्ता रोटियों की इकाइयों की संख्या में क्रमशः वृद्धि करता है, वैसे ही वैसे प्रत्येक अगली रोटी के उपभोग से प्राप्त होने वाली सीमांत उपयोगिता क्रमशः घटती जाती है।

यह बात निम्न रेखाचित्र की सहायता से भी समझी जा सकती है-

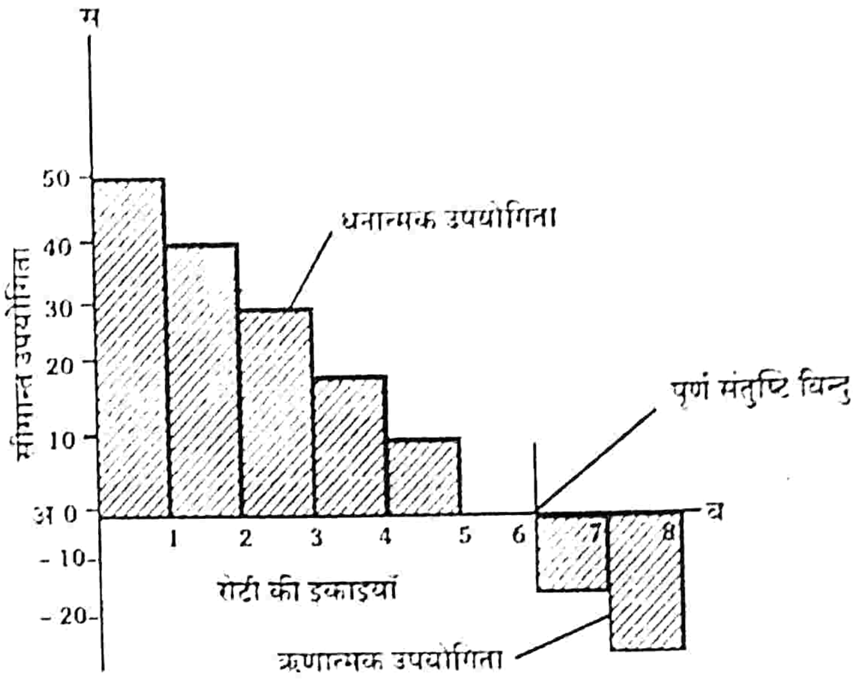

चित्र :

इस रेखाचित्र में अब रेखा रोटी की इकाइयों तथा अ स रेखा पर इनसे प्राप्त उपयोगिता की मात्रा दर्शाती है। प्रथम रोटी से प्राप्त उपयोगिता क्र. 1 आयात दर्शाता है, क्र. 2, 3, 4, 5 आयात भी अगली रोटियों के उपभोग से प्राप्त होने वाली उपयोगिता दर्शाते हैं, किन्तु घटते क्रम से छठी की उपयोगिता 0 है, जबकि कुल उपयोगिता 150 है। यह अधिकतम संतुष्टि का बिन्दु है। इसके पश्चात् उपभोग जारी रखने पर सातवीं इकाई से -10 अर्थात् ऋणात्मक उपयोगिता मिलती है तथा कुल उपयोगिता भी घटकर 140 ही रह जाती है। यदि वह और भी इकाई का उपभोग करेगा तो ऋणात्मक उपयोगिता बढ़ती जाएगी और कुल उपयोगिता घटती जाएगी।

प्रश्न 3. सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम की रेखाचित्र की सहायता से व्याख्या कीजिए।

उत्तर- उत्तर- सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम अर्थशास्त्र का एक आधारभूत नियम है। यह नियम इस तथ्य पर आधारित है कि यद्यपि व्यक्ति की आवश्यकताएँ असीमित होती हैं, परन्तु एक विशेष समय पर इनमें से एक विशेष आवश्यकता की सन्तुष्टि की जा सकती है। व्यक्ति अपनी आवश्यकता को सन्तुष्ट करने के लिए जैसी ही किसी वस्तु का उपभोग प्रारम्भ करता है, आवश्यकता की तीव्रता घटने लगती है और वस्तु जिसका उपभोग किया जाता है, कम उपयोगी होती जाती है और अन्त में एक ऐसी स्थिति आती है जब व्यक्ति को वस्तु विशेष के उपभोग से कोई उपयोगिता नहीं मिलती है। यदि उपभोग का क्रम निरन्तर चलता रहता है, तो उपभोक्ता को वस्तु से अरुचि हो जाती है। इस स्थिति में उपयोगिता ऋणात्मक हो जाती है। इसी अनुभव के आधार पर सीमान्त

उपयोगिता ह्रास नियम का प्रतिपादन किया गया तो इस नियम को निम्न प्रकार परिभाषित किया गया है

प्रो. मार्शल के अनुसार, "किसी व्यक्ति को एक वस्तु प्राप्त किसी वस्तु की मात्रा में वृद्धि होने से जो अतिरिक्त लाभ प्राप्त होता है, वह उस वस्तु की मात्रा में होने वाली वृद्धि के साथ घटता जाता है।"

उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण- माना कोई व्यक्ति बहुत भूखा है। वह अपनी भूख शान्त करने को रोटियाँ खाना प्रारम्भ करता है। प्रारम्भ में भूख की तीव्रता अधिक होने के कारण उपभोग की जाने वाली प्रथम रोटी से उसे सबसे अधिक तुष्टिगुण प्राप्त होगा।

पहली रोटी खाने के बाद उसकी भूख की तीव्रता कम हो जायेगी, अतः दूसरी रोटी की उपयोगिता पहली की अपेक्षा कम होगी। इस प्रकार प्रत्येक अगली रोटी से उसे पहली रोटी की अपेक्षा कम तुष्टिगुण प्राप्त होगा। जब वह छठी रोटी खाता है तो तुष्टिगुण शून्य हो जाता है तथा कुल उपयोगिता का बढ़ना रुक जाता है। यह पूर्ण तृप्ति की अवस्था है। बुद्धिमान उपभोक्ता इसी बिन्दु पर उपभोग बन्द कर देता है, परन्तु यदि सातवीं रोटी खायी गयी तो सीमान्त तुष्टिगुण ऋणात्मक हो जाता है।

नियम का चित्र द्वारा स्पष्टीकरण- रेखाचित्र में सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम को प्रदर्शित किया गया है। चित्र में OX-अक्ष पर रोटी की इकाइयाँ तथा OY-अक्ष पर सीमान्त उपयोगिता प्रदर्शित की गई है। चित्र में ABCDEFG सीमान्त उपयोगिता वक्र खींचा गया है। AB रेखा बढ़ती हुई सीमान्त उपयोगिता को प्रदर्शित करती है तथा BCDEF क्रमागत उपयोगिता ह्रास को प्रदर्शित करती है। F पुर्ण तुष्टि का बिन्दु है। यहाँ कुल प्रयोग किया जाता है, एक सीमा के बाद कुल उपयोगिता घटती हुई दर से बढ़ती है।

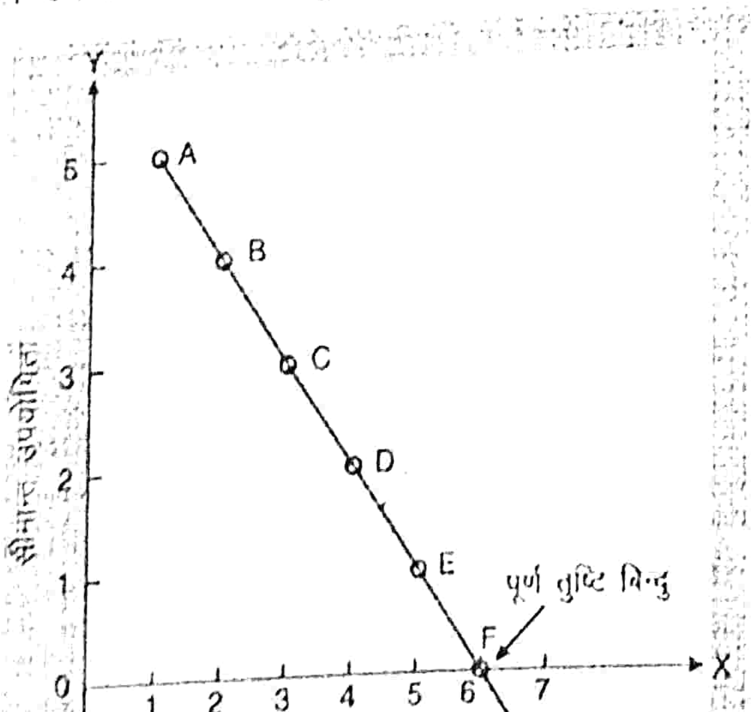

प्रश्न 4. तटस्थता वक्र क्षैतिज या लम्बवत अक्ष को स्पर्श क्यों नहीं करते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- तटस्थता वक्र सदैव उद्गम की ओर उन्नतोदर होती है, इसका मुख्य कारण सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम का क्रियाशील होना है। परिणामस्वरूप प्रतिस्थापन की सीमान्त दर घटती जाती है।

एक उपभोक्ता किसी एक वस्तु का अधिक उपभोग करता है तो दूसरी वस्तु का वह कम उपभोग करेगा। यदि वह एक वस्तु की अधिक इकाइयाँ प्राप्त करना चाहता है तो उसे दूसरी वस्तु की इकाईयाँ कम करनी होगी ताकि कुल संतुष्टि अपरिवर्तित रहे। तटस्थता वक्र कभी भी एक दूसरी को काट नहीं सकती क्योंकि संतुष्टि का स्तर वही नहीं रहता है। यह बात निम्नांकित चित्र से स्पष्ट हो जाएगी।

यहाँ, तटस्थता वक्र IC_1 तथा IC_2 क्रमशः भिन्न-भिन्न संतुष्टि के स्तर का प्रतिनिधित्व करती है। यही कारण है कि वे एक दूसरी को कभी भी नहीं काट सकतीं।

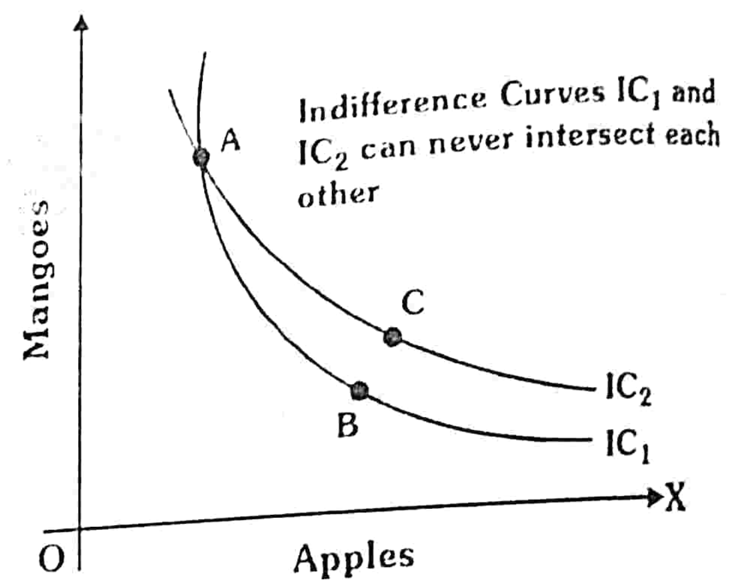

चित्र :

तटस्थता वक्र x-axis या y-axis को कभी भी स्पर्श नहीं कर सकती (An indifference curve can never touch x-axis or y-axis)- क्योंकि तटस्थता वक्र की अवधारणा की यह मान्यता होती है कि उपभोक्ता दो वस्तुओं का उपभोग करता है और यह उपभोग एक ही समय किया जाता है। यदि तटस्थता वक्र y-axis को स्पर्श करे तो इसका आशय यह है कि x-axis पर वस्तु का उपभोग शून्य है। इसी प्रकार, यदि तटस्थता वक्र x-axis को स्पर्श करे तो इसका आशय यह है कि y-axis पर वस्तु का उपभोग शून्य है।

प्रश्न 5. मांग के नियम की रेखाचित्र की सहायता से व्याख्या कीजिए।

उत्तर–उत्तर- माँग का नियम-

सरल शब्दों में, माँग का नियम माँग और कीमत के सम्बन्ध को व्यक्त करता है। माँग के नियम के अनुसार, अन्य बातें समान रहने पर, कम कीमत पर वस्तु की माँग अधिक और अधिक कीमत पर वस्तु की माँग कम होती है।

प्रो. मार्शल के शब्दों में, "कीमत में कमी होने पर माँग की मात्रा में वृद्धि तथा कीमत में वृद्धि होने पर माँग की मात्रा में कमी होती है।"

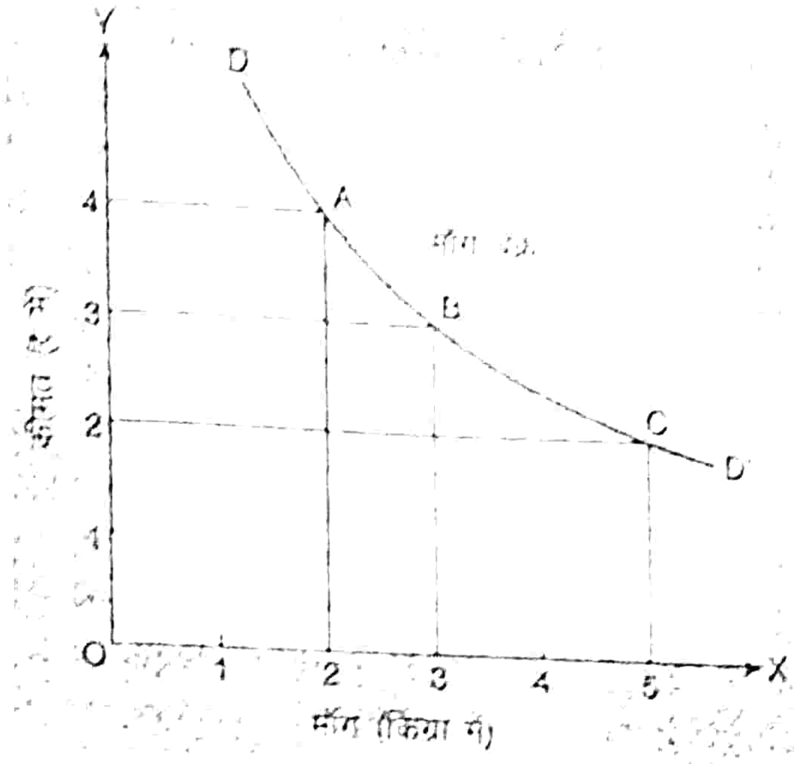

माँग वक्र- उपर्युक्त काल्पनिक माँग सारणी को रेखाचित्र में प्रदर्शित किया गया है। रेखाचित्र में OX-अक्ष पर चीनी की माँग और OY-अक्ष पर कीमत दिखाई गई है। DD' माँग वक्र पर बिन्दु A यह बताता है कि ₹ 4 प्रति किग्रा कीमत होने पर उपभोक्ता 2 किग्रा चीनी की माँग करता है, बिन्दु B बताता है कि चीनी की कीमत ₹ 3 प्रति किग्रा होने पर उपभोक्ता 3 किग्रा चीनी की माँग करता है तथा बिन्दु C दर्शाता है कि चीनी की कीमत ₹ 2 प्रति किग्रा होने पर उपभोक्ता की माँग 5 किग्रा हो जाती है। माँग वक्र कीमत और माँग के विपरीत सम्बन्ध को स्पष्ट करता है। ध्यान रहे माँग वक्र प्रायः दायीं ओर ढालू होता है।

प्रश्न 6. मांग के नियम का महत्व समझाइए।

उत्तर– मांग के नियम का अध्ययन निम्न कारणों से महत्वपूर्ण माना जाता है-

1. करारोपण में सहायक- माँग का नियम करारोपण में वित्त मंत्री को सहायता प्रदान करता है। क्योंकि माँग का नियम कर की दरों में कमी या वृद्धि के औचित्य को जानने में सहायक होता है। यदि किसी वस्तु पर कर बढ़ाने से इस सीमा तक कीमत बढ़ जाती है कि उसकी मांग में उल्लेखनीय कमी हो जाएगी तो ऐसी दशा में कर लगाना उचित नहीं होगा क्योंकि कर की आय लगभग वही रहेगी। मांग, कीमत बढ़ जाने के बावजूद भी अधिक नहीं गिरेगी तो ऐसी दशा में कर में की जाने वाली वृद्धि उचित समझी जाएगी।

2. कीमत निर्धारण में सहायक- माँग का नियम वस्तु के कीमत निर्धारण में सहायक होता है, एक उत्पादक या व्यापारी माँग के नियम के आधार पर यह जान सकता है कि एक निश्चित सीमा तक किसी वस्तु की कीमत बढ़ाने पर उसकी माँग किस सीमा तक गिरेगी तथा एक निश्चित सीमा तक किसी वस्तु की कीमत घटा देने पर उसकी माँग किस सीमा तक बढ़ेगी। इस प्रकार वह अपनी वस्तु की वह कीमत निर्धारित कर सकते है जिससे उन्हें अधिकतम लाभ प्राप्त हो।

3. कृषकों के लिए महत्व- कृषकों के लिए माँग का नियम विशेष महत्व रखता है। किस फसल से उन्हें लाभ होगा व किस फसल से हानि, इसका अनुमान वे माँग के नियम से लगाते है एवं हानि की दशा से बचने का प्रयास करते है। यदि फसल अच्छी है और माँग में वृद्धि नहीं होती तो उत्पाद की कीमत काफी गिर जाएगी। ऐसी दशा में अच्छी फसल का लाभ कृषकों को नहीं मिलेगा। इसके विपरीत यदि अच्छी फसल की दशा में माँग बढ़ जाती है तो उत्पाद की कीमत वृद्धि कृषकों को लाभ प्रदान करेगी।

प्रश्न 7. मांग को निर्धारित करने वाले घटकों को समझाइये।

उत्तर– मांग को निर्धारित करने वाले घटक निम्न है-

1. उपभोक्ता की आय– उपभोक्ता की आय मांग को प्रभावित करती है। उपभोक्ता की आय के बढ़ने से वस्तु की माँग बढ़ती है। इसके विपरीत उपभोक्ता की आय कम होने से वस्तु की माँग कम हो जाती है।

2. वस्तु की कीमत– किसी वस्तु की माँग को उसकी कीमत भी प्रभावित करती है। प्रायः वस्तु की कीमत के घटने पर माँग बढ़ती है तथा वस्तु की कीमत के बढ़ने पर माँग घटती है।

3. धन की वितरण– समाज में धन का वितरण भी वस्तुओं की माँग को प्रभावित करता है। यदि समाज में धन का वितरण असमान हो तो विलासितापूर्ण वस्तुओं की मांग बढ़ेगी। इसके विपरीत, यदि समाज में धन का वितरण समान है तो अनिवार्य एवं आरामदायक वस्तुओं की मांग बढ़ेगी।

4. उपभोक्ताओं की रूचि– उपभोक्ताओं की रूचि, फैशन, आदत एवं रीति रिवाज भी वस्तु की मांग को प्रभावित करते है जिस वस्तु के प्रति उपभोक्ता की रूचि बढ़ती है, तो उस वस्तु की माँग भी बढ़ जाती है।

5. मौसम एवं जलवायु– वस्तु की मांग पर मौसम एवं जलवायु का भी प्रभाव पड़ता है। गर्मी के दिनों में पंखा, कूलर, फ्रिज, ठण्डा पेय आदि की मांग बढ़ जाती है। इसके विपरीत ठण्ड के दिनों में ऊनी कपड़े, हीटर आदि की माँग बढ़ जाती है।

प्रश्न 8. मांग के नियम के अपवादों को समझाइये।

उत्तर– माँग के नियम के अपवाद निम्न प्रकार है–

1. प्रतिष्ठा रक्षक वस्तुओं के संबंध में- प्रतिष्ठा रक्षक वस्तुएं माँग के नियम का अपवाद है। कुछ वस्तुएं ऐसी होती है जिन्हे समाज में अपनी प्रतिष्ठा कायम रखने के लिये उपभोक्ता को खरीदना पड़ता है। अपनी प्रतिष्ठा को बनाये रखने हेतु उपभोक्ता द्वारा ऊँची कीमत पर भी इन्हें खरीदना आवश्यक हो जाता है।

2. जीवन रक्षक वस्तुओं के संबंध में- जीवन रक्षक वस्तुओं के सम्बन्ध में माँग का नियम लागू नहीं होता है। जीवन रक्षक वस्तुएं जीवन की रक्षा के लिये अनिवार्य होती है अतः ऊँची कीमत पर भी खरीदने के लिये उपभोक्ता विवश हो जाता है। ऐसी दशा में माँग वक्र ऊपर की ओर चढ़ती हुई हो सकती है। जीवन रक्षक वस्तुओं में अनाजें, दालें व दूध अन्य खाद्यान्न आते हैं।

3. भविष्य में कीमत परिवर्तन की संभावना- उन वस्तुओं पर माँग का नियम लागू नहीं होता है जिनकी कीमत परिवर्तित होने की प्रबल संभावना हो। भविष्य में यदि किसी वस्तु की कीमत बढ़ने की प्रबल संभावना हो तो वर्तमान में उसकी कीमत ऊँची होने पर भी लोग उसकी अधिक मात्रा में खरीदी करेंगे क्योंकि उन्हें भविष्य में उसी वस्तु की अधिक कीमत देना पड़ेगी। इसके विपरीत, भविष्य में यदि किसी वस्तु की कीमत के घटने की प्रबल संभावना हो तो वर्तमान में कीमत कम रहने पर भी लोग उसकी कम मात्रा में खरीदी करेंगे क्योंकि उन्हें भविष्य में वही वस्तु कम कीमत में प्राप्त होगी।

4. बहुमूल्य रत्न (Precious Stores)- हीरे, जवाहरात जैसे बहुमूल्य रत्नों के सम्बन्ध में माँग वक्र ऊपर की ओर चढ़ती है अर्थात् माँग का नियम लागू नहीं होता है क्योंकि इन्हें धनी लोग अपनी प्रतिष्ठा के लिए खरीदते हैं। चाहे इनकी कीमत कितनी बढ़ जाएँ।

5. फैशन, आदत, रुचि एवं पसंदगी में परिवर्तन- उपभोक्ता की फैशन, आदत, रुचि, पसंदगी में परिवर्तन की दशा में माँग का नियम लागू नहीं होता है। नई फैशन की वस्तु ऊँची कीमत पर भी अधिक खरीदी जाती है। आदत, रुचि तथा पसंदगी की वस्तुओं की कीमत बढ़ने पर माँग वक्र ऊपर की ओर चढ़ती है।

प्रश्न 9. मांग की लोच के प्रकारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर– प्रो. मार्शल ने माँग की लोच की निम्न तीन व्यावहारिक श्रेणियों को लिया है– (1) अधिक लोचपूर्ण माँग, (2) इकाई लोच माँग, (3) कम लोचपूर्ण माँग।

1. अधिक लोचपूर्ण माँग (Highly Elastic Demand)- जब कीमत में कमी से कुल व्यय बढ़े तथा कीमत के बढ़ने से कुल व्यय घटे तो अधिक लोचपूर्ण माँग की स्थिति होती है अर्थात् जब किसी वस्तु पर उपभोक्ता द्वारा किया जाने वाला कुल व्यय कीमत परिवर्तन के विपरीत बदलता है तो वह वस्तु अधिक लोचपूर्ण माँग वाली होगी।

उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण

कीमत	माँग	कुल व्यय	माँग का लोच
60 50	10 20	60 100	e > 1

उक्त तालिका में कीमत के 60 रु. से घटाकर 50 रु. हो जाने पर कुल व्यय 60 रु. से बढ़कर 100 रु. हो जाता है। इसी उदाहरण को उलट कर देखें तो 50 रु. कीमत पर कुल व्यय 100 रु. है, जबकि कीमत के बढ़कर 60 रु. हो जाने पर यह घटकर 60 रु. रह जाता है।

2. इकाई लोच माँग– जब किसी वस्तु की कीमत में कमी या वृद्धि होने पर कुल व्यय पर उसका प्रभाव न हो तो इस स्थिति में उस वस्तु की माँग इकाई लोच माँग होगी इस स्थिति में ऐसा होना स्वाभाविक भी है, क्योंकि कुल व्यय तभी स्थिर होगा, जबकि वस्तु की माँग में होने वाला परिवर्तन कीमत के परिवर्तन के अनुपात में और विपरीत दिशा में हो।

उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण

कीमत	माँग	कुल व्यय	माँग का लोच
40 30	30 40	120 120	e = 1

उक्त तालिका में कीमत 40 से घटकर 30 हो जाने पर भी कुल व्यय 120 रु. ही रहता है इसी प्रकार उलट कर देखें तो 30 रु. कीमत से बढ़कर 40 रु. हो जाती है तब भी कुल व्यय 120 रु. ही रहता है अतः वस्तु की कीमत में कमी या वृद्धि से कुल व्यय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

3. कम लोचपूर्ण माँग– जब वस्तु की कीमत घटने से उपभोक्ता का उस वस्तु पर व्यय भी कम हो जाए तथा कीमत बढ़ने पर कुल व्यय भी बढ़ जाए तो कम लोचपूर्ण माँग की स्थिति होती है अर्थात् जब किसी वस्तु पर किया जाने वाला व्यय उस वस्तु की कीमत के परिवर्तन की दिशा में ही बदले तब वस्तु कम लोचपूर्ण वाली होंगी।

कीमत	माँग	कुल व्यय	माँग का लोच
20 10	50 60	100 60	e < 1

[illegible]

प्रश्न 10. कीमत माँग लोच के निर्धारक तत्व समझाइये।

उत्तर- माँग की लोच को प्रभावित करने वाले प्रमुख घटक निम्न है-

1. वस्तु के प्रयोग (Uses of Commodity)- किसी वस्तु के प्रयोग उस वस्तु की माँग की लोच को प्रभावित करते हैं अर्थात् एक से अनेक प्रयोग वाली वस्तुओं की माँग लोचदार होती है। उदाहरण के लिए, बिजली का प्रयोग अनेक कामों मे होता है, यदि बिजली की दरों मे वृद्धि होती है तो लोग इसकी माँग कम और दरों में कमी होने पर माँग अधिक करेंगे। इसके विपरीत यदि बिजली किसी एक ही काम के प्रयोग हो सकती है तो उसके मूल्य मे वृद्धि से भी माँग परिवर्तित नहीं होगी। अत: जिन वस्तुओं के एक से अधिक प्रयोग किये जा सकते है उन वस्तुओं की माँग लोचदार तथा एक ही प्रयोग मे काम आने वाली वस्तु की माँग बेलोचदार होती है।

2. वस्तु के गुण (Quality of Commodity)-माँग की लोच वस्तु के गुणो से भी प्रभावित होती है। जो वस्तुएं अनिवार्य आवश्यकता की (जीवनरक्षक) होती है उनकी माँग बेलोचदार होती है। आराम प्रदान करने वाली वस्तुओं की माँग की लोच औसत दर्जे की होती है, क्योंकि वस्तुओं की कीमतों मे परिवर्तन का प्रभाव माँग पर कुछ अधिक पड़ता है। विलासिता की वस्तुओं की माँग अत्यधिक लोचदार होती है। यदि इन वस्तुओं की कीमतों में थोड़ा भी परिवर्तन होता है, तो वस्तु की माँग मे भारी परिवर्तन आ जाता है। अत: वस्तु के गुण उसकी माँग की लोच को प्रभावित करते है।

3. संयुक्त माँग (Joint Demand)- कुछ वस्तुओं की संयुक्त माँग भी माँग की लोच को प्रभावित करती है। उपयोग मे आने वाली कुछ वस्तुएं ऐसी है, जिनकी माँग साथ-साथ की जाती है तो ऐसी माँग संयुक्त माँग कहलाती है। जैसे- मक्खन व डबलरोटी, स्याही व पेन, कार तथा पेट्रोल आदि। अत: प्राय: वस्तु की माँग बेलोचदार होगी। उदाहरण के लिए पेन तथा स्याही जैसी संयुक्त माँग की वस्तुओं में यदि पेन की माँग स्थिर हो, तो स्याही की कीमत में कमी या वृद्धि से स्याही की माँग प्रभावित नहीं होगी।

4. वस्तु की कीमत (Price of Commodity)- वस्तु की कीमत माँग की लोच पर बहुत प्रभाव डालती है। माँग की लोच ऊँची कीमतों के सम्बन्ध में अधिक होती है, मध्य कीमतों के लिए पर्याप्त तथा ज्यों-ज्यों कीमत घटती है त्यों-त्यों माँग की लोच भी घटती है। यदि कीमतें इतनी गिरें कि तृप्ति की सीमा आ जाये, तो लोच धीरे-धीरे समाप्त हो जाती है। प्रकार वस्तु की कीमत माँग की लोच को प्रभावित करती है।

5. आय स्तर (Income Level)- [illegible] माँग की लोच को प्रभावित करता है [illegible] लोचदार हो जाती है।

प्रश्न 11. विभिन्न प्रकार की माँग की कीमत लोच का वर्णन कीजिए तथा रेखाचित्र की सहायता से इन्हें समझाइये।

उत्तर- उत्तर- माँग की लोच का आधार माँग का नियम है। इस नियम के आधार पर किसी वस्तु के मूल्य में कमी होने पर उसकी माँग में वृद्धि और वस्तु के मूल्य में वृद्धि होने पर उसकी माँग में कमी हो जाती है किन्तु मूल्य परिवर्तन के कारण वस्तु की माँग में उत्पन्न होने वाला परिवर्तन कभी कम होता है तो कभी अधिक। कुछ वस्तुओं में मूल्य सापेक्षता कम पायी जाती है तो कुछ में अधिक।

इस प्रकार माँग की लोच समस्त वस्तुओं में एक सी नहीं होती है। इसे निम्न प्रकार पाँच श्रेणियों में बाँटा जा सकता है-

1. पूर्णतया मूल्य सापेक्ष माँग- जब किसी वस्तु के मूल्य में घट-बढ़ हुए बिना ही उसकी माँग में वृद्धि या कमी हो जाती है तो ऐसी माँग को पूर्णतया मूल्य सापेक्ष माँग कहते है। इस प्रकार की माँग पूर्णतया काल्पनिक व अव्यावहारिक होती है। वास्तविक जीवन मे इस प्रकार की माँग की पूर्णतया मूल्य सापेक्षता का कोई भी उदाहरण नहीं मिलता: अत: इसे केवल एक काल्पनिक माँग तालिका एवं वक्र की सहायता से ही समझाया जा सकता है-

तालिका: पूर्णतया मूल्य सापेक्ष माँग

मूल्य (₹ प्रति किग्रा)	माँगी गयी मात्रा (किग्रा)
20	200
20	220
20	240

चित्र से स्पष्ट है कि OD मूल्य पर माँग कभी OQ_1 है तो कभी OQ_2 या OQ_3 है। इससे ज्ञात होता है कि मूल्य स्थिर रहने पर भी माँग घटती और बढ़ती है। चूंकि मूल्य के स्थिर रहने हुए भी वस्तु की माँग में परिवर्तन हो जाते है, अत: हम कहते है कि वस्तु की माँग पूर्णतया मूल्य सापेक्ष है।

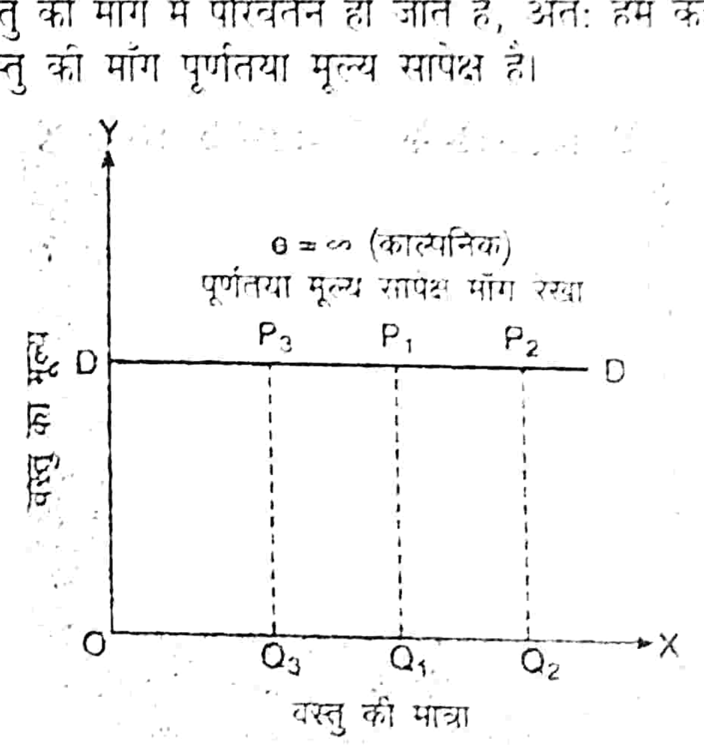

1. **पूर्णतया मूल्य निरपेक्ष माँग** [illegible]

[illegible]

तालिका : पूर्णतया मूल्य निरपेक्ष माँग

मूल्य (₹ प्रति किग्रा)	माँगी गयी मात्रा (किग्रा)
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]

[illegible]

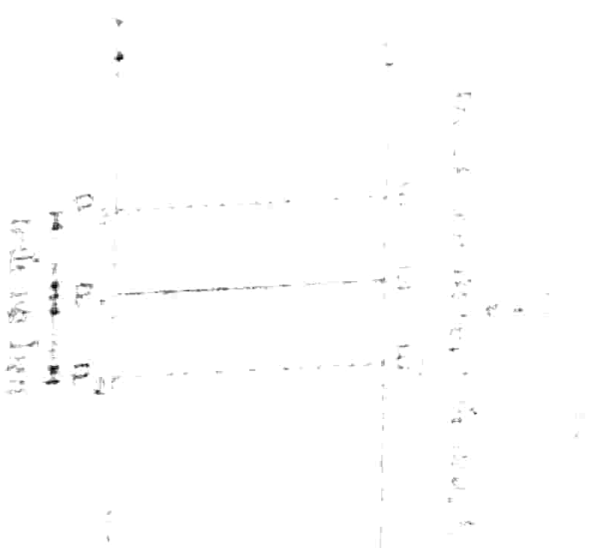

[illegible] मूल्य सापेक्ष माँग

मूल्य (₹ प्रति किग्रा)	माँगी गयी मात्रा (किग्रा)
[illegible]	200
[illegible]	250
[illegible]	3[illegible]

[illegible] माँग OQ_1 है [illegible] जाता है तो [illegible] है कि मूल्य में [illegible] इस प्रकार की माँग [illegible] है।

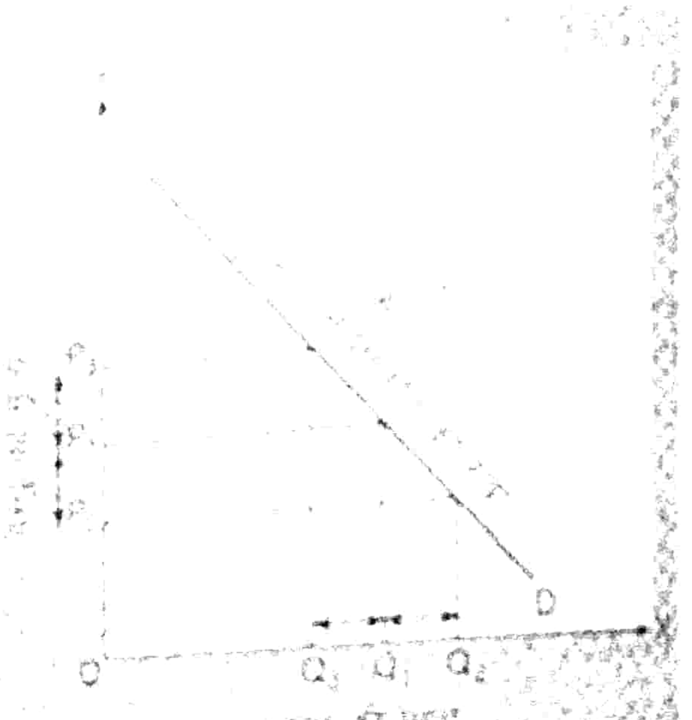

3. **इकाई मूल्य सापेक्ष माँग**- [illegible]

4. **अधिक मूल्य सापेक्ष माँग**- [illegible] किसी वस्तु की माँग [illegible] परिवर्तन से अधिक अनु[illegible] [illegible] अधिक सापेक्ष होती है। साधारणतया [illegible] की वस्तुओं की माँग अत्यधिक मूल्य सापेक्ष होता है। यदि [illegible] के मूल्य में 25% कमी आ [illegible] से उसकी माँग 50% बढ़ जाये अथवा उसके मूल्य में 25% वृद्धि हो जाने से उसकी माँग 50% कम हो जाये तो हम कहें कि [illegible] की माँग अत्यधिक मूल्य सापेक्ष है इसे निम्न [illegible] तालिका की सहायता से स्पष्ट किया गया है-

तालिका : अधिक मूल्य सापेक्ष माँग

मूल्य (₹ प्रति किग्रा)	माँगी गयी मात्रा (किग्रा)
20	200
16	280
12	400

चित्र में, DD माँग वक्र अधिक लोचपूर्ण माँग को प्रदर्शित करता है। जब वस्तु का मूल्य OP_1 से घटकर OP_2 हो जाता है तो माँग बढ़कर OQ_2 हो जाती है। संक्षेप में मूल्य में होने वाले परिवर्तन Q_1Q_2 अधिक है। मार्शल ने इस प्रकार की माँग की लोच को इकाई से अधिक कहा है।

5. कम मूल्य सापेक्ष माँग- जब किसी वस्तु की माँग परिवर्तन उसके मूल्य में होने वाले परिवर्तन से कम अनुपात में होता है तो उस वस्तु की माँग कम मूल्य सापेक्ष कहलाती है। माना किसी वस्तु के मूल्य में 25% वृद्धि हो जाने से उसकी माँग में केवल 15% कमी होती है अथवा उसके मूल्य में 25% कमी हो जाने से उसकी माँग में केवल 15% वृद्धि होती है तो हम कहेंगे कि वस्तु की माँग मूल्य निरपेक्ष है। सामान्यतया अनिवार्य वस्तुओं की माँग इस श्रेणी में आती है। इसे निम्न तालिका में प्रदर्शित किया गया है-

तालिका : कम मूल्य सापेक्ष माँग

मूल्य (₹ प्रति किग्रा)	माँगी गयी मात्रा (किग्रा)
20	200
16	180
12	160

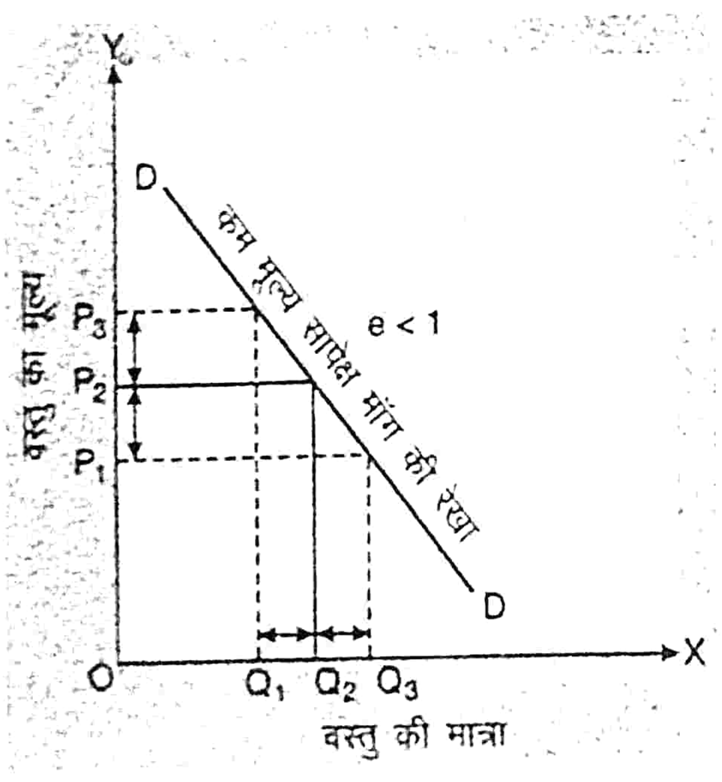

चित्र के अनुसार, जब वस्तु का मूल्य OP_3 है तब वस्तु की माँग OQ_1 है। जब मूल्य OP_3 से गिरकर OP_1 हो जाता है तो वस्तु की माँग OQ_1 से बढ़कर OQ_3 हो जाती है। चित्र में मूल्य की कमी को P_3P_1 से दिखाया गया है और माँग वृद्धि को Q_1Q_3 से। मूल्य की कमी और माँग की वृद्धि की आपस में तुलना करे तो स्पष्ट है कि मूल्य की कमी P_3P_1 अधिक है माँग की वृद्धि Q_1Q_3 से। मार्शल ने इस प्रकार की माँग को लोच को इकाई से कम ($e < 1$) कहा है।

प्रश्न 12. उपयोगिता की विशेषताएँ लिखिये।

उत्तर– उपयोगिता के लक्षण या विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. उपयोगिता हानिकारक एवं लाभदायक दोनों प्रकार के पदार्थों में होती है– जिस वस्तु के उपभोग से मनुष्य को संतुष्टि होती है, चाहे वह लाभदायक हो या हानिकारक वह उपयोगिता कहलाती है, जैसे- शराब, सिगरेट, चाय, दूध आदि।

2. उपयोगिता सापेक्षिक होती है– किसी वस्तु की उपयोगिता समय, स्थान, व्यक्ति और परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग होती है।

3. उपयोगिता व्यक्तिगत होती है– व्यक्ति की इच्छा, रुचि, आदत, फैशन, वातावरण आदि पर उपयोगिता निर्भर करती है।

4. उपयोगिता अदृश्य होती है– किसी वस्तु की उपयोगिता को हम अनुभव तो करते हैं, किन्तु वह दिखाई नहीं देती।

5. उपयोगिता अनुमानित होती है– किसी वस्तु के उपभोग से हमें कितनी उपयोगिता मिलेगी, इसका हम केवल अनुमान ही लगा सकते हैं।

6. उपयोगिता धनात्मक और ऋणात्मक हो सकती है– यह वस्तु की मात्रा पर निर्भर करती है। अधिकतम सन्तुष्टि के बिन्दु पर तो धनात्मक और उनके बाद ऋणात्मक उपयोगिता मिलती है।

7. उपयोगिता तीव्रता पर आधारित होती है– किसी वस्तु को प्राप्त करने की व्यक्ति की जितनी तीव्र इच्छा होगी, उससे उतनी अधिक उपयोगिता मिलती है।

8. उपयोगिता (Utility) और लाभदायकता (Usefulness) दोनों अलग-अलग हैं– कोई वस्तु लाभदायक नहीं हो फिर भी किसी व्यक्ति विशेष के लिये उसमें उपयोगिता हो। उदाहरण के लिये स्वास्थ्य के लिये शराब नुकसानदायक होती है, लेकिन एक शराबी के लिये उसमें अत्यधिक उपयोगिता होती है।

प्रश्न 13. सीमांत उपयोगिता, कुल उपयोगिता तथा औसत उपयोगिता में सम्बंध बताइये।

उत्तर- सीमान्त उपयोगिता तथा कुल उपयोगिता का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध को निम्नांकित तालिका द्वारा समझा जा सकता है-

सेब की इकाइयाँ	सीमान्त उपयोगिता	कुल उपयोगिता	
1	10	10	
2	8	10 + 8 = 18	
3	6	10 + 8 + 6 = 24	बढ़ती हुई उपयोगिता
4	4	10 + 8 + 6 + 4 = 28	
5	2	10 + 8 + 6 + 4 + 2 = 30	
6	0	10 + 8 + 6 + 4 + 2 + 0 = 30	समान उपयोगिता
7	-2	10 + 8 + 6 + 4 + 2 + 0-2 = 28	
8	- 4	10 + 8 + 6 + 4 + 2 + 0-2-4 = 24	घटती हुई उपयोगिता

उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से सीमान्त उपयोगिता एवं कुल उपयोगिता के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातों का पता चलता है-

(1) सन्तुष्टि की सीमा के पहले प्राप्त होने वाली उपयोगिता धनात्मक होती है, परन्तु वस्तु की उत्तरोत्तर इकाइयों से प्राप्त होने वाली उपयोगिता क्रमशः कम होती जाती है।

(2) उपभोग से प्राप्त होने वाली सीमान्त उपयोगिता तो घटती जाती है, पर कुल उपयोगिता में वृद्धि होती जाती है।

(3) पूर्ण सन्तुष्टि के बिन्दु पर सीमान्त उपयोगिता शून्य हो जाती है, परन्तु कुल उपयोगिता पहली वाली स्थिति (स्थिर) में रहती है। इसके उपरान्त कुल उपयोगिता का बढ़ना बन्द हो जाता है। इसलिए कहा जाता है कि जब सीमान्त उपयोगिता शून्य होती है तब कुल उपयोगिता अधिकतम होती है। □

इकाई–3 उत्पादन तथा लागत

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. उत्पादन के घटक होते हैं–

(a) दो (b) तीन
(c) चार (d) पाँच

2. उत्पाद के प्रकार होते हैं–

(a) कुल उत्पाद (b) औसत उत्पाद
(c) सीमान्त उत्पाद (d) सभी

3. प्रतिफल के नियम हैं–

(a) एक (b) दो
(c) तीन (d) चार

4. पैमाने के प्रतिफल की दशा में उत्पादन में परिवर्तन तब होता है जब–

(a) सभी साधनों में परिवर्तन आनुपातिक हो
(b) एक साधन में परिवर्तन आनुपातिक हो
(c) दो साधन में परिवर्तन आनुपातिक हो
(d) चार साधन में परिवर्तन आनुपातिक हो

5. स्थिर लागत को कहते हैं–

(a) परिवर्तनशील लागत (b) प्रमुख लागत
(c) पूरक लागत (d) अल्पकालीन लागत

6. स्थिर लागत का उदाहरण नहीं है–

(a) पूँजी का ब्याज (b) भवनन का किराया
(c) यंत्रों पर मूल्य ह्रास (d) माल का क्रय

7. परिवर्तनशील लागत का उदाहरण नहीं है–

(a) माल का क्रय (b) श्रम
(c) प्रत्यक्ष व्यय (d) पूँजी पर ब्याज

8. कुल स्थिर लागत में उत्पादन की मात्रा से भाग देने पर प्राप्त होती है–

(a) परिवर्तनशील लागत (b) औसत स्थिर लागत
(c) औसत परिवर्तनशील लागत
(d) कुल औसत लागत

9. जब सीमान्त उत्पाद बढ़ता है तो–

(a) कुल उत्पाद बढ़ती दर से बढ़ता है
(b) कुल उत्पाद अपने अधिकतम बिन्दु पर होता है
(c) कुल उत्पाद दर से बढ़ता है
(d) इनमें से कोई नहीं

10. जब सीमान्त उत्पाद, औसत उत्पाद से अधिक होता है तो–

(a) औसत उत्पाद घटता है पर धनात्मक रहता है
(b) औसत उत्पाद बढ़ता है
(c) औसत उत्पाद समान होता है और अधिकतम होता है
(d) औसत उत्पाद सीमित उत्पाद के बराबर होता है

11. एक फर्म अपने स्थिर साधनों को किस अवधि में नहीं बदल सकती –
(a) कभी भी (b) दीर्घकाल में
(c) अल्पकाल में (d) इनमें से कोई नहीं

12. निम्न में से कौन–सी मद परिवर्ती लागत का उदाहरण है–
(a) कच्चे माल की लागत (b) इमारत का किराया
(c) बीमे की किश्त (d) नगर पालिका कर

13. औसत स्थिर लागत ....
(a) उत्पादन के हर स्तर पर उतनी ही रहती है
(b) उत्पादन बढ़ाने पर बढ़ती है
(c) उत्पादन बढ़ाने पर घटती है
(d) प्रारम्भ में बढ़ती है फिर घटती है

14. जब कीमत कम करके अधिक बेचा जा सकता है , तब–
(a) AC = AR (b) AR = MR
(c) MC = MR (d) AR = MR

15. कुल उत्पाद कैसे निकाला जा सकता है–
(a) ΣAP (b) ΣTP
(c) ΣMP (d) इनमें से कोई नहीं

16. उत्पादन फलन में उत्पादन किसका फलन है–
(a) उत्पादन का (b) कीमत का
(c) कुल व्यय का (d) उपरोक्त सभी

17. जब सीमान्त उत्पाद शून्य हो तो कुल उत्पाद की स्थिति होगी–
(a) शून्य (b) धनात्मक
(c) ऋणात्मक (d) अधिकतम

18. उत्पादन फलन को व्यक्त करता है–
(a) $Q_x = P_x$ (b) $Q_x = D_x$
(c) $Q_x = f(A, B, C, D)$ (d) इनमें से कोई नहीं

19. क्या सीमांत उत्पान शून्य या ऋणात्मक हो सकता है–
(a) हाँ (b) नहीं
(c) शायद (d) इनमें से कोई नहीं

20. पैमाने के बढ़ते प्रतिफल के लागू होने के क्या कारण है ?
(a) आंतरिक बचतें (b) बाह्य बचतें
(c) आंतरिक एवं बाह्य दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

21. के बचतें कौन सी हैं जो फर्म को अपने कार्यों से प्राप्त होती हैं–
(a) आन्तरिक बचतें (b) बाह्य बचतें
(c) (a) और (b) दोनों (d) (d) उपरोक्त सभी

22. उत्पादन के साधन है–
(a) भूमि (b) पूंजी
(c) श्रम (d) उपरोक्त सभी

23. श्रम उदाहरण है–
(a) स्थिर साधन का (b) परिवर्तनशील साधन का
(c) (a) और (b) दोनों (d) उपरोक्त सभी

24. उत्पादन प्रक्रिया है–
(a) उपयोग की (b) आय पैदा करने की
(c) मूल्य वर्धन की (d) मूल्य में कमी करने की

25. जब कुल उत्पादन में बढ़ती हुई दर से वृद्धि होती है, तब सीमांत उत्पादन–
(a) बढ़ता है (b) स्थिर रहता है
(c) शून्य हो जाता है (d) अधिकतम होता है

26. भौतिक आदाओं और भौतिक प्रदा के संबंध को कहते हैं–
(a) लागत फलन (b) आगम फलन
(c) उत्पादन फलन (d) तकनीकी फलन

27. अल्पकाल में उत्पादन फलन में नियम लागू होता है–
(a) परिवर्तनशील अनुपातों का नियम
(b) पैमाने के प्रतिफल
(c) (a) और (b) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

28. उत्पादन की प्रथम अवस्था में–
(a) कुल उत्पादन में बढ़ती हुई दर से वृद्धि होती है
(b) सीमांत उत्पादन बढ़ता है
(c) सीमान्त उत्पादन घटता है
(d) (a) और (b) दोनों

29. कुल उत्पादन से आशय है–
(a) एक निस्चित समय में उत्पादित वस्तुओं का कुल व्यय
(b) एक निश्चित समय में उत्पादित वस्तुओं का कुल मात्रा
(c) एक निश्चित समय में बाजार में बिक्री के लिए उपलब्ध वस्तुओं की कुल मात्रा
(d) एक निश्चित समय में बाजार में बिक्री के लिए उपलब्ध वस्तुओं की कुल मूल्य

30. जब उत्पत्ति के साधनों में की गयी वृद्धि की तुलना में उत्पादन की मात्रा में आनुपातिक वृद्धि होती है, तो इसे कहा जाता है–
(a) पैमाने का बढ़ता प्रतिफल
(b) पैमाने का स्थिर प्रतिफल
(c) पैमाने का घटता प्रतिफल
(d) इनमें से कोई नहीं

31. निम्न में से कौन–सा स्थिर लागत का उदाहरण नहीं है–
(a) भूमि और भवन पर व्यय
(b) प्लांट एवं मशीनरी पर व्यय
(c) अस्थायी (आकस्मिक) श्रमिकों की मजदूरी एवं वेतन
(d) लायसेंस फीस

साधनों के प्रयोग की लागत परिवर्तनशील लागत कहलाती है। यह लागत उत्पादन की मात्रा से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सम्बन्ध रखती है। उत्पादन मात्रा में परिवर्तन आने पर प्रति इकाई परिवर्तनीय लागत समान रहती है, परन्तु परिवर्तनीय लागत की कुल राशि उत्पादन इकाई मात्रा में परिवर्तन के अनुपात में परिवर्तित होती है। प्रत्यक्ष सामग्री, प्रत्यक्ष श्रम, ईंधन, बिजली व शक्ति आदि परिवर्तनशील लागत के उदाहरण हैं।

प्रश्न 10. स्थिर लागत से क्या आशय है?

उत्तर– स्थिर लागत– वस्तु के उत्पादन में स्थिर साधनों के प्रयोग के लिए किए जाने वाले व्ययों के योग को स्थिर या अपरिवर्तनीय लागत कहते हैं। यह स्थिर लागत सदैव समान रहती है अर्थात् उत्पादन की इकाइयों के बढ़ने या घटने से इसमें कोई कमी या वृद्धि नहीं होती है। वास्तव में इन लागतों का सम्बंध उत्पादन की मात्रा से न होकर संयंत्र के आकार से होता है।

प्रश्न 11. अवसर लागत से क्या तात्पर्य है?

उत्तर– अवसर लागत – इसका आशय अतीत या खोए हुए अवसर की लागत से होता है। सरल शब्दों में, किसी वस्तु या सेवा की अवसर लागत उस वस्तु या सेवा के किसी दूसरे वैकल्पिक प्रयोगों से अर्जित किए जा सकने वाला मापनीय आगम होता है।

प्रश्न 12. कुल लागत किसे कहते हैं?

उत्तर– कुल लागत– किसी वस्तु के उत्पादन में होने वाले विभिन्न व्ययों के योग को कुल लागत कहते हैं। दूसरे शब्दों में किसी वस्तु की एक निश्चित मात्रा के अनुपात में जो विभिन्न खर्चे होते हैं, उसे कुल लागत कहते हैं। उत्पादन की मात्रा में वृद्धि के साथ-साथ कुल लागत में भी वृद्धि होती चली जाती है।

प्रश्न 13. सीमान्त लागत व औसत लागत में अन्तर कीजिए।

उत्तर– (1) औसत लागत को ज्ञात करने के लिए कुल लागत को उत्पादित इकाइयों की संख्या से भाग दिया जाता है, जबकि सीमान्त लागत से आशय उत्पादन की अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने के कारण कुल लागत में होने वाली वृद्धि से है।

(2) उत्पादन में वृद्धि के परिणामस्वरूप जब औसत लागत बढ़ती है तो सीमान्त लागत औसत लागत से अधिक होती है। दूसरे शब्दों में, यदि औसत लागत बढ़ रही है तो सीमान्त लागत और भी तेजी से बढ़ेगी।

विश्लेषणात्मक प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. कुल उत्पादन, सीमांत उत्पाद तथा औसत उत्पाद में संबंध स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- उत्पाद की विभिन्न अवधारणाओं में सम्बन्ध- कुल उत्पाद (TP), औसत उत्पाद (AP) तथा सीमान्त उत्पाद (MP) की अवधारणाओं का अध्ययन करने के पश्चात् निम्न तथ्य सामने आते हैं-

(1) कुल उत्पाद तथा औसत कभी भी शून्य नहीं हो सकते और इनके ऋणात्मक होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

(2) जब कुल उत्पाद अधिकतम होता है तब सीमान्त उत्पाद शून्य होता है।

(3) जब कुल उत्पाद गिरने लगता है तो सीमान्त उत्पाद ऋणात्मक हो जाता है।

(4) उत्पाद की प्रारम्भिक अवस्था में कुल उत्पाद में वृद्धि होती है वह बढ़ती हुई दर पर होती है। उत्पादन की बाद की अवस्था में कुल उत्पाद में जो वृद्धि होती है, वह घटती हुई दर पर होती है। सीमान्त उत्पाद के शून्य होने पर कुल उत्पाद में होने वाली वृद्धि रुक जाती है और कम होना आरम्भ हो जाता है।

प्रश्न 2. उत्पादन फलन की मान्यताएँ लिखिए।

उत्तर- उत्पादन फलन की मान्यताएँ- उत्पादन फलन निम्नलिखित मूल मान्यताओं पर आधारित है-

(1) उत्पादन फलन एक निश्चित समय के लिए होता है।

(2) उत्पादन फलन उत्पादन के साधनों तथा उत्पादन के बीच भौतिक अथवा भावात्मक संबन्ध की व्याख्या करता है।

(3) उत्पादन फलन एक निश्चित तकनीकी ज्ञान तथा फलन के लिए होता है और यह मान लिया जाता है कि तकनीकी ज्ञान या कला में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

(4) उत्पादन फलन एक निश्चित लागत व्यय की स्थिति को स्पष्ट करता है। यानि लागत में कोई परिवर्तन नहीं आना चाहिये।

प्रश्न 3. अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन लागतों को समझाइए।

उत्तर- अल्पकाल वह समयावधि है जिसमें उत्पादन के कुछ साधन स्थिर रहते है एवं कुछ परिवर्तनशील होते है। यही कारण है कि केवल परिवर्तनशील साधनों को बढ़ाकर उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। दीर्घकाल वह समयावधि है जिसमें उत्पादन के सभी साधन चाहे वे स्थिर हों या परिवर्तनशील सभी परिवर्तनशील होते है। इसलिए उत्पादन के सभी साधनों की मात्राओं को बढ़ाया जा सकता है। दीर्घकाल में यहाँ तक कि उत्पादन के पैमाने को भी परिवर्तित किया जा सकता है। अल्पकाल में लागतें स्थिर एवं परिवर्तन शील होती हैं परन्तु दीर्घकाल में केवल परिवर्तनशील होती हैं।

प्रश्न 4. स्थिर तथा परिवर्तनशील लागतों में अन्तर लिखिए।

उत्तर- स्थिर लागत एवं परिवर्तनशील लागत में अन्तर-

क्र.	स्थिर लागत	परिवर्तनशील लागत
(1)	स्थिर लागतों का सम्बन्ध उत्पादन के स्थिर साधनों से होता है।	परिवर्तनशील लागतों का सम्बन्ध उत्पादन के परिवर्तनशील साधनों से होता है।
(2)	कुल स्थिर लागतों पर उत्पादन की मात्रा का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।	परिवर्तनशील लागत उत्पादन की मात्रा से प्रभावित होती है।
(3)	स्थिर लागतें उत्पादन बन्द कर देने पर भी शून्य नहीं होती है।	परिवर्तनशील लागत उत्पादन बन्द कर कर देने पर शून्य हो जाती है।

प्रश्न 5. ह्रासमान सीमांत उत्पादन नियम या परिवर्ती अनुपातों का नियम को चित्र द्वारा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- उत्पत्ति ह्रास नियम या परिवर्तन अनुपातों का नियम उत्पत्ति ह्रास नियम आर्थिक जगत का एक महत्वपूर्ण नियम माना जाता है। एडम स्मिथ, डेविड रिकार्डो जैसे परम्परावादी अर्थशास्त्रियों ने उत्पत्ति ह्रास नियम को कृषि से सम्बन्धित किया। प्रो. मार्शल ने भी उत्पत्ति ह्रास नियम की क्रियाशीलता को कृषि से सम्बन्धित किया है।

प्रो. मार्शल के शब्दों में, "यदि कृषि कला में कोई सुधार न हो, तो भूमि पर उपयोग की जाने वाली पूँजी एवं श्रम की मात्रा की वृद्धि करने उत्पादन में सामान्यतया अनुपात से कम वृद्धि होती है।"

प्रो. मार्शल की उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट है कि उत्पत्ति नियम की क्रियाशीलता का सम्बन्ध केवल कृषि उद्योग से लगाया है।

आधुनिक दृष्टिकोण- आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार, यह नियम कृषि में ही क्रियाशील नहीं होता वरन् आर्थिक क्रिया के अन्य क्षेत्रों जैसे निर्माण उद्योग में भी लागू होता है। आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने इस नियम को परिवर्तनशील अनुपातों के नियम से सम्बन्धित किया है। इस नियम की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित है-

उत्पत्ति ह्रास नियम की परिभाषाएँ

1. **बेनहम** (Benham) के अनुसार, "उत्पादन के विभिन्न साधनों के संयोग में एक साधन का अनुपात ज्यों-ज्यों बढ़ाया जाता है, एक सीमा के पश्चात् त्यों-त्यों उस साधन का सीमान्त औसत उत्पादन घटता है।"

2. **श्रीमती रॉबिन्सन** (Mrs. Robinson) के अनुसार, "यदि उत्पादन के किसी एक साधन को स्थिर रखा जाये और दूसरे साधनों में उत्तरोत्तर वृद्धि की जाये, तो एक निश्चित बिन्दु के बाद उत्पादन की मात्रा में घटती हुई दर से वृद्धि होगी।"

इस नियम को एक तालिका द्वारा सीमान्त उत्पादन, औसत उत्पादन और कुल उत्पादन के रूप में स्पष्ट किया जा सकता है।

नीचे दी गयी तालिका से स्पष्ट है कि जब उत्पादन के अन्य साधनों को स्थिर रखकर एक साधन (श्रम) की मात्रा को क्रमानुसार बढ़ाया जाता है, तो परिवर्तनशील अनुपातों के नियम की तीन अवस्थाएँ प्राप्त होती है-

सारणी

परिवर्तनशील साधन श्रम की इकाइयाँ	कुल उत्पादन (TP)	औसत उत्पादन (AP)	सीमान्त उत्पादन (MP)	
1	10	10	10	प्रथम अवस्था
2	28	14	18	
3	48	16	20	
4	64	16	16	द्वितीय अवस्था
5	75	15	11	
6	84	14	9	
7	84	12	0	तृतीय अवस्था
8	80	10	-4	

प्रथम अवस्था- प्रारम्भिक अवस्था में स्थिर साधनों को श्रेष्ठ ढंग से उपयोग होने के कारण कुल उत्पादन बढ़ती हुई दर से बढ़ता है, इसी कारण सीमान्त उत्पादन (MP) तथा औसत उत्पादन (AP) भी बढ़ते हैं। तालिका में यह स्थिति परिवर्तनशील साधन की तीसरी इकाई तक है, क्योंकि इस अवस्था में औसत उत्पादन निरन्तर बढ़ने की प्रवृत्ति रखता है

से बढ़ता है, इसी कारण सीमान्त उत्पादन तथा औसत उत्पादन दोनों ही घटते हैं। तालिका में यह अवस्था श्रम की चौथी इकाई से छठी इकाई तक है। इस अवस्था को घटते प्रतिफल का नियम भी कहा जाता है।

तृतीय अवस्था- इस अवस्था में कुल उत्पादन घटता है, क्योंकि सीमान्त उत्पादन (MP) ऋणात्मक हो जाता है।

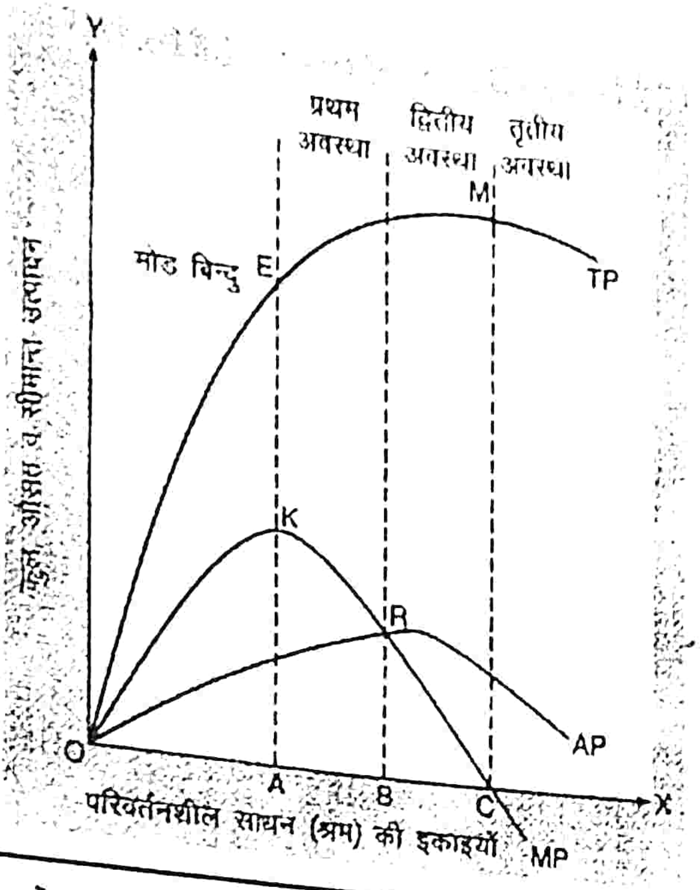

रेखाचित्र द्वारा स्पष्टीकरण- इस नियम को रेखाचित्र (3)6 द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है। रेखाचित्र में प्रथम अवस्था श्रम की OB मात्रा तक, दूसरी अवस्था B व C के मध्य तथा तृतीय अवस्था C के बाद की है। प्रथम अवस्था में कुल उत्पादन (TP) वक्र E बिन्दु तक बढ़ती हुई दर से बढ़ता है, इसलिए वह OX-अक्ष के प्रति उन्नतोदर होता है। दूसरी अवस्था में कुल उत्पादन (TP) घटती हुई दर से बढ़ते हुए M बिन्दु पर पहुँचकर अधिकतम हो जाता है तथा MP वक्र ठीक इस बिन्दु के नीचे शून्य हो जाता है। तीसरी अवस्था में कुल उत्पादन (TP) घटने लगता है तथा सीमान्त उत्पादन ऋणात्मक हो जाता है।

प्रश्न 6. पैमाने के प्रतिफल की सचित्र व्याख्या कीजिए।

उत्तर- पैमाने के प्रतिफल- पैमाने के प्रतिफल के अन्तर्गत हम इस बात का अध्ययन करते हैं कि जब किसी वस्तु के उत्पादन में उपयोग होने वाले सभी साधनों को बढ़ाया जाए, तो इसका उत्पादन पर क्या प्रभाव पड़ता है। दीर्घकाल में उत्पादन के सभी साधन परिवर्तनशील होते हैं। दीर्घकाल में कुल उत्पादन का अध्ययन किया जाता है। पैमाने के प्रतिफल नियम के उत्पादन के सभी साधनों को एक साथ ही अनुपात में परिवर्तित करते है जिससे उनके संयोजन के अनुपात में कोई अन्तर नहीं आता। इस नियम की तीन अवस्थाएँ हैं जो निम्नलिखित है- (1) पैमाने के अवस्थाओं को समझने के लिए सम-उत्पाद रेखाओं का ज्ञान होना चाहिए। उत्पादन फलन की तालिका में उत्पादन की विभिन्न इकाइयाँ उत्पादन साधनों के विभिन्न संयोगों के द्वारा निर्मित करना दर्शाया गया है-
विभिन्न संयोगों के द्वारा निर्मित करना दर्शाया गया है-

सारणी

श्रम की इकाइयाँ		पूँजी की इकाइयाँ	साधनों की मात्रा में प्रतिशत वृद्धि	कुल उत्पादन	कुल उत्पादन में प्रतिशत वृद्धि	पैमाने का प्रतिफल
2	+	1	-	8	-	-
4	+	2	100	20	150	वृद्धिमान
8	+	4	100	40	100	स्थिर
16	+	8	100	68	70	ह्रासमान

तालिका को देखने से स्पष्ट होता है कि श्रम व पूँजी की इकाइयों में वृद्धि करने पर प्रारम्भ में कुल उत्पादन साधनों की वृद्धि की दर से अधिक अनुपात बढ़ता है, फिर समान दर से और अन्त में कम दर से। दूसरे शब्दों में आरम्भ में वृद्धिमान प्रतिफल, उसके बाद स्थिर प्रतिफल और अन्त में ह्रासमान प्रतिफल लागू होता है।

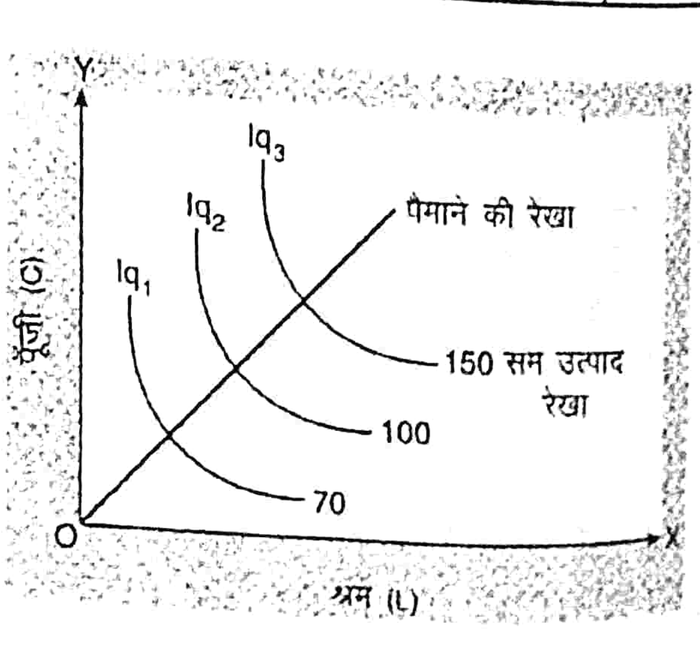

1. पैमाने के बढ़ते प्रतिफल- पैमाने के बढ़ते प्रतिफल का अर्थ है कि साधन में वृद्धि की तुलना में उत्पादन में अधिक अनुपात में वृद्धि होती है। उदाहरण के लिए, यदि सभी साधनों में 20 प्रतिशत वृद्धि कर दी जाये और इसके फलस्वरूप

उत्पादन 50 प्रतिशत बढ़ जाये तो यह पैमाने के बढ़ते हुए प्रतिफल की अवस्था कही जायेगी। इसे रेखाचित्र (3)10 में स्पष्ट किया गया है। X अक्ष पर श्रम की मात्रा (L) तथा Y अक्ष पर पूंजी की मात्रा (C) को दर्शाया गया है। Iq_1, Iq_2, Iq_3 तथा Iq_4 सम उत्पाद रेखाएँ हैं जो उत्पादन की समान इकाइयों को प्रदर्शित करती हैं। ये रेखाएँ उत्पादन में समान वृद्धि को दर्शाती हैं, किन्तु उत्पादन की मात्रा में इस समान वृद्धि को पाने के लिए पूंजी व श्रम की मात्रा में की जाने वाली वृद्धि लगातार घटती जा रही है। अर्थात् श्रम व पूंजी की मात्रा में की जाने वाली वृद्धि की अपेक्षा उत्पादन की मात्रा में होने वाली वृद्धि अधिक है। यही अवस्था पैमाने के बढ़ते हुए प्रतिफल की अवस्था कहलाती है।

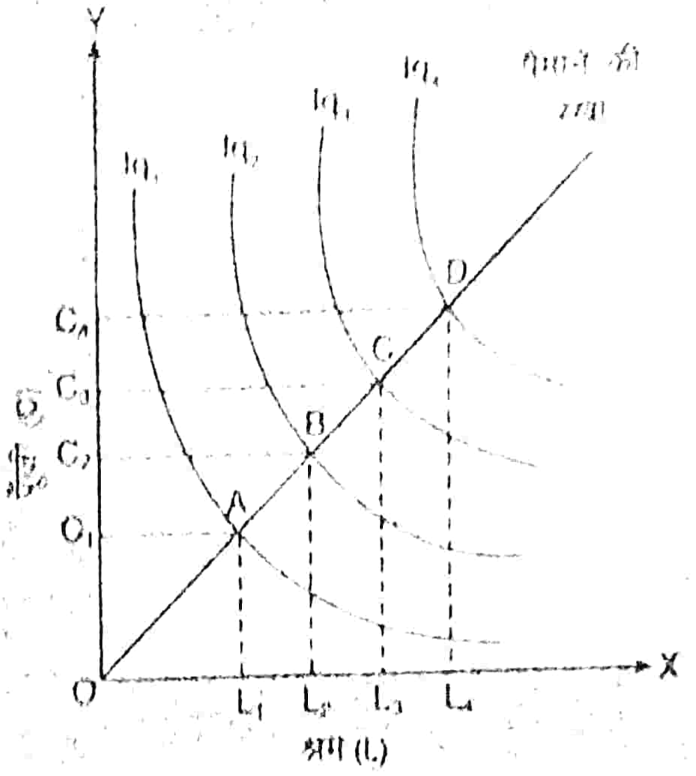

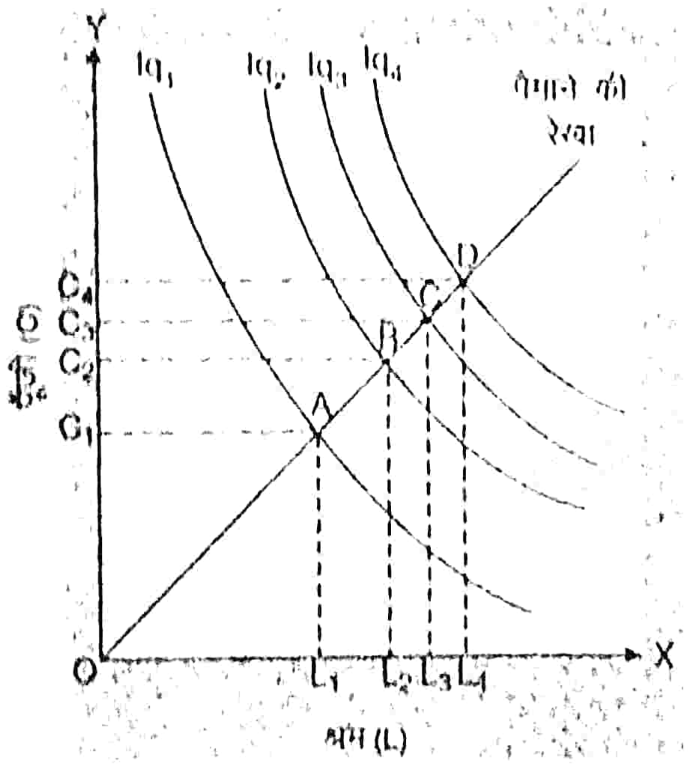

2. पैमाने के घटते प्रतिफल- जब साधनों में वृद्धि की तुलना में उत्पादन में कम अनुपात से वृद्धि होती है तो पैमाने के घटते प्रतिफल प्राप्त होते है। जब कोई फर्म साधनों की अधिक मात्रा प्रयोग करके अपने उत्पादन का विस्तार करती है तो अन्ततः पैमाने के घटते प्रतिफल प्राप्त होंगे। उदाहरण के लिए, यदि उत्पादन के सभी साधनों में 30 प्रतिशत की वृद्धि कर दी जाये, परन्तु इसके परिणामस्वरूप उत्पादन में केवल 20 प्रतिशत की ही वृद्धि हो पाये तो इसे पैमाने के घटते हुए प्रतिफल कहा जायेगा। इसे रेखाचित्र में स्पष्ट किया गया है। पैमाने के घटते हुए प्रतिफल की दशा को भी सम-उत्पाद वक्रों द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है। Iq_1, Iq_2, Iq_3 तथा Iq_4 सम-उत्पाद रेखाएँ है। जब विभिन्न सम-उत्पाद वक्र मूल-बिन्दु से खींची गई सीधी रेखा पर क्रमशः बढ़ती दूरी पर स्थित होते है तो ये पैमाने के घटते प्रतिफल को प्रदर्शित करते हैं।

3. पैमाने के समान प्रतिफल- यह अवस्था बढ़ते प्रतिफल की अवस्था के समाप्त होने के बाद तथा घटते प्रतिफल की अवस्था के आरम्भ होने से पहले की अवस्था होती है। वास्तविक अनुभव से पता चलता है कि पैमाने के स्थिर प्रतिफल की अवस्था काफी लम्बी होती है।

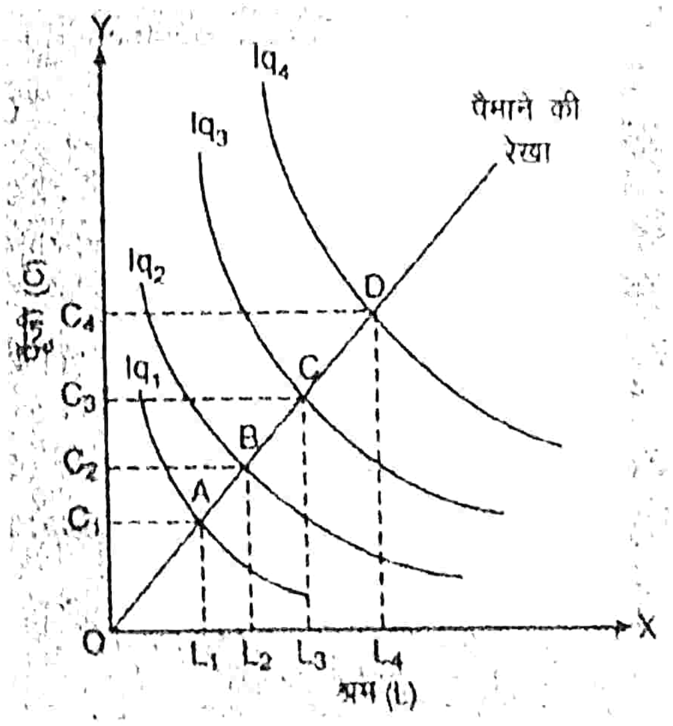

वैज्ञानिक अर्थ में पैमाने के स्थिर प्रतिफल से आशय यह है कि उत्पादन के साधनों के परस्पर अनुपात को स्थिर रखते हुए जब उत्पादन के साधनों की मात्रा को बढ़ाकर उत्पादन के पैमाने का विस्तार किया जाता है तो उत्पादन साधनों को समानुपाती वृद्धि होती है। रेखाचित्र में X-अक्ष पर श्रम की मात्रा L तथा Y-अक्ष पर पूंजी की मात्रा C को प्रदर्शित किया गया है। Iq_1, Iq_2, Iq_3 तथा Iq_4 सम-उत्पाद रेखाएं है जो

उत्पादन की एकसमान इकाइयों को प्रदर्शित करती है। ये रेखाएँ उत्पादन में समान वृद्धि को प्रदर्शित करती हैं। उत्पादन की मात्रा में इस समान वृद्धि को पाने के लिए पूँजी व श्रम की मात्रा में की जाने वाली वृद्धि भी समान है। यही अवस्था पैमाने के समान या स्थिर प्रतिफल कहलाती है।

प्रश्न 7. लागत वक्र U आकृति के क्यों होते हैं ? समझाइए।

उत्तर- लागत वक्रों की आकृति 'U' आकार की होने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण फर्म को प्राप्त होने वाली आंतरिक बचतें हैं। आंतरिक बचतों को निम्नांकित चार भागों में बाँटा जा सकता है-

1. तकनीकी बचतें- उत्पादन की तकनीक में सुधार पर बचतें प्राप्त होती है, उन्हें तकनीकी बचतें कहते हैं। आधुनिक मशीनों एवं बड़े आकार की मशीनों का प्रयोग करने के कारण उत्पादन अधिक मात्रा में होता है, तब प्रति इकाई लागत कम आती है।

2. श्रम संबंधी बचतें- श्रम संबंधी बचतें श्रम विभाजन एवं विशिष्टीकरण का परिणाम होती हैं। जब उत्पादन बड़े पैमाने पर किया जाता है तो श्रम विभाजन एवं विशिष्टीकरण भी उतना ही अधिक संभव होता है। परिणामस्वरूप श्रमिकों की कार्य कुशलता में वृद्धि होती है जिससे प्रति इकाई उत्पादन लागत कम हो जाती है।

3. विपणन की बचतें- कोई भी फर्म जब अपने उत्पादन की मात्रा को बढ़ाती है, तो विक्रय लागतें उस अनुपात में नहीं बढ़ती हैं, जिससे प्रति इकाई लागत में कमी आ जाती है।

4. प्रबंधकीय बचतें- उत्पादन की मात्रा को बढ़ाने पर प्रबंध पर होने वाले व्ययों में कमी आती है, जिसे प्रबंधकीय बचतें कहते हैं। एक कुशल प्रबंधक अधिक मात्रा में उत्पादन का प्रबंध उसी कुशलता के साथ कर सकता है, जितना कि थोड़े उत्पादन का, तो फर्म को प्रति इकाई उत्पादन लागत कम हो जाती है।

प्रश्न 8. उत्पादन फलन की अवधारणा को समझाइए।

उत्तर- उत्पादन फंक्शन या फलन का अर्थ (Meaning of Production Function)-उत्पादन फैक्शन उत्पत्ति के साधनों (Inputs or Factors of Production) तथा उनके प्रयोग से प्राप्त उत्पादन (Output) के बीच सम्बन्ध को बताता है। एक उत्पादन फंक्शन एक दिये हुए समय के लिए (for a specified period of time) उत्पादन की मात्रा तथा उत्पत्ति के साधनों में भौतिक सम्बन्ध को बताता है।

प्रो. वाटसन के अनुसार, "किसी फर्म की भौतिक पड़तों (Inputs) तथा उपज की भौतिक मात्रा के बीच के सम्बन्ध को उत्पादन फलन कहते है।"

प्रो. लेफ्टविच के अनुसार, "उत्पादन फलन शब्द उस भौतिक सम्बन्ध के लिए प्रयुक्त किया जाता है जो एक फर्म के साधनों की इकाइयों (पड़तों) और प्राप्त इकाई समायानुसार प्राप्त वस्तुओं और सेवाओं (उत्पादों) के बीच पाया जाता है।" उत्पादन फलन उत्पत्ति के साधनों तथा उन साधनों से प्राप्त उत्पादन के बीच सम्बन्ध की व्याख्या करता है। एक उत्पादन फलन दिये हुए समय के लिए उत्पादन की मात्रा तथा उत्पादन के साधनों में भौतिक या मात्रात्मक सम्बन्ध को बताता है। अन्य शब्दों में यह कहा जा सकता है कि "एक फर्म का उत्पादन फलन एक दिये हुए समय में साधनों के सभी सम्भव संयोगों तथा प्रत्येक संयोग से प्राप्त अधिकतम उत्पादन के बीच सम्बन्ध को बताता है जबकि तकनीकी ज्ञान की स्थिति दी हुई हो।" संक्षेप में, उत्पादन फलन उत्पादन सम्भावनाओं की जानकारी है। उत्पादन को गणितीय समीकरण के द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है-

$x = f(a,b,c.......n)$

उपर्युक्त समीकरण में x उत्पादन की मात्रा तथा a,b,c.......,n उत्पादन के साधनों की मात्रा एवं संयोगों को बताते हैं। समीकरण इस, बात की व्याख्या करता है कि उत्पादन के साधनों के विभिन्न संयोगों तक उत्पादन में क्या सम्बन्ध है। यहाँ यह बात महत्वपूर्ण है कि यह सम्बन्ध एक निश्चित समय तथा निश्चित तकनीकी ज्ञान की स्थिति में ही क्रियाशील होता है।

प्रश्न 9. साधन के प्रतिफल और पैमाने के प्रतिफल में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- साधन के प्रतिफल और पैमाने के प्रतिफल में निम्न अन्तर-

क्र.	अन्तर का आधार	साधन के प्रतिफल	पैमाने के प्रतिफल
1.	आशय	साधनों के अनुपात में परिवर्तन होने के परिणामस्वरूप उत्पादन की मात्रा में होने वाले परिवर्तन की प्रकृति को साधन के प्रतिफल कहते हैं।	जब सभी साधन समान अनुपात में बढ़ाये जाते हैं तो प्रतिफल में जो परिवर्तन होता है उसे पैमाने के प्रतिफल कहते हैं।
2	धारणा	यह एक अल्पकालीन धारणा है।	यह एक दीर्घकालीन धारणा है।
3.	अनुपात	इसमें साधनों के बीच अनुपात बदलता है।	इसमें साधनों के बीच अनुपात स्थिर रहता है।
4.	पैमाने में परिवर्तन	इसके अन्तर्गत उत्पादन का पैमाना नहीं बदलता है।	इसके अन्तर्गत उत्पादन का पैमाना बदलता है।

प्रश्न 10. सीमांत लागत तथा औसत लागत में पाये जाने वाले संबंध को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– सीमान्त लागत तथा औसत लागत में सम्बन्ध– सीमान्त लागत तथा औसत लागत में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है, इसे हम निम्न चित्र द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं–

(1) जब MC गिरती है तो उसके साथ AC भी गिरती है। चित्र में AC वक्र A से B तक गिर रहा है तथा इस समस्त क्षेत्र में MC, AC से कम या नीचे है। परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि जब तक MC गिरे तब तक AC भी गिरेगा। AC तब भी गिर सकता है जबकि MC उठ रहा हो। जैसा कि चित्र से स्पष्ट है कि M_1M_2 उत्पादन की मात्राओं के बीच AC तो गिर रहा है, परन्तु MC अपने निम्नतम बिन्दु पर पहुँचकर उठ रहा है, किन्तु MC उठने पर भी AC से कम या नीचे है।

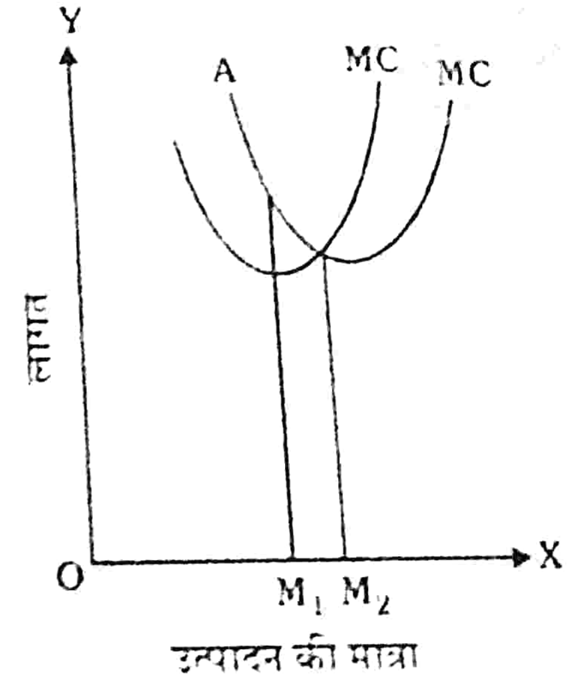

(2) AC के स्थिर होने की स्थिति में AC तथा MC बराबर होते हैं। परन्तु प्रायः ऐसी स्थिति में ऊपर की ओर उठता MC वक्र AC को उसके निम्नतम बिन्दु पर AC = MC। परन्तु ऐसा क्यों होता है ? इसकी व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है। जब AC गिरता है तब MC उससे (AC) नीचे रहता है तथा जब AC उठता है तब MC उससे ऊपर रहता है। अतः उस बिन्दु पर जबकि AC गिरना बन्द करता है, परन्तु बढ़ना आरम्भ नहीं करता है MC, AC को उसके निम्नतम बिन्दु पर काटता है जिससे वह AB के ऊपर रह सके जबकि AC बढ़ना प्रारम्भ करे। अतः जिस बिन्दु पर MC, AC को काटता है वहाँ AC तथा MC बराबर होंगे।

(3) जब MC, AC को उसके निम्नतम बिन्दु पर काटकर ऊपर उठने लगता है।

प्रश्न 11. ''कुल आगम'' ''औसत आगम'' एवं ''सीमांत आगम'' को एक तालिका द्वारा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– आगम के तीन प्रकार होते हैं– (अ) कुल आगम (Total Revenue) (ब) औसत आगम (Average Revenue) (स) सीमान्त आगम (Marginal Revenue)

इनकी व्याख्या करने के पूर्व इन्हें तालिका की सहायता से स्पष्ट करना आवश्यक है–

तालिका

वस्तु की बेची गई इकाइयाँ	कुल आगम (रु. में) TR	औसत आगम (रु. में) AR	सीमान्त आगम (रु. में) MR
1	40	40	40
2	72	36	32
3	96	32	24
4	112	28	16
5	120	24	8

(अ) कुल आगम (Total Revenue)

क्र.	अन्तर का आधार	साधन के प्रतिफल	पैमाने के प्रतिफल
1.	आशय	साधनों के अनुपात में परिवर्तन होने के परिणामस्वरूप उत्पादन की मात्रा में होने वाले परिवर्तन की प्रकृति को साधन के प्रतिफल कहते हैं।	जब सभी साधन समान अनुपात में बढ़ाये जाते हैं तो प्रतिफल में जो परिवर्तन होता है उसे पैमाने के प्रतिफल कहते हैं।
2.	धारणा	यह एक अल्पकालीन धारणा है।	यह एक दीर्घकालीन धारणा है।
3.	अनुपात	इसमें साधनों के बीच अनुपात बदलता है।	इसमें साधनों के बीच अनुपात स्थिर रहता है।
4.	पैमाने में परिवर्तन	इसके अन्तर्गत उत्पादन का पैमाना नहीं बदलता है।	इसके अन्तर्गत उत्पादन का पैमाना बदलता है।

प्रश्न 10. सीमांत लागत तथा औसत लागत में पाये जाने वाले संबंध को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– सीमान्त लागत तथा औसत लागत में सम्बन्ध– सीमान्त लागत तथा औसत लागत में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है, इसे हम निम्न चित्र द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं–

(1) जब MC गिरती है तो उसके साथ AC भी गिरती है। चित्र में AC वक्र A से B तक गिर रहा है तथा इस समस्त क्षेत्र में MC, AC से कम या नीचे है। परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि जब तक MC गिरे तब तक AC भी गिरेगा। AC तब भी गिर सकता है जबकि MC उठ रहा हो। जैसा कि चित्र से स्पष्ट है कि M_1M_2 उत्पादन की मात्राओं के बीच AC तो गिर रहा है, परन्तु MC अपने निम्नतम बिन्दु पर पहुँचकर उठ रहा है, किन्तु MC उठने पर भी AC से कम या नीचे है।

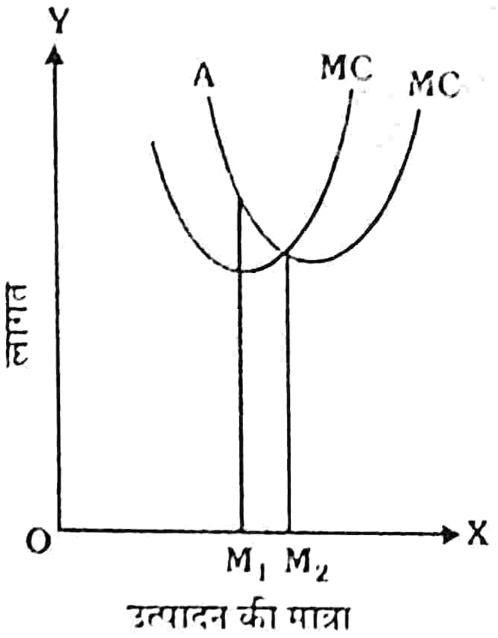

(2) AC के स्थिर होने की स्थिति में AC तथा MC बराबर होते हैं। परन्तु प्रायः ऐसी स्थिति में ऊपर की ओर उठता MC वक्र AC को उसके निम्नतम बिन्दु पर AC = MC। परन्तु ऐसा क्यों होता है ? इसकी व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है। जब AC गिरता है तब MC उससे (AC) नीचे रहता है तथा जब AC उठता है तब MC उससे ऊपर रहता है। अतः उस बिन्दु पर जबकि AC गिरना बन्द करता है, परन्तु बढ़ना आरम्भ नहीं करता है MC, AC को उसके निम्नतम बिन्दु पर काटता है जिससे वह AB के ऊपर रह सके जबकि AC बढ़ना प्रारम्भ करे। अतः जिस बिन्दु पर MC, AC को काटता है वहाँ AC तथा MC बराबर होंगे।

(3) जब MC, AC को उसके निम्नतम बिन्दु पर काटकर ऊपर उठने लगता है।

प्रश्न 11. "कुल आगम" "औसत आगम" एवं "सीमांत आगम" को एक तालिका द्वारा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– आगम के तीन प्रकार होते हैं– (अ) कुल आगम (Total Revenue) (ब) औसत आगम (Average Revenue) (स) सीमान्त आगम (Marginal Revenue).

इनकी व्याख्या करने के पूर्व इन्हें तालिका की सहायता से स्पष्ट करना आवश्यक है–

तालिका

वस्तु की बेची गई इकाइयाँ	कुल आगम (रु. में) TR	औसत आगम (रु. में) AR	सीमान्त आगम (रु. में) MR
1	40	40	40
2	72	36	32
3	96	32	24
4	112	28	16
5	120	24	8

(अ) कुल आगम (Total Revenue)

एक फर्म को अपने उत्पादन की एक निश्चित मात्रा को बेचने से जो कुल धन राशि प्राप्त होती है उसे कुल आगम (Total Revenue or TR) कहते हैं। उपर्युक्त तालिका में चार इकाइयाँ बेचने पर कुल 112 रु. प्राप्त होते हैं तो कुल आगम 112 रु. होगी। पाँच इकाइयाँ बेचने पर कुल 120 रु. प्राप्त होते हैं तो कुल आगम 120 रु. होगी। बेची गयी मात्रा को प्रति इकाई कीमत में गुणा करके भी कुल आगम निकाला जा सकता है। उदाहरण के लिये एक फर्म 4 इकाइयों को 28 रु. प्रति इकाई की दर से बेचती है तो कुल आगम $28 \times 4 = 112$ रु. होगा। सूत्र की भाषा में इसे निम्न प्रकार लिखा जा सकता है-

$TR = P \times Q$ या कुल आगम = प्रति इकाई कीमत × बेची गई इकाइयाँ

$TR = 28 \times 4 = 112$

यहाँ,

TR = कुल आगम

P = प्रति इकाई कीमत

Q = बेची गई इकाइयों की मात्रा।

ध्यान रहे बेची गई मात्रा में वृद्धि होने पर कुल आगम में भी वृद्धि होती जाती है अर्थात् कुल आगम वक्र का ढाल सदैव धनात्मक होगा। कुल आगम वक्र सदैव दायीं ओर ऊपर उठी हुई रहेगी। यह बात निम्न रेखाचित्र से स्पष्ट हो जाती है -

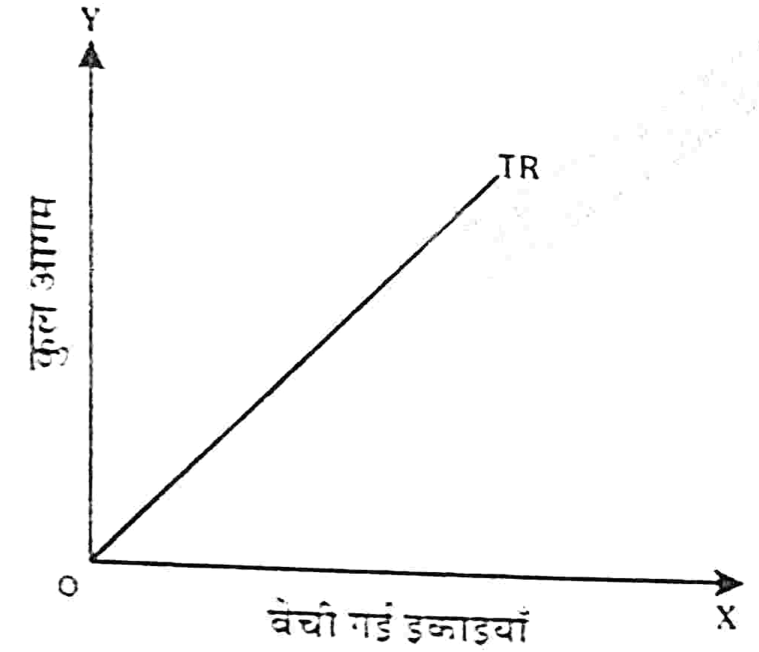

(ब) औसत आगम (Average Revenue)

यदि वस्तु की बिक्री से प्राप्त कुल रकम में बेची गई इकाइयों (मात्रा) का भाग दिया जाय तो भाग फल औसत आगम कहलाता है। उपर्युक्त तालिका में पाँच इकाइयाँ बेचने से 120 रु. प्राप्त होते हैं तो औसत आगम होगी $\frac{120}{5} = 24$ रुपये।

सूत्र रूप में इसे निम्न प्रकार लिख सकते हैं-

$$AR = \frac{TR}{Q} \text{ या औसत आगम } = \frac{\text{कुल आगम}}{\text{बेची गई वस्तु की मात्रा}}$$

यहाँ, AR = औसत आगम, TR = कुल आगम, Q = बेची गई मात्रा।

ध्यान रहे, औसत आगम को ही कीमत कहते हैं।

औसत आगम की वक्र ही माँग वक्र होती है। माँग वक्र वस्तु की माँगी जाने वाली मात्रा तथा कीमत के सम्बन्ध को दर्शाती है। वस्तु की एक इकाई के लिये दी जाने वाली कीमत चूँकि फर्म के लिये औसत आगम है अतः फर्म की औसत आगम बतलाती है कि वस्तु की विभिन्न इकाइयों को बेचने से कितनी औसत आगम प्राप्त होगी। इसलिये AR वक्र को माँग वक्र भी कहा जाता है। **पूर्ण प्रतियोगिता की दशा में फर्म की औसत** आगम वक्र एक पड़ी हुई रेखा के रूप में होती है जैसा कि रेखाचित्र से स्पष्ट है।

अपूर्ण प्रतियोगिता तथा एकाधिकार की दशा में औसत आगम वक्र नीचे की ओर गिरती हुई होती है। इसका आशय यह है कि अपूर्ण प्रतियोगिता वाली फर्म अपनी वस्तु की अधिक इकाइयाँ तभी बेच सकती है जब वह अपनी इकाइयों की कीमत कम करें। अतः कीमत में कमी करने पर औसत आगम वक्र नीचे की ओर गिरने लगती है। यह बात निम्न रेखाचित्र से स्पष्ट हो जाती है-

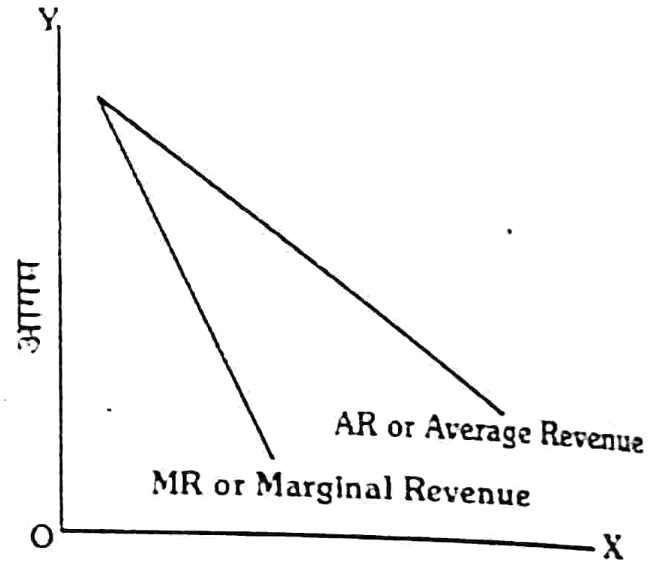

(स) सीमान्त आगम (Marginal Revenue)

उत्पादन की एक अतिरिक्त इकाई को बेचने से कुल आगम में जो वृद्धि होती है उसे सीमान्त आगम (MR) कहते हैं। इस प्रकार सीमान्त आगम कुल आगम में परिवर्तन की दर को दर्शाती है। यदि वस्तु की n इकाइयाँ बेची जाती हैं तो nवीं इकाई की सीमान्त आगम होगी-

$MR = TR_n - TR_{n-1}$

यहाँ, MR = सीमान्त आगम

TR_n = n इकाइयों की बिक्री से प्राप्त कुल आगम

TR_{n-1} = n − 1 इकाइयों की बिक्री से प्राप्त कुल आगम।

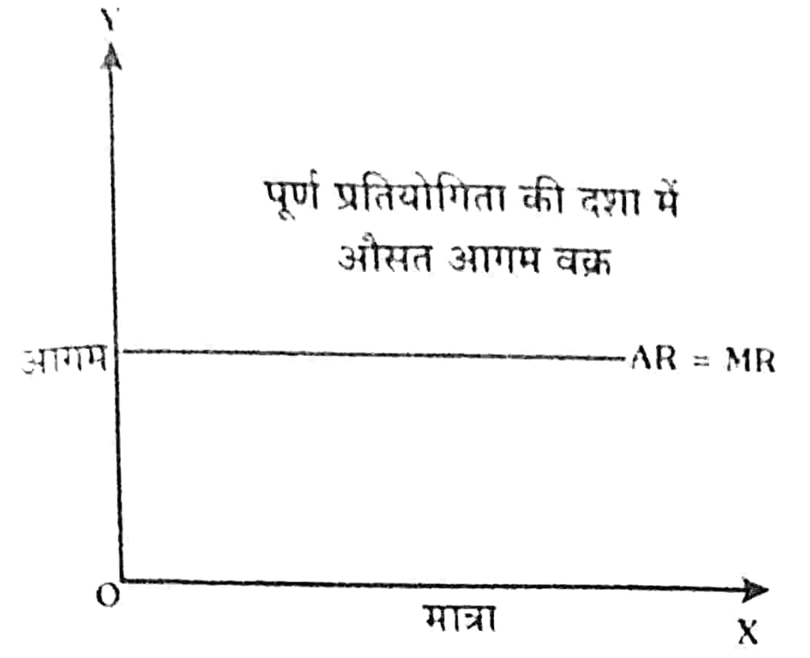

बेची गई इकाइयां

उपर्युक्त तालिका में तीन इकाइयों की बिक्री से फर्म को कुल आगम 96 रु. होती है तथा चार इकाइयों की बिक्री से फर्म को कुल आगम 112 रु. प्राप्त होती है तो सीमान्त आगम 112 − 96 = 16 रुपये होगी। इस प्रकार, अन्तिम इकाई को बेचने से कुल आगम में होने वाली वृद्धि सीमान्त आगम कहलाती है। ❑

इकाई-4 पूर्ण प्रतिस्पर्धा की स्थिति में फर्म का सिद्धांत

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प का चयन कीजिए-

1. बाजार में एक व्यक्तिगत फर्म की पूर्ति अनुसूची कहलाती है-

(a) व्यक्तिगत पूर्ति अनुसूची (b) बाजार पूर्ति अनुसूची
(c) व्यक्तिगत पूर्ति वक्र (d) बाजार पूर्ति वक्र

2. पूर्ति के निमय के अनुसार किसी वस्तु की पूर्ति की मात्रा ओर उसकी कीमत के बीच संबंध होता है-

(a) ऋणात्मक (b) धनात्मक
(c) स्थिर (d) इनमें से कोई नहीं

3. पूर्ति में विस्तार की दशा में चलन होता है-

(a) एक ही पूर्ति वक्र पर नीचे से ऊपर की ओर
(b) एक ही पूर्ति वक्र पर ऊपर की ओर से नीचे की ओर
(c) दूसरे पूर्ति वक्र पर दांयी ओर
(d) दूसरे पूर्ति वक्र पर बायीं ओर

4. पूर्ति में संकुचन की दशा में-

(a) पूर्ति वक्र में दांयी ओर खिसकाव होता है
(b) पूर्ति वक्र में बांयी ओर खिसकाव होता है
(c) पूर्ति वक्र के साथ ऊपर की ओर चलन होता है
(d) पूर्ति वक्र के साथ नीचे की ओर चलन होता है

5. पूर्ति वक्र में परिवर्तन होता है-

(a) वस्तु की स्वयं की कीमत में वृद्धि होने से
(b) वस्तु की स्वयं की कीमत में कमी होने से
(c) कीमत के अलावा अन्य तत्वों में परिवर्तन होने से
(d) दोनों (a) एवं (b)

6. प्रौद्योगिकीय सुधार के कारण-

(a) पूर्ति में वृद्धि होती है
(b) पूर्ति में कमी आती है
(c) पूर्ति की मात्रा में वृद्धि होती है
(d) पूर्ति की मात्रा में कमी आती है

7. सरकारी सहायता एक उत्पादन के लिए-

(a) लाभ को अधिकतम करती है
(b) पूर्ति में कमी करती है
(c) पूर्ति की मात्रा में वृद्धि होती है
(d) पूर्ति की मात्रा में कमी आती है

8. जब एक पूर्ति वक्र प्रारम्भिक बिन्दु से शुरू होकर झुकती हुई धनात्मक सरल रेखा बनाता है तब-

(a) Es = 0 (b) Es = 1
(c) Es > 1 (d) Es < 1

9. जब पूर्ति वक्र X-अक्ष के समान्तर होता है, तब पूर्ति की लोच होगी-

(a) शून्य (b) इकाई
(c) अनंत (d) ऋणात्मक

10. जब वस्तु की कीमत 4 रुपये प्रति इकाई से बढ़कर 5 रुपये प्रति इकाई हो जाती है और पूर्ति की मात्रा बढ़कर 100 इकाई से 120 इकाई हो जाती है, तब इसकी पूर्ति की कीमत लोच होगी-

(a) शून्य (b) 0.8
(c) 1 (d) 1.2

11. निम्नांकित में पूर्ति का आवश्यक तत्व नहीं है-

(a) वस्तु की कीमत (b) समयावधि
(c) क्रय की इच्छा (d) वस्तु की मात्रा

12. पूर्ति में उसी कीमत पर गिरावट आ जाती है जब-

(a) पूर्ति में कमी हो जाये
(b) जब पूर्ति में संकुचन हो जाये
(c) पूर्ति में वृद्धि हो जाये
(d) पूर्ति का संकुचन

13. निम्नांकित में उत्पादन के साधनों की कीमत बढ़ने का परिणाम है-

(a) पूर्ति वक्र का दांयी ओर शिफ्ट होना
(b) पूर्ति वक्र का बांयी ओर शिफ्ट होना
(c) पूर्ति का विस्तार
(d) पूर्ति का संकुचन

14. बाजार अवधि वह समयावधि है जिसमें –

(a) माँग में परिवर्तित दशाओं के अनुसार पूर्ति समायोजित नहीं की जा सके।

(b) माँग में परिवर्तित दशाओं के अनुसार पूर्ति पूर्णतः समायोजित की जा सके।

(c) पूर्ति में परिवर्तन उपलब्ध क्षमता तक ही सम्भव है।

(d) पूर्ति में कोई भी परिवर्तन सम्भव है।

15. आधुनिक टेक्नोलॉजी से एक मशीन की स्थापना से उत्पादन लागत में कमी आ जाती है इसे कहेंगे–

(a) पूर्ति में विस्तार (b) पूर्ति में वृद्धि

(c) पूर्ति में संकुचन (d) पूर्ति में कमी

उत्तर– (1) (a), (2) (b) (3) (c) (4) (b) (5) (d) (6) (a) (7) (c) (8) (d) (9) (c) (10) (b) (11) (c) (12) (a) (13) (a) (14) (a) (15) (b).

प्रश्न 2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

(1) पूर्ति एक .... अवधारणा है।

(2) कर की मात्रा में वृद्धि होने पर पूर्ति .... है।

(3) फर्मों की संख्या बढ़ने से पूर्ति .... है।

(4) वस्तु की पूर्ति .... का एक भाग है।

(5) पूर्ति वक्र का आशय पूर्ति अनुसूची की .... प्रस्तुति है।

(6) किसी वस्तु की पूर्ति को निर्धारित करने वाला एक प्रमुख घटक वस्तु की .... है।

(7) पूर्ति वक्र का ढाल X–अक्ष के चरों का भाग लगाने पर आने वाला .... है।

उत्तर– (1) गुणात्मक (2) घटती (3) बढ़ती (4) स्टॉक (5) ग्राफीकल (6) कीमत (7) भागफल।

प्रश्न 3. एक शब्द में उत्तर कीजिए–

(1) अल्पकाल में फर्म का पूर्ति वक्र किस प्रकार का होता है।

(2) फर्म के पूर्ति वक्र को तकनीकी उन्नति किस प्रकार प्रभावित करती है।

(3) सरकार द्वारा मुख्य रूप से किस प्रकार के उत्पादन के लिए कीमत का आधार निर्धारित करती है ?

(4) एक फर्म द्वारा की जाने वाली पूर्ति को क्या कहते हैं ?

(5) जिन घटकों के कारण किसी वस्तु की पूर्ति में परिवर्तन हो जाता है उन्हें क्या कहा जाता है?

(6) वस्तु की मात्रा जो सभी फर्में बाजार में बेचने के लिए निश्चित समयावधि में निश्चित कीमत पर प्रस्तुत करती है उसे कहते हैं ?

(7) किसी वस्तु की पूर्ति को निर्धारित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण घटक कौन–सा है ?

(8) उत्पत्ति के साधनों की कीमतों में वृद्धि उत्पादन की लागत में वृद्धि कर देती है जिससे कमी हो जाती है।

उत्तर– (1) कम लोचदार (2) तकनीकी उन्नति से पूर्ति में वृद्धि होती है जिससे पूर्ति वक्र नीचे दायीं ओर बदल जाती है। (3) आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन के लिए। (4) व्यक्तिगत पूर्ति (5) निर्धारक तत्व (6) बाजार पूर्ति (7) वस्तु की कीमत (8) पूर्ति में।

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. पूर्ति का नियम समझाइए।

उत्तर– 1. पूर्ति का नियम– बाजार में यदि किसी वस्तु की कीमत बढ़ जाती है तो उसकी पूर्ति भी बढ़ जाती है। इसके विपरीत यदि किसी वस्तु की कीमत में गिरावट आ जाती है तो बाजार में उसकी पूर्ति में भी गिरावट आ जाती है।

प्रश्न 2. पूर्ति में वृद्धि से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर– पूर्ति में वृद्धि से अभिप्राय– जब किसी वस्तु की पूर्ति में, अपनी स्वयं की कीमत में परिवर्तन के अलावा किसी भी कारण से वृद्धि हो जाती है तो इसे 'पूर्ति में वृद्धि' कहते हैं।

प्रश्न 3. किसी वस्तु की पूर्ति अन्य वस्तुओं की कीमत में परिवर्तन हो जाने पर किस प्रकार प्रभावित होती है ?

उत्तर– किसी वस्तु की पूर्ति अन्य वस्तुओं की कीमत में परिवर्तन हो जाने पर परिवर्ति (पूर्ति में वृद्धि/कमी) हो जाती है।

प्रश्न 4. 'पूर्ति में परिवर्तन' से क्या आशय है ?

उत्तर– पूर्ति में परिवर्तन– जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन को छोड़कर, अन्य घटकों में परिवर्तन के कारण उस वस्तु की पूर्ति में कमी या वृद्धि होती है तो उसे उस वस्तु की पूर्ति में परिवर्तन कहते हैं।

प्रश्न 5. बाजार पूर्ति तालिका से क्या आशय है ?

उत्तर– बाजार पूर्ति की तालिका– बाजार पूर्ति की तालिका में किसी वस्तु के सभी विक्रेताओं की भिन्न-भिन्न कीमतों पर कुल पूर्ति की मात्रा दिखायी जाती है। माना बाजार में रुई के केवल तीन विक्रेता A, B तथा C हैं और उनकी अलग-अलग पूर्ति तालिकाएँ हैं। यदि उन तीनों की पूर्ति तालिकाओं का योग कर दिया जाये तो बाजार में कुल पूर्ति प्राप्त हो जायेगी।

प्रश्न 6. वस्तु की पूर्ति को प्रभावित करने वाले तत्व कौन-कौन से है ?

उत्तर– वस्तु की पूर्ति को प्रभावित करने वाले तत्व– (1) वस्तु की कीमत (2) अन्य वस्तुओं की कीमतें (3) उत्पादन साधनों (4) कीमतें (5) तकनीकी विकास (5) प्राकृतिक तत्व।

प्रश्न 7. पूर्ति की लोच को प्रभावित करने वाले कौन-कौन से तत्व हैं ?

उत्तर– पूर्ति की लोच को प्रभावित करने वाले तत्व– (1) वस्तु की कीमत (2) समय तत्व (3) उत्पादन साधनों की परिवर्तनशीलता (4) वस्तु की प्रकृति।

प्रश्न 8. पूर्ति वक्र पर चलन और पूर्ति वक्र में परिवर्तन में अन्तर बताए।

उत्तर- पूर्ति वक्र पर चलन, वस्तु की कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप में वस्तु की पूर्ति की मात्रा में परिवर्तन होने एवं अन्य घटक अपरिवर्तित करने पर होता है जबकि वस्तु की पूर्ति में परिवर्तन वस्तु की अपनी कीमत में परिवर्तन को छोड़कर अन्य घटक में परिवर्तन के कारण होता है।

प्रश्न 9. पूर्णतया बेलोचदार पूर्ति से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर- पूर्णतया बेलोचदार पूर्ति- जब किसी वस्तु की कीमत में अत्यधिक परिवर्तन होने पर भी उसकी पूर्ति में बिल्कुल भी परिवर्तन नहीं हो तो ऐसी दशा को पूर्णतया बेलोचदार पूर्ति की दशा कहते हैं।

प्रश्न 10. उत्पादन के साधनों की कीमत में कमी आने पर वस्तु की पूर्ति पर पड़ने वाले प्रभाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- उत्पादन के साधनों की कीमत में कमी आने पर वस्तु की पूर्ति में वृद्धि हो जाती है, क्योंकि उत्पादन लागत घट जाती है और लाभ बढ़ जाते हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. पूर्ति को प्रभावित करने वाले विभिन्न तत्वों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- बाजार पूर्ति के निर्धारक तत्व इस प्रकार हैं-

1. सरकारी नीति- विद्यमान करों की दरें बढ़ जाने पर या नये कर लगा देने पर वस्तु की पूर्ति कम हो जाती है क्योंकि लाभ का मार्जिन घट जाता है। दूसरी ओर, करों में रियायत या सहायता प्राप्त होने पर वस्तु की पूर्ति बढ़ जाती है क्योंकि इससे लाभ का मार्जिन बढ़ जाता है।

2. टेक्नोलॉजी सम्बन्धी परिवर्तन- टेक्नोलॉजी सम्बन्धी परिवर्तनों का वस्तु की पूर्ति पर प्रभाव पड़ता है। यदि टेक्नोलॉजी का विकास होता है तो उत्पादन लागत घट जाती है जिससे लाभ का मार्जिन बढ़ जाता है। ऐसी दशा में विक्रेता पूर्ति बढ़ाने के लिए प्रेरित होता है। पुरानी तथा परम्परागत टेक्नोलॉजी अपनाने से उत्पादन लागत बढ़ जाती है और परिणामस्वरूप पूर्ति में कमी आ जाती है।

3. उद्योग में फर्मों की संख्या- जब उद्योग में फर्मों की संख्या बढ़ जाती है तो बाजार पूर्ति भी बढ़ जाती है। इसका कारण यह है कि बड़ी संख्या में उत्पादक वस्तुओं का उत्पादन करने लगते हैं। दूसरी ओर उद्योग में जब फर्मों की संख्या घट जाती है तो बाजार-पूर्ति में कमी होने लगती है।

4. फर्म के उद्देश्य- जब किसी वस्तु की ऊँचे लाभ पर पूर्ति की जाती है तो इससे पूर्तिकर्ता का अधिकतम लाभ कमाने का उद्देश्य पूरा हो जाता है। कुछ फर्मों का उद्देश्य विस्तृत बाजार को हथियाना भी होता है ताकि उनकी स्थिति एवं प्रतिष्ठा में प्रगति हो सके। ऐसी फर्में अधिक पूर्ति करने की इच्छुक होती हैं और वे पूर्ति की कीमत अधिकतम लाभ कमाने के लिए निर्धारित नहीं करती हैं। अर्थात् कम लाभ पर पूर्ति करने को तैयार हो जाती है।

प्रश्न 2. पूर्ति की लोच को प्रभावित करने वाले विभिन्न तत्व कौन-से हैं ? वर्णन कीजिए।

उत्तर- पूर्ति की लोच को प्रभावित करने वाले तत्व

1. वस्तु की प्रकृति- वस्तु की प्रकृति का पूर्ति की लोच पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, उदाहरण के लिए, जो वस्तु शीघ्र नष्ट होने वाली है, उसकी पूर्ति बेलोचदार होती है। जो वस्तुएं टिकाऊ प्रकृति की होती है उनकी पूर्ति लोचदार होती है क्योंकि ऐसी वस्तु को कीमत वृद्धि की आशा में रोककर रखा जाता है।

2. उत्पादन लागत- यदि उत्पादन में वृद्धि करने पर सीमान्त लागत में तेजी से वृद्धि होती है तो कीमत में वृद्धि होने पर भी उत्पादकों को उत्पादन वृद्धि की विशेष प्रेरणा नहीं होगी। ऐसी स्थिति में पूर्ति की लोच कम होगी। इसके विपरीत यदि उत्पादन में वृद्धि करने पर सीमान्त लागत में धीमी गति से वृद्धि होती है तो कीमत में वृद्धि होने पर उत्पादकों को उत्पादन की अधिक प्रेरणा मिलेगी और ऐसी स्थिति में पूर्ति की लोच अधिक होगी।

3. समय- पूर्ति की लोच समयावधि पर भी निर्भर होती है। समय अधिक होने पर पूर्ति की मात्रा के कारण परिवर्तन किया जा सकता है जबकि अल्पकाल में यह सम्भव नहीं होता। यही कारण है कि जहाँ अल्पकाल में वस्तुओं की पूर्ति प्रायः बेलोचदार होती है, वहाँ दीर्घकाल में वह अधिक लोचदार होती है।

4. भावी कीमतों में परिवर्तन- यदि उत्पादक वस्तु की भावी कीमतों में वृद्धि की आशा करते हैं, तो वे वस्तु की वर्तमान पूर्ति में कमी की आशा की जाती है, तो उत्पादक वर्तमान समय में वस्तु को अधिक मात्रा में बेचने लगेंगे। जिसके कारण पूर्ति बेलोचदार हो जाएगी।

5. उत्पादन की प्रणाली- यदि किसी उद्योग में जटिल उत्पादन तकनीकों एवं प्रणालियों का प्रयोग किया जाता है तो उस उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु की पूर्ति प्रायः बेलोचदार होगी। इसके विपरीत यदि किसी उद्योग में सरल उत्पादन प्रणालियों का प्रयोग किया जा रहा है तो ऐसे उद्योगों द्वारा उत्पादित वस्तुओं की पूर्ति अपेक्षाकृत रूप से लोचदार होगी अर्थात् पूर्ति की मात्रा को आसानी से घटाया-बढ़ाया नहीं जा सकता है।

प्रश्न 3. पूर्ति अनुसूची और पूर्ति वक्र की सहायता से पूर्ति के नियम को समझाइए।

उत्तर- पूर्ति का नियम बताता है कि अन्य बातें के समान रहने पर एक वस्तु की पूर्ति, उसकी कीमत बढ़ने से बढ़ जाती है और कीमत के घटने से घट जाती है।

पूर्ति का नियम माँग के नियम के विपरीत है, जैसे कि माँ

के नियम में कीमत बढ़ने से माँग घटती है और कीमत घटने पर माँग बढ़ती है। यह माँग और कीमत के बीच ऋणात्मक संबंध को व्यक्त करती है, जबकि पूर्ति के नियम में कीमत और पूर्ति का धनात्मक संबंध होता है। जब कभी किसी वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है, तब उस वस्तु की पूर्ति को बढ़ाया जाता है और कीमत में कमी होने पर उसकी पूर्ति को घटा दिया जाता है।

अन्य बातें समान रहने पर किसी वस्तु की पूर्ति के बढ़ने की प्रवृत्ति तब होती है जब उस वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है और पूर्ति में कमी तब होती है, जब वस्तु की कीमत में कमी आती है। इस प्रकार, कीमत और पूर्ति के बीच सीधा सम्बन्ध है। इसे सूत्र के रूप में निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जाता है

S = f(P)

यहाँ S = वस्तु की पूर्ति, P = वस्तु की कीमत, f = फलनात्मक सम्बन्ध

पूर्ति का नियम, माँग के नियम की भाँति एक 'गुणात्मक' कथन है न कि 'परिमाणात्मक' कथन। अर्थात यह नियम पूर्ति तथा कीमत के बीच किसी प्रकार का गणितात्मक संबंध स्थापित नहीं करता, बल्कि केवल पूर्ति की मात्रा में होने वाले परिवर्तनों की दिशा की ओर संकेत करता है।

तालिका द्वारा स्पष्टीकरण – पूर्ति के नियम को एक काल्पनिक तालिका की सहायता से निम्नानुसार स्पष्ट किया जा सकता है–

पूर्ति की तालिका (काल्पनिक)

प्रति इकाई कीमत	पूर्ति की मात्रा (इकाईयाँ)
1	10
2	15
3	20
4	25
5	30

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि ज्यों-ज्यों वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है त्यों-त्यों विक्रेता के द्वारा वस्तु की पूर्ति को बढ़ाया जाता है। जब वस्तु की कीमत सबसे कम 1 रु. प्रति इकाई है तब वस्तु की पूर्ति सबसे कम 10 इकाईयाँ है लेकिन जैसे ही कीमत बढ़कर 5 रु. प्रति इकाई हो जाती है, त्यों ही वस्तु की पूर्ति बढ़कर 30 इकाइयाँ हो जाती है।

रेखाचित्र द्वारा स्पष्टीकरण– प्रस्तुत रेखाचित्र में OX आधार रेखा पर वस्तु की मात्रा तथा OY लम्ब रेखा पर वस्तु की कीमत को दिखाया गया है। पूर्ति रेखा है जो यह बताती है कि कीमत बढ़ने के साथ-साथ पूर्ति रेखा। बिन्दु से B,C,E,D और बिन्दुओं की ओर बढ़ती है, अतः पूर्ति वक्र कीमत और पूर्ति के बीच प्रत्यक्ष संबंध को प्रदर्शित करता है और इसके विपरीत, कीमत के गिरने के साथ साथ S, पूर्ति वक्र E बिन्दु से D, C, B व A बिन्दुओं की ओर खिसकती है।

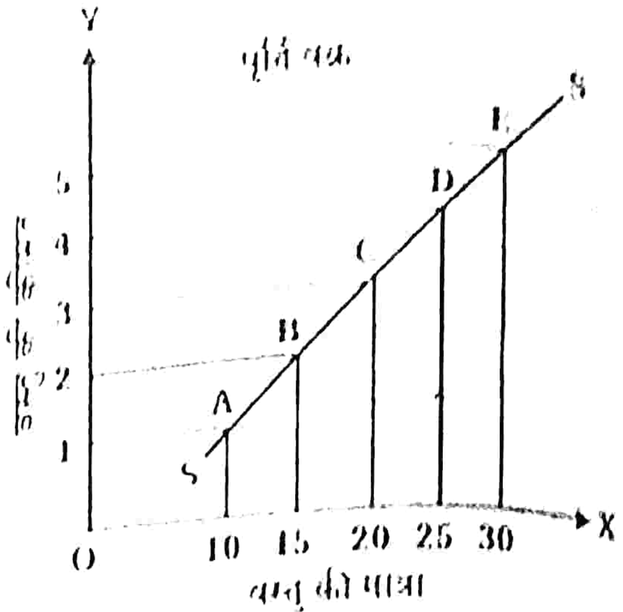

चित्र– पूर्ति वक्र

प्रश्न 4. पूर्ति की कीमत लोच से आप क्या समझते हैं? पूर्ति की लोच की विभिन्न श्रेणियों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– उत्तर– पूर्ति की लोच को निम्न पाँच प्रकारों या श्रेणियों में विभाजित किया जाता है

1. पूर्णतया लोचदार पूर्ति– जब किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन न होने पर या अत्यन्त सूक्ष्म परिवर्तन होने पर भी पूर्ति में अत्यधिक परिवर्तन हो जाता है, तब ऐसी पूर्ति को पूर्णतया लोचदार पूर्ति कहा जाता है। इस प्रकार की पूर्ति की लोच काल्पनिक होती है तथा वास्तविक जीवन में कभी देखने में नहीं आती है।

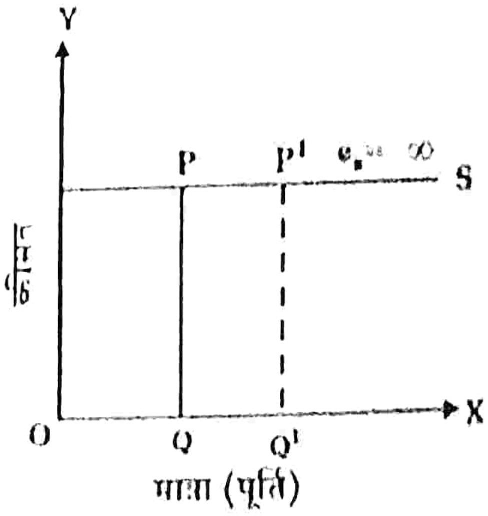

चित्र– पूर्णतया लोचदार पूर्ति

2. अत्यधिक लोचदार पूर्ति– जब किसी वस्तु की पूर्ति में आनुपातिक परिवर्तन उसकी कीमत में होने वाले आनुपातिक परिवर्तन से अधिक होता है तो उसे अत्यधिक लोचदार पूर्ति कहते हैं। उदाहरणार्थ, यदि किसी वस्तु की कीमत में 10% की कमी होती है, जिसके फलस्वरूप उसकी पूर्ति 25% कम

जा... ऐसी पूर्ति को अत्यधिक लोचदार कहते। इसे इकाई से अधिक ($e_s > 1$) भी कहते है।

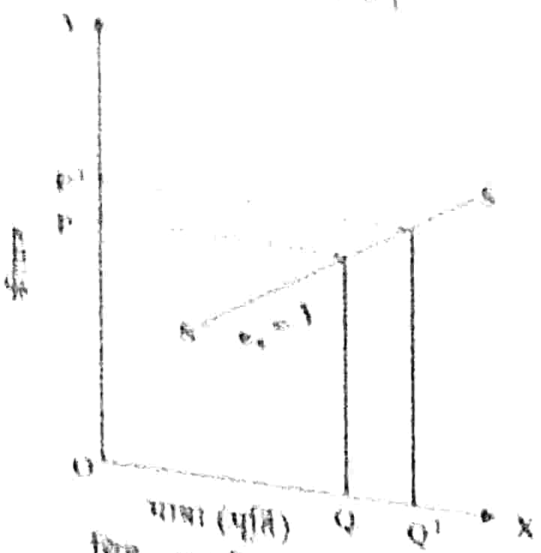

चित्र– अत्यधिक लोचदार पूर्ति

3. लोचदार पूर्ति– जब किसी वस्तु की पूर्ति में परिवर्तन ठीक उसी अनुपात में हो जिस अनुपात में उसकी कीमत में परिवर्तन हुआ है तब ऐसी वस्तु की पूर्ति लोचदार पूर्ति कही जाती है। उदाहरणार्थ, यदि किसी वस्तु की कीमत में 10% वृद्धि होती है और उसकी पूर्ति में ठीक 10% की वृद्धि होती जाती है तो यह लोचदार पूर्ति कहलाती है। इस प्रकार की लोच को इकाई के बराबर लोच ($e_s = 1$) भी कहते है।

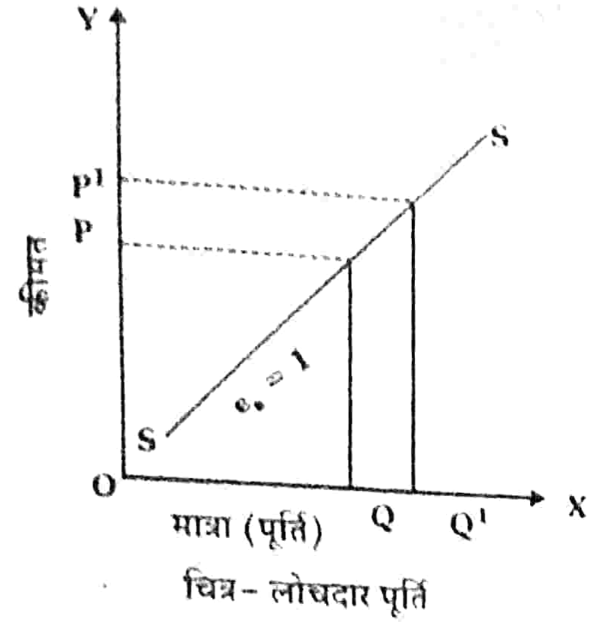

चित्र– लोचदार पूर्ति

4. बेलोचदार पूर्ति– जब किसी वस्तु की पूर्ति में आनुपातिक परिवर्तन उसकी कीमत में होने वाले आनुपातिक परिवर्तन से कम होता है तो ऐसी पूर्ति को बेलोचदार पूर्ति कहते हैं।

उदाहरणार्थ, यदि किसी वस्तु की कीमत में 40% की वृद्धि होती है, परन्तु पूर्ति में केवल 10% की वृद्धि होती है, तो इसे बेलोचदार पूर्ति कहा जाता है। इस प्रकार की पूर्ति को इकाई से कम लोच ($e_s < 1$) भी कहते हैं।

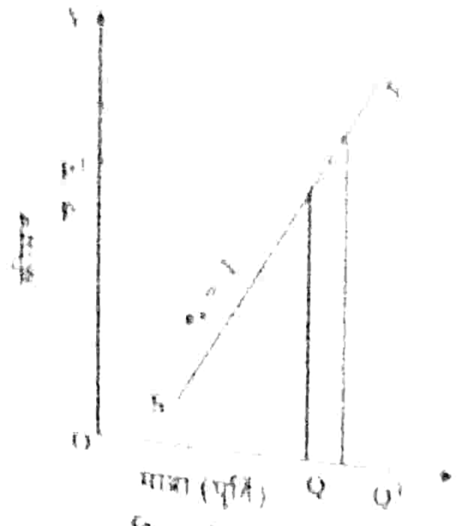

चित्र - बेलोचदार पूर्ति

5. पूर्णतया बेलोचदार पूर्ति– जब किसी वस्तु की कीमत में अत्यधिक परिवर्तन होने पर भी उसकी पूर्ति में बिल्कुल भी परिवर्तन न हो तो ऐसी दशा को पूर्णतया बेलोचदार पूर्ति कहते है। पूर्ति में क्योंकि बिलकुल परिवर्तन नहीं होता है, इसलिए लोच शून्य ($e_s = 0$) होती है।

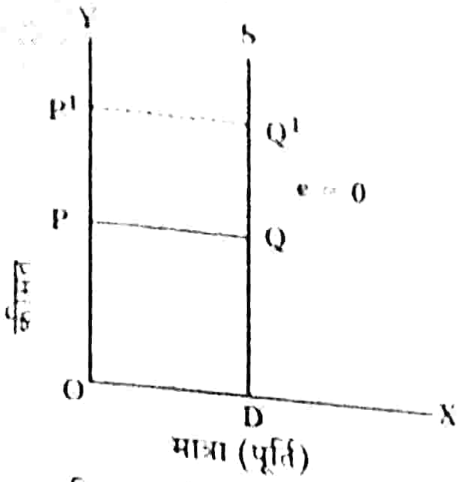

चित्र– पूर्णतया बेलोचदार पूर्ति

प्रश्न 5. पूर्ति के नियम को समझाइये। एक पूर्ति वक्र ऊपर की ओर क्यों झुकता है ?

उत्तर– पूर्ति का नियम- पूर्ति का नियम बताता है कि अन्य बातों के समान रहने पर एक वस्तु की पूर्ति, इनकी कीमत बढ़ने से बढ़ जाती है और कीमत के घटने से घट जाती है। पूर्ति का नियम माँग के नियम के विपरीत है। जैसे कि माँग के नियम में कीमत बढ़ने से माँग घटती है और कीमत घटने पर माँग बढ़ती है। यह माँग और कीमत के बीच ऋणात्मक संबंध को व्यक्त करती है, जबकि पूर्ति के नियम में कीमत और पूर्ति का धनात्मक संबंध होता है। जब कभी किसी वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है, तब उस वस्तु की पूर्ति को बढ़ाया जाता है और कीमत में कमी होने पर उसकी पूर्ति को घटा दिया जाता है।

अन्य बातें समान रहने पर किसी वस्तु की पूर्ति के बढ़ने की प्रवृत्ति तब होती है जब उस वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है और पूर्ति में कमी तब होती है, जब वस्तु की कीमत में कमी आती है। इस प्रकार, कीमत और पूर्ति के बीच सीधा सम्बन्ध है। इसे सूत्र के रूप में निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जाता है

$S = f(P)$

[illegible] वस्तु की पूर्ति [illegible] वस्तु की कीमत [illegible] धनात्मक सम्बन्ध।

पूर्ति का नियम माँग के नियम की भाँति एक गुणात्मक कथन है न कि परिमाणात्मक कथन अर्थात् यह नियम पूर्ति एवं कीमत के बीच किसी प्रकार का परिमाणात्मक सम्बन्ध स्थापित नहीं करता बल्कि केवल पूर्ति की मात्रा में होने वाले परिवर्तन की दिशा की ओर संकेत करता है।

उपरोक्त चित्र से स्पष्ट है कि ज्यों-ज्यों वस्तु की कीमत में वृद्धि होती है त्यों-त्यों विक्रेता के द्वारा वस्तु की पूर्ति को बढ़ाया जाता है। जब वस्तु की कीमत सबसे कम 1 रु. प्रति इकाई है तब वस्तु की पूर्ति सबसे कम 10 इकाईयाँ है लेकिन जैसे ही कीमत बढ़कर 5 रु. प्रति इकाई हो जाती है, त्यों ही वस्तु की पूर्ति बढ़कर 30 इकाईयाँ हो जाती है।

रेखाचित्र द्वारा स्पष्टीकरण- प्रस्तुत रेखाचित्र में OX आधार रेखा पर वस्तु की मात्रा तथा OY लम्ब रेखा पर वस्तु की कीमत को प्रदर्शित किया है। पूर्ति रेखा [illegible] यह बताती है कि कीमत बढ़ने के साथ-साथ पूर्ति रेखा बिन्दु से B C E D आदि बिन्दुओं की ओर बढ़ती है। अतः पूर्ति वक्र कीमत तथा पूर्ति के बीच धनात्मक सम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। इससे स्पष्ट है कि पूर्ति वक्र ऊपर को ही झुकता है।

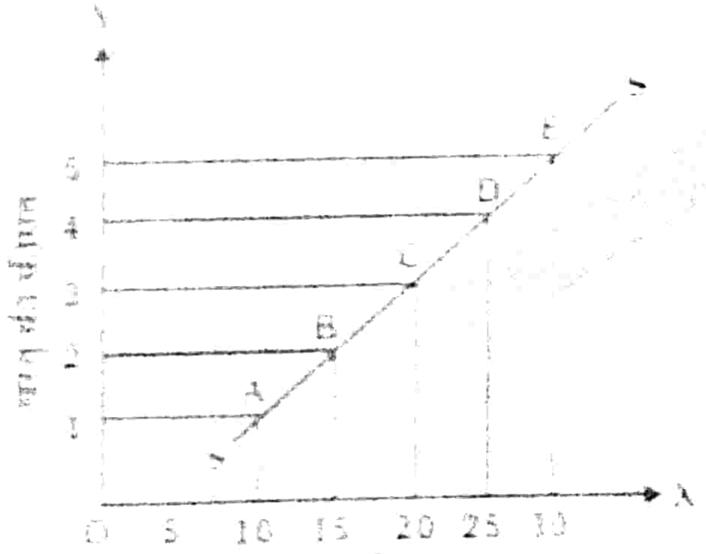

वस्तु की मात्रा

चित्र - पूर्ति वक्र

प्रश्न 6. रेखाचित्र के द्वारा पूर्ति वक्र के साथ चलना पूर्ति वक्र के परिवर्तन में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- पूर्ति की मात्रा में परिवर्तन तब होता है जब इस प्रकार का परिवर्तन वस्तु की अपनी स्वयं की कीमत में परिवर्तन के कारण हो तथा अन्य घटक अपरिवर्तित रहें। ग्राफ की भाषा में इसे पूर्ति वक्र में उतार-चढ़ाव कहते हैं। इसका आशय यह है कि पूर्ति के संकुचन की दशा में हम पूर्ति वक्र के साथ नीचे की ओर चलते तथा पूर्ति के विस्तार की दशा में ऊपर की ओर चला करते हैं। इसे निम्नांकित रेखाचित्र से अधिक स्पष्ट हो जायेगी-

(1) पूर्ति में विस्तार ऊपर की ओर जाने के रूप में दर्शाया गया है जो A से B है। पूर्ति की मात्रा OQ से OQ_1 तक बढ़ती है क्योंकि कीमत OP से OP_1 हो जाती है।

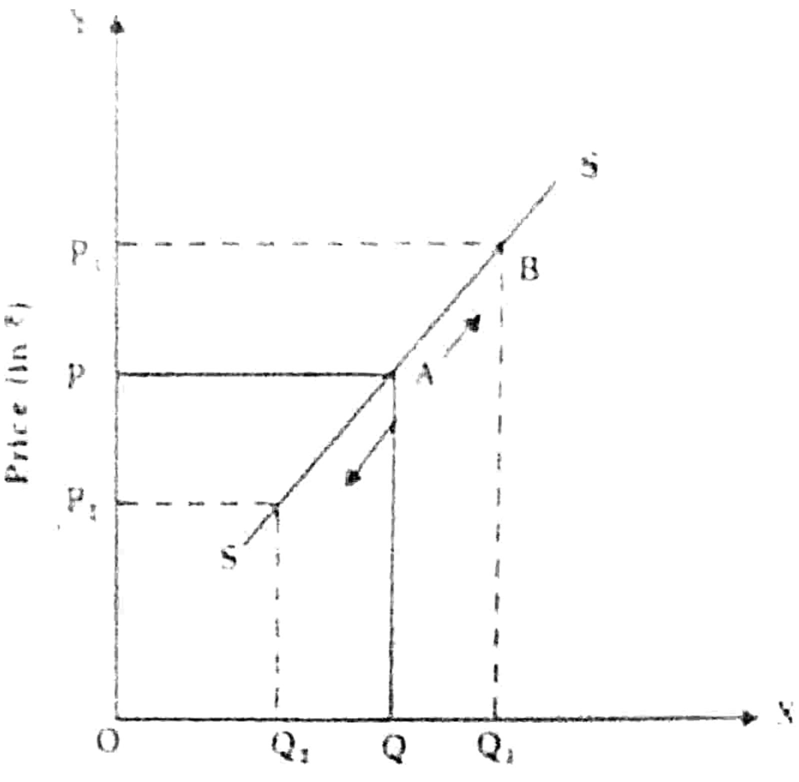

रेखाचित्र –

(2) पूर्ति में संकुचन नीचे की ओर जाने के रूप में दर्शाया गया है जो A से C तक है। कीमत OP से OP_2 तक घट जाती है तो पूर्ति OQ से OQ_2 तक हो जाती है।

पूर्ति का विस्तार–

पूर्ति में विस्तार एवं संकुचन– पूर्ति में विस्तार एवं संकुचन कीमत में परिवर्तन आने पर पूर्ति की मात्रा में परिवर्तन आने से होता है। यदि अन्य बातें समान हैं तो वस्तु की कीमत बढ़ने से उसकी पूर्ति बढ़ जाती है।

इसे पूर्ति का विस्तार कहते हैं। इसके विपरीत वस्तु की कीमत में कमी होने पर उसकी पूर्ति घट जाती है। इसे पूर्ति का संकुचन कहते हैं। इसे रेखाचित्र में स्पष्ट किया गया है।

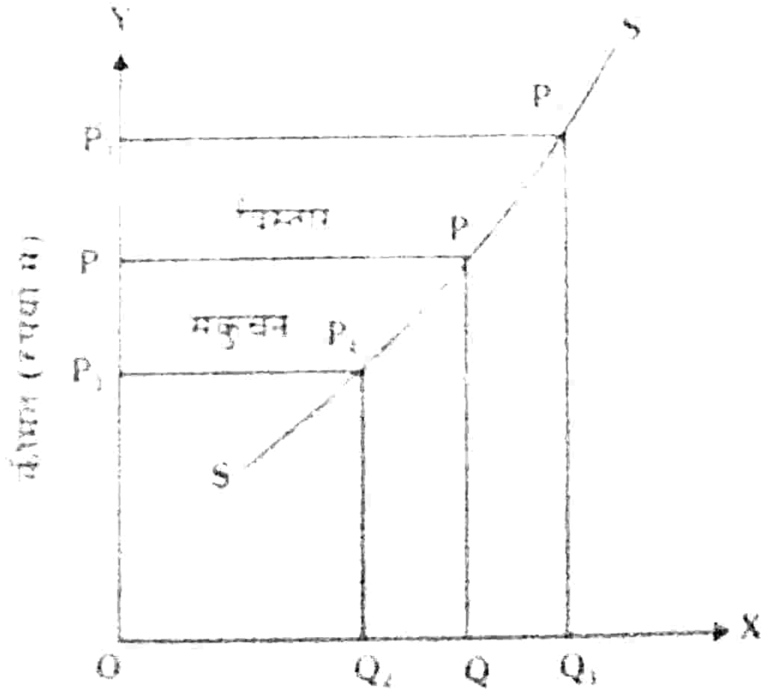

मात्रा (पूर्ति)

चित्र

चित्र में SS पूर्ति वक्र है। जब कीमत PQ है तो पूर्ति की गई मात्रा OQ है। जब कीमत P_1Q_1 हो जाती है तो पूर्ति की मात्रा बढ़कर OQ_1 हो जाती है। अतः पूर्ति की मात्रा का OQ से बढ़कर OQ_1 होना पूर्ति में विस्तार है। यदि कीमत PQ से

घटकर P_2Q_2 हो जाती है। अतः पूर्ति की मात्रा का OQ से घटकर OQ_2 होना पूर्ति में संकुचन को दर्शाता है।

पूर्ति में संकुचन का अर्थ– जब किसी वस्तु की कीमत में गिरावट के प्रत्युत्तर में पूर्ति की मात्रा में गिरावट आ जाती है, अन्य घटकों के अपरिवर्तित होने पर, तो इसे पूर्ति में संकुचन कहते हैं। इसके फलस्वरूप पूर्ति वक्र के साथ नीचे की ओर जाना कहते हैं।

उदाहरण–

तालिका

कीमत	मात्रा
40	100
30	70

यहाँ, कीमत जब 40 रु. से गिरकर 30 रु. हो जाती है तो पूर्ति की मात्रा 100 इकाइयों से गिरकर 70 इकाइयाँ हो जाती हैं।

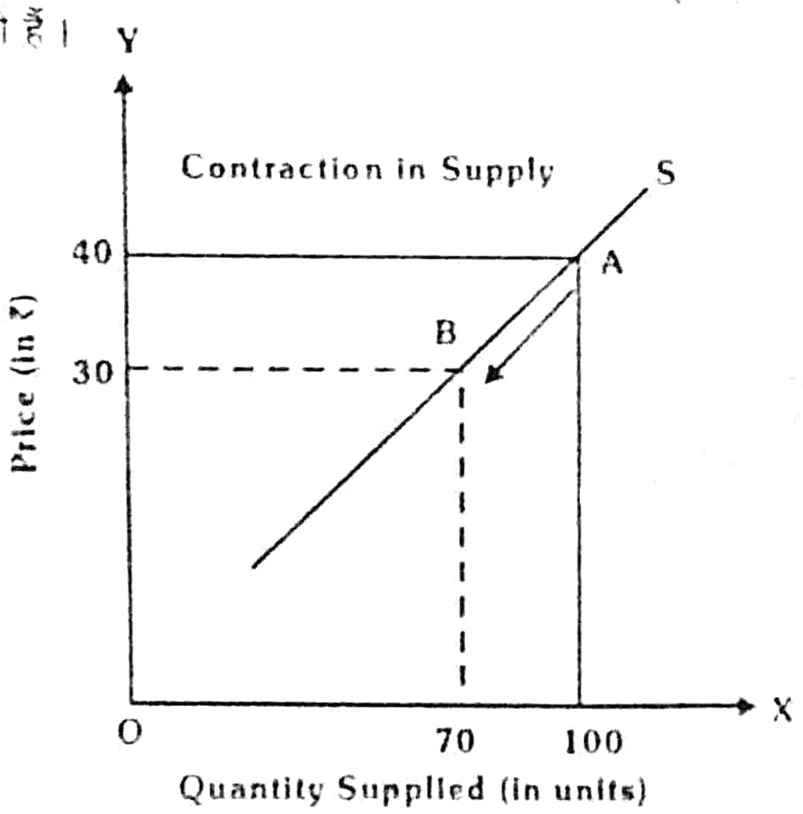

चित्र

यहाँ SS पूर्ति वक्र के साथ A से B तक नीचे की ओर पूर्ति में संकुचन हुआ है।

प्रश्न 7. यदि उत्पादन के साधनों की लागत में वृद्धि होती है, तो पूर्ति वक्र पर उसका क्या प्रभाव पड़ेगा ? रेखाचित्र की सहायता से समझाइए।

उत्तर– किसी वस्तु की कीमत निर्धारण में स्थिर लागतों तथा परिवर्तनशील लागतों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। स्थिर एवं परिवर्तनशील लागतों से सम्बन्धित सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि दोनों प्रकार की लागतों का अन्तर अल्पकाल में ही लागू होता है दीर्घकाल में नहीं, क्योंकि दीर्घकाल में सभी साधन एवं लागतें परिवर्तनशील हो जाती हैं। दूसरे, स्थिर तथा परिवर्तनशील लागतों में अन्तर केवल मात्रा का है न कि किस्म का, क्योंकि स्थिर लागतें एक समयावधि के सन्दर्भ में ही स्थिर होती हैं।

दीर्घकाल में उत्पादक अपनी वस्तु की कीमत इतनी अवश्य निर्धारित करेगा कि उसकी स्थिर लागत तथा परिवर्तनशील लागत का योग अर्थात् कुल लागत निकल आये। यदि दीर्घकाल में उत्पादक को हानि होती है तो वह उत्पादन बन्द करने का निर्णय लेगा।

अल्पकाल में उत्पादक हानि होने पर भी उत्पादन जारी रख सकता है किन्तु वह यह हानि उसी सीमा तक सहन कर सकेगा जहाँ तक कि उसकी परिवर्तनशील लागतें कीमत से निकल रही हैं क्योंकि वह आशा रखता है कि भविष्य में अच्छा समय आने पर उसकी स्थिर लागत भी निकल आएगी। यदि अल्पकाल में उत्पादक की परिवर्तन लागतें भी नहीं निकलती हैं तो वह उत्पादन को बंद करने का निर्णय लेगा। इस प्रकार स्पष्ट है कि अल्पकाल में वस्तु की कीमत कम से कम परिवर्तनशील लागत के बराबर होनी चाहिए। जिस बिन्दु पर कीमत औसत-परिवर्तनशील लागत के बराबर होती है उसे उत्पादन बन्द होने का बिन्दु कहते हैं।

अतः किसी वस्तु की कीमत निर्धारण में स्थिर लागतें तथा परिवर्तनशील लागतें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

दीर्घकाल की दशा में उत्पादक प्रत्येक उत्पत्ति के साधन को इच्छानुसार एवं आवश्यकतानुसार परिवर्तित कर सकता है अर्थात् दीर्घकाल में उत्पत्ति का प्रत्येक साधन परिवर्तनशील होता है तथा कोई साधन स्थिर नहीं होता। दीर्घकाल में उत्पादन के प्लाण्ट का आकार भी परिवर्तनीय है। दीर्घकाल में प्लाण्ट का आकार बदला जा सकता है अथवा उत्पादन एक प्लाण्ट को छोड़कर अपेक्षाकृत अधिक कुशल प्लाण्ट को अपना सकता है। प्रत्येक प्लाण्ट उत्पादन की एक निश्चित सीमा तक उपयोगी है। अतः एक फर्म उत्पादन के लिए उस प्लाण्ट का उस बिन्दु तक प्रयोग करेगी जहाँ तक उत्पादन में वृद्धि के साथ उत्पादन लागत में कमी होती जाए। दीर्घकाल में यदि कोई अन्य प्लाण्ट पहले से स्थापित प्लाण्ट की तुलना में किसी उत्पादन स्तर पर कम लागत को सम्भव बनाता है तब ऐसी दशा में उत्पादक कम लागत देने वाले प्लाण्ट का प्रयोग करने लगेगा।

कुल औसत लागत वह है जो कुल लागत में उत्पादन की मात्रा का भाग देने पर आती है।

सूत्र के रूप में

$$AFC = \frac{TC}{Q}$$

जहाँ TC = कुल लागत

Q = उत्पादन की कुल मात्रा

अल्पकाल की दशा में

$$TC = TFC + TVC$$

तथा

$$ATC = \frac{TC}{Q}$$

अतः

$$TC \text{ or } ATC = \frac{TFC + TVC}{Q}$$

$$= \frac{TFC}{Q} + \frac{TVC}{Q}$$

$$AC \text{ or } ATC = AFC + AVC$$

इस प्रकार औसत स्थिर लागत एवं औसत परिवर्तनशील लागत का योग अल्पकालीन औसत कुल लागत होती है और इसकी आकृति अंग्रेजी अक्षर U आकार की होती है।

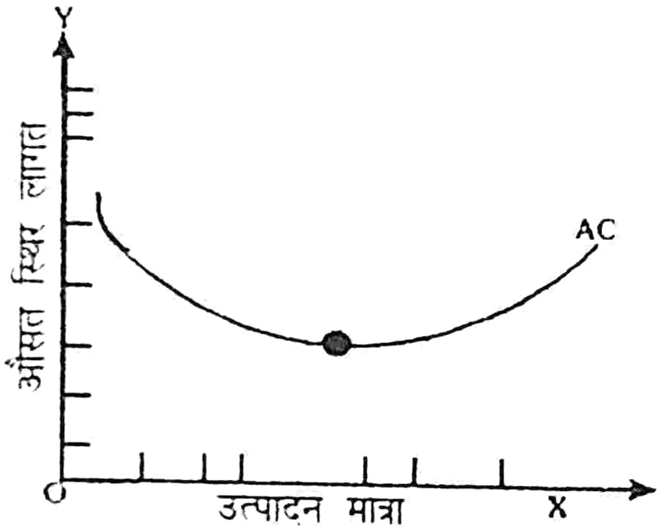

चित्र- औसत कुल लागत

प्रश्न 8. पूर्ति की कीमत लोच को मापने की दो विधियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- 1. आनुपातिक रीति या प्रतिशत रीति - आनुपातिक रीति के अन्तर्गत पूर्ति की लोच की माप करने के लिए पूर्ति मे हो वाले आनुपातिक परिवर्तन को उसके मूल्य से होने वाले आनुपातिक परिवर्तन से भाग दिया जाता है। अर्थात

$$\text{पूर्ति की लोच} = \frac{\text{पूर्ति में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$$

$$E_S = \frac{\frac{\Delta Q}{Q}}{\frac{\Delta P}{P}} = \frac{\Delta Q}{Q} + \frac{\Delta P}{P} = \frac{\Delta Q}{Q} \times \frac{\Delta P}{P}$$

यहाँ E_S = पूर्ति की लोच, ΔQ = वस्तु की पूर्ति में परिवर्तन, Q = प्रारम्भिक पूर्ति मात्रा, ΔP = कीमत में परिवर्तन, P = प्रारम्भिक कीमत।

उपर्युक्त सूत्र के अनुसार, पूर्ति की लोच (i) इकाई से अधिक, (ii) इकाई के बराबर अथवा (iii) इकाई में कम हो सकती है।

(i) पूर्ति की लोच इकाई से अधिक- जब वस्तु की पूर्ति में, कीमत में होने वाले प्रतिशत की तुलना में, अधिक प्रतिशत परिवर्तन होता है तो पूर्ति की लोच इकाई में अधिक होती है- जैसे-

$$\text{पूर्ति की लोच} = \frac{\text{पूर्ति में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$$

$$= \frac{40\%}{20\%} = 2 \text{ (पूर्ति की लोच इकाई से अधिक } E_S > 1 \text{ है)}$$

होता है, तो पूर्ति की लोच इकाई के बराबर (E_s = 1) होती है, जैसे-

$$\text{पूर्ति की लोच} = \frac{\text{पूर्ति में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$$

$$= \frac{20\%}{20\%} = 1 \text{ (पूर्ति की लोच इकाई से बराबर } E_S > 1 \text{ है)}$$

(iii) पूर्ति की लोच इकाई से कम- जब वस्तु की पूर्ति से कीमत में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन की तुलना में, कम प्रतिशत परिवर्तन होता है, त पूर्ति की लोच इकाई से कम (E_S < 1) होती है।

$$\text{पूर्ति की लोच} = \frac{\text{पूर्ति में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$$

$$= \frac{40\%}{50\%} = 0.8 \text{ (पूर्ति की लोच इकाई से कम } E_S > 1 \text{ है)}$$

2. बिन्दु रीति या रेखागणितीय विधि- जब किसी वक्र के बिन्दु विशेष पर पूर्ति की लोच मालूम करनी होती है, तो बिन्दु रीति का प्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत सूत्रों में पूर्ति की लोच का माप बिन्दु रीति से किया गया है। इन चित्रों में SS पूर्ति वक्र है, जिन पर स्थिति E बिन्दुओं पर पूर्ति की लोच की माप करनी है। प्रत्येक पूर्ति वक्र को अपनी सीध में नीचे X-अक्ष के R बिन्दु तक आगे बढ़ाया गया है। प्रत्येक वक्र के E बिन्दु से X-अक्ष पर EQ लम्ब डाला गया है। इन वक्रों के E बिन्दुओं की पूर्ति की लोच को निम्न सूत्र की सहायता से ज्ञात किया जा सकता है-

$$E_S = \frac{RQ}{OQ}$$ □

इकाई-5 बाजार संतुलन

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए-

(1) किसी वस्तु का मूल्य निर्धारित होता है-
(a) मांग द्वारा (b) पूर्ति द्वारा
(c) दोनों द्वारा (d) इनमें से कोई नहीं

(2) बाजार मूल्य संबंधित है-
(a) अति अल्पकालीन मूल्य से
(b) सामान्य मूल्य से
(c) स्थिर मूल्य से
(d) सभी से

(3) वस्तु के मूल्य को प्रभावित करती है-
(a) कुल उपयोगिता (b) सीमांत उपयोगिता

(4) जब मांग बढ़ती है तो मांग वक्र खिसकता है-
(a) ऊपर की ओर (b) नीचे की ओर
(c) दायी ओर (d) बायी ओर
उत्तर-(1) (c) (2) (a) (3) (b) (4) (a)

प्रश्न 2. सत्य/असत्य बताइये-
(1) कीमत तल का निर्धारण उत्पादक स्वयं करते है।
(2) कीमत सीमा निर्धारण का उद्देश्य लाभ प्राप्त करना है।
(3) कीमत तल का निर्धारण उत्पादक स्वयं करता है।
(4) बाजार मूल्य अति अल्पकालीन मूल्य होता है।
(5) बाजार मूल्य काल्पनिक होता है।
(6) मांग व पूर्ति की शक्तियां काफी समय तक स्थायी साम्य की अवस्था मे रहती है।
उत्तर- (1) असत्य (2) असत्य (3) असत्य (4) सत्य (5) असत्य (6) असत्य।

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. उच्चतम निर्धारित कीमत किसे कहते है?
उत्तर- उच्चतम निर्धारित कीमत- किसी वस्तु या सेवा की सरकार द्वारा निर्धारित कीमत की ऊपरी सीमा को उच्चतम निर्धारित कीमत कहते है।

प्रश्न 2. निम्नतम निर्धारित कीमत किसे कहते है?
उत्तर- निम्नतम निर्धारित कीमत- सरकार द्वारा किसी वस्तु या सेवा के लिये निर्धारित न्यूनतम सीमा को निम्नतम निर्धारित कीमत कहते है।

प्रश्न 3. सन्तुलन कीमत का अर्थ लिखिये।
उत्तर- जब मांग व पूर्ति की परस्पर विरोधी शक्तियाँ एक बिन्दु पर समान या शक्तिहीन हो जाती है, वहाँ पर वस्तु की माँगी जाने वाली मात्रा उसकी पूर्ति की जानेवाली मात्रा के ठीक बराबर हो जाती है। इसे ही सन्तुलन मूल्य के नाम से चुकाया जाता है। इसे ही साम्य बिन्दु कहते हैं।

प्रश्न 4. श्रम की मांग किसके द्वारा की जाती है?
उत्तर- श्रम की मांग उत्पादक के द्वारा की जाती है।

प्रश्न 5. वस्तुओं की मांग किसके द्वारा की जाती है?
उत्तर- वस्तुओं की मांग उपभोक्ताओं के द्वारा की जाती है।

प्रश्न 6. बाजार सन्तुलन से क्या आशय है?
उत्तर-बाजार संतुलन- सन्तुलन मूल्य से तात्पर्य ऐसे मूल्य से है जो मूल्य को प्रभावित करने वाले विभिन्न तत्वों के द्वारा निर्धारित किया जाता है। किसी भी वस्तु का मूल्य उसकी मांग एवं पूर्ति की शक्तियां द्वारा निर्धारित होता है।

प्रश्न 7. अधिमांग से क्या आशय है?
उत्तर- अधिमांग से आशय- यदि उस कीमत पर बाजार मांग बाजार पूर्ति से अधिक है, तो उस कीमत पर बाजार मे अधिमांग कहलाती है।

प्रश्न 8. अधिपूर्ति किसे कहते है?
उत्तर- अधिपूर्ति- यदि किसी कीमत पर बाजार पूर्ति बाजार मांग से अधिक है, तो उस कीमत पर बाजार मे अधिपूर्ति कहलाती है।

प्रश्न 9. श्रम बाजार में मजदूरी का निर्धारण कहाँ होता है?
उत्तर- श्रम बाजार मे मजदूरी का निर्धारण उस बिंदु पर होता है जहाँ श्रम की मांग एवं श्रम की पूर्ति परस्पर बराबर होती है।

प्रश्न 10. श्रम का सीमांत संप्राप्ति उत्पाद किसे कहते है?
उत्तर- श्रम की प्रत्येक अतिरिक्त इकाई के लिये उसे जो अतिरिक्त लाभ प्राप्त होता है वह सीमांत प्राप्ति तथा सीमांत उत्पाद के गुणनफल के बराबर है। इसे श्रम का सीमांत संप्राप्ति उत्पाद कहते हैं।

प्रश्न 11. कीमत सीमा में मांग आधिक्य की समस्या क्यों उत्पन्न होती है?
उत्तर- कीमत सीमा मे बाजार कीमत से कम कीमत पर आवश्यक वस्तुओं की कीमत सरकार द्वारा निर्धारित की जाती है जिससे मांग बहुत बढ़ जाती है और मांग आधिक्य की समस्या उत्पन्न हो जाती है।

प्रश्न 12. कीमत तल का आशय स्पष्ट कीजिये।
उत्तर- कीमत तल का आशय- कीमत तल का आशय बाजार कीमत या संतुलन कीमत के ऊपर सरकार द्वारा निर्धारित वह कीमत है जो उत्पादक को उसकी उपज पर चुकाई जाती है। इसे न्यूनतम समर्थन कीमत भी कहते है।

इकाई-6 प्रतिस्पर्धा रहित बाजार

नोट- यह इकाई पाठ्यक्रम में नहीं है।

भाग-2 : समष्टि अर्थशास्त्र एक परिचय

इकाई-1 समष्टि अर्थशास्त्र: परिचय

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए-
(1) समष्टि अर्थशास्त्र में अध्ययन किया जाता है-
(a) व्यक्तिगत परिवार का (b) समग्र का
(c) व्यक्तिगत फर्म का (d) व्यक्तिगत इकाई का
(2) समूह की बनावट पर ध्यान न देना किस अर्थशास्त्र की प्रमुख समस्या है-
(a) व्यष्टि अर्थशास्त्र (b) समष्टि अर्थशास्त्र
(c) दोनो की (d) किसी की नही